



1 Gr. th. f. 1, f. 1'



2 1 Gr. th. f. 1, f. 2



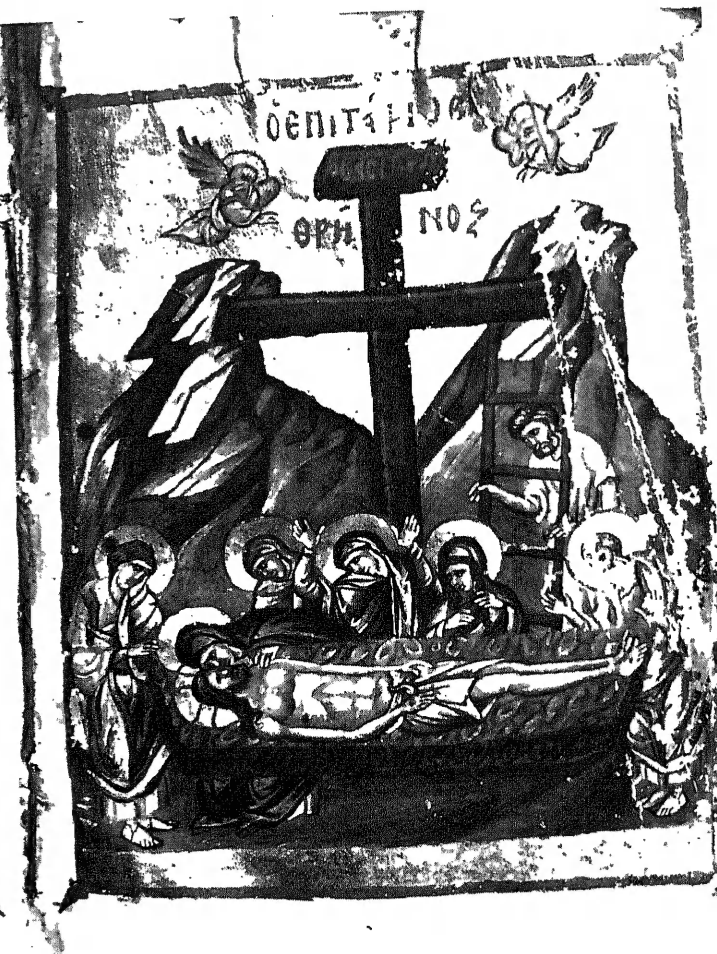
3 1 Gr. th. f. 1, f. 2'



4 1 Gr. th. f. 1, f. 3



5 1 Gr. th. f. 1. f. 3'



6 1 Gr. th. f. 1. f. 4



7 1 Gr. th. f. 1. f. 4'



8 1 Gr. th. f. 1. f. 5



9 1 Gr. th. f. 1, f. 5



10 1 Gr. th. f. 1, f. 6



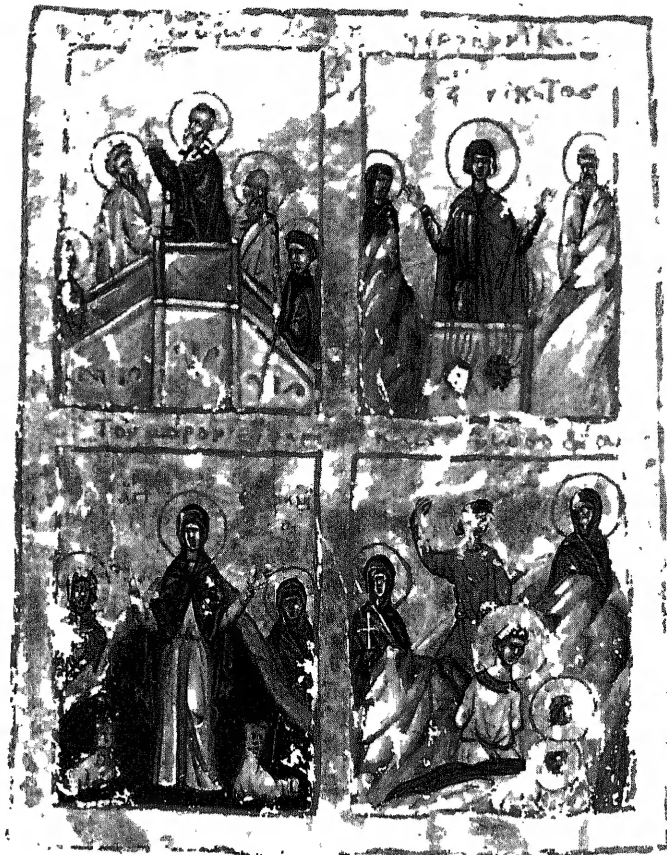
11 1 Gr. th. f. 1, f. 7



12 1 Gr. th. f. 1, f. 8



13 1 Gr. th. f. 1, f. 9



14 1 Gr. th. f. 1, f. 9^b



15 1 Gr. th. f. 1, f. 10



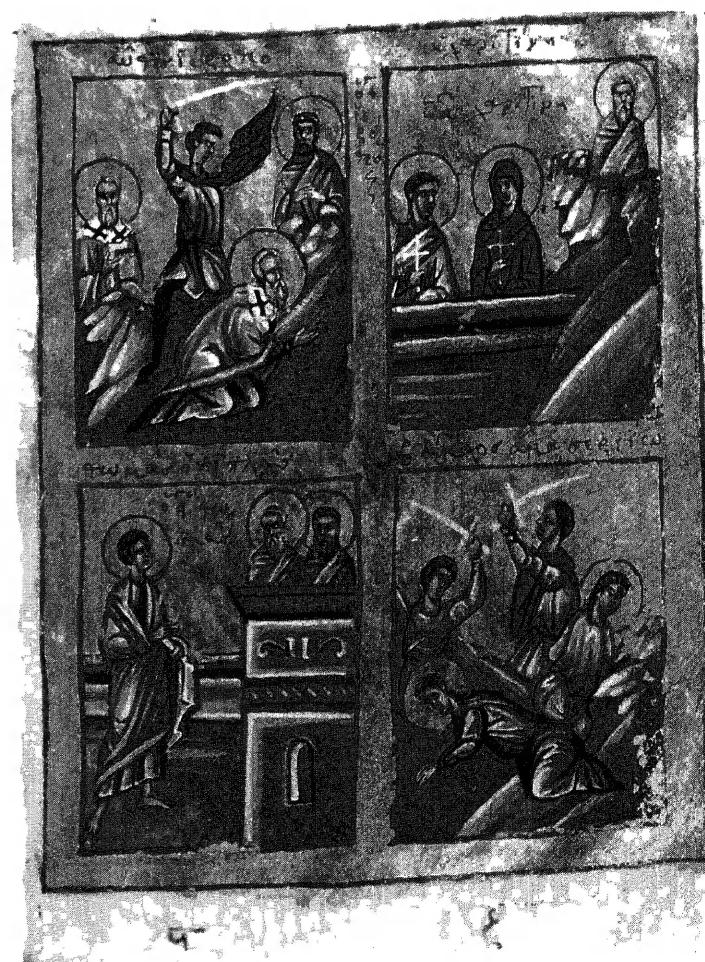
16 1 Gr. th. f. 1, f. 10^v



17 1 Gr. th. f. 1, f. 11

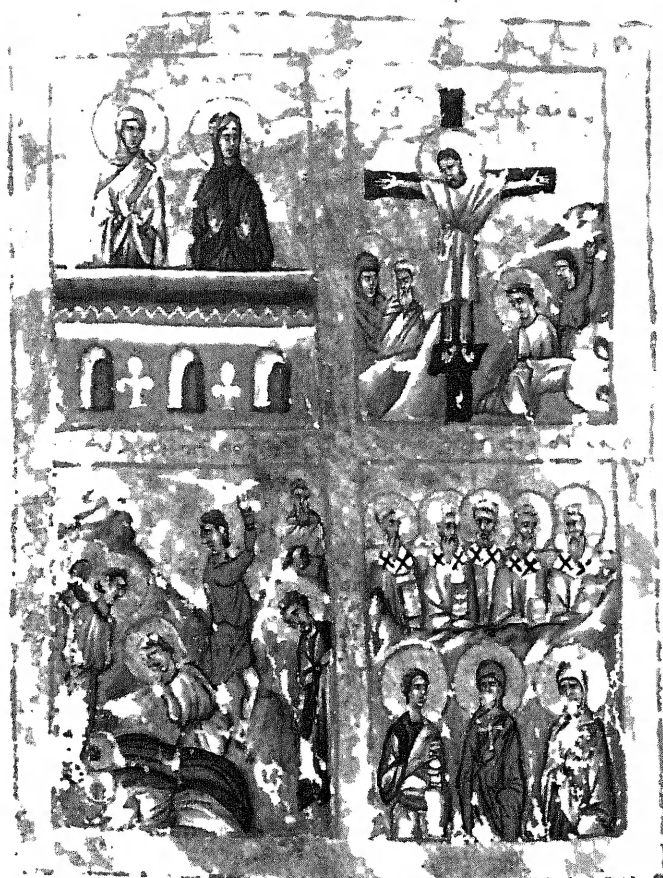


18 1 Gr. th. f. 1, f. 11^v



19 1 Gr. th. f. 1, f. 12

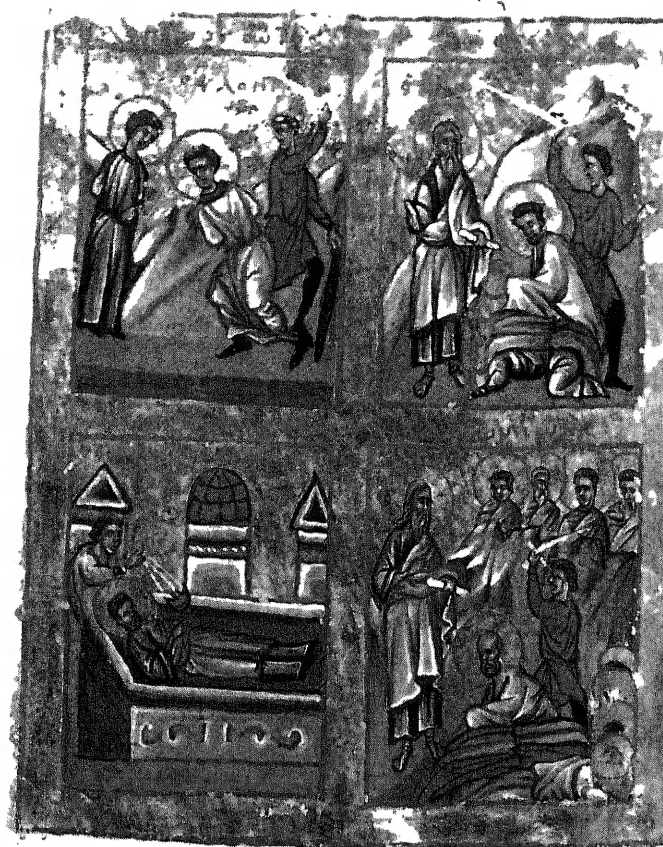
Nr. 1



20 1 Gr. th. f. 1. f. 12'



21 1 Gr. th. f. 1. f. 13



1 K

1 0

22 1 Gr. th. f. 1. f. 13'



K 6

K 7

23 1 Gr. th. f. 1. f. 14



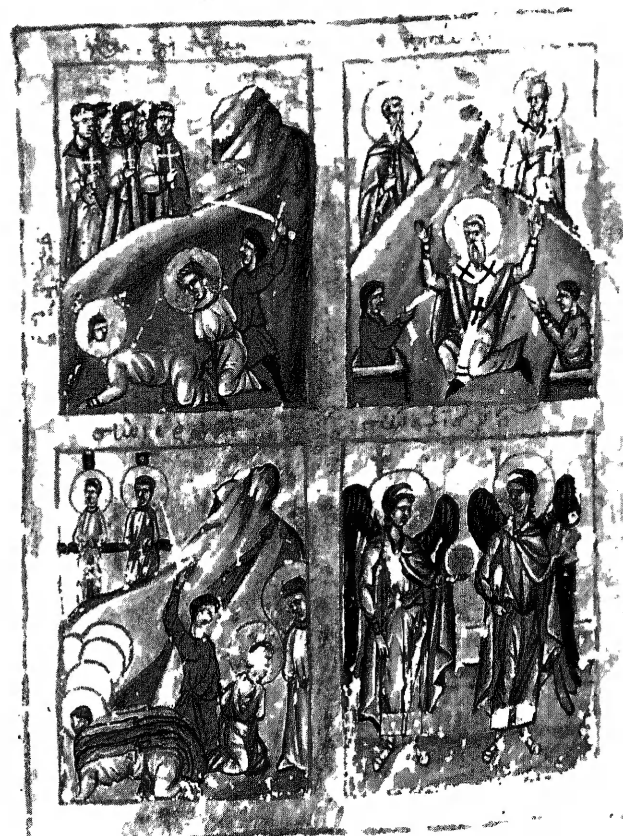
24 1 Gr. th. f. l. f. 14'



25 1 Gr. th. f. l. f. 15



26 1 Gr. th. f. l. f. 15'



27 1 Gr. th. f. l. f. 16

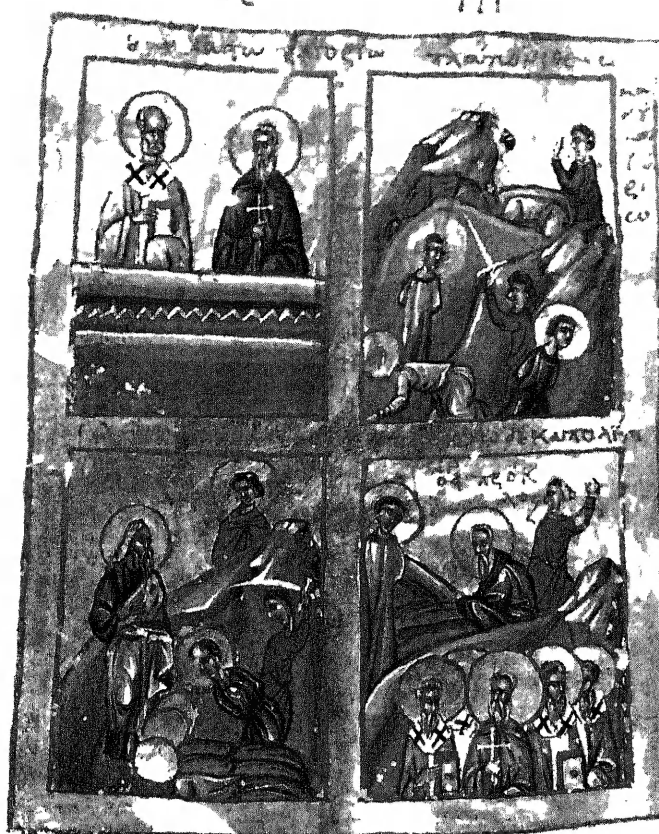
Nr. 1



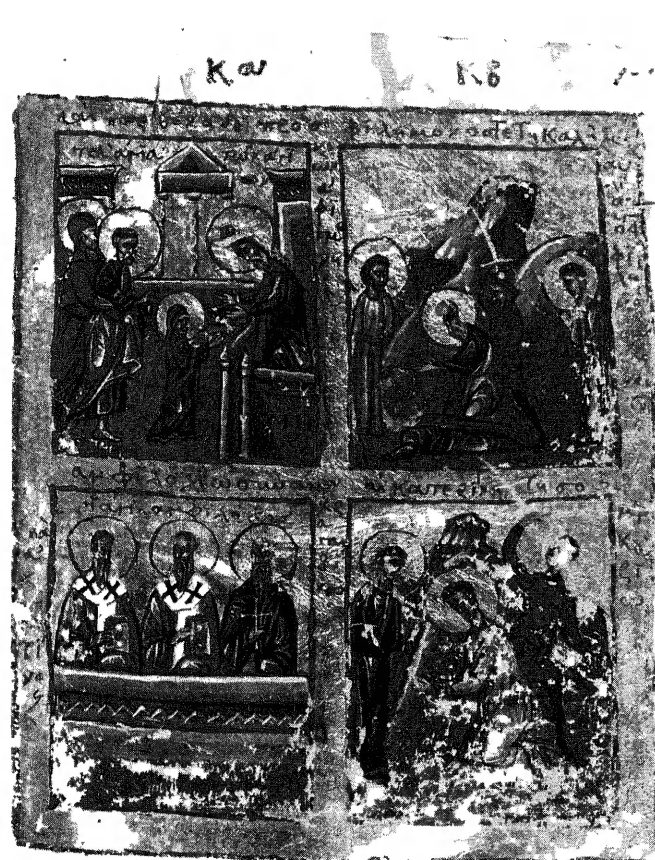
28 1 Gr. th. f. 1, f. 16^v



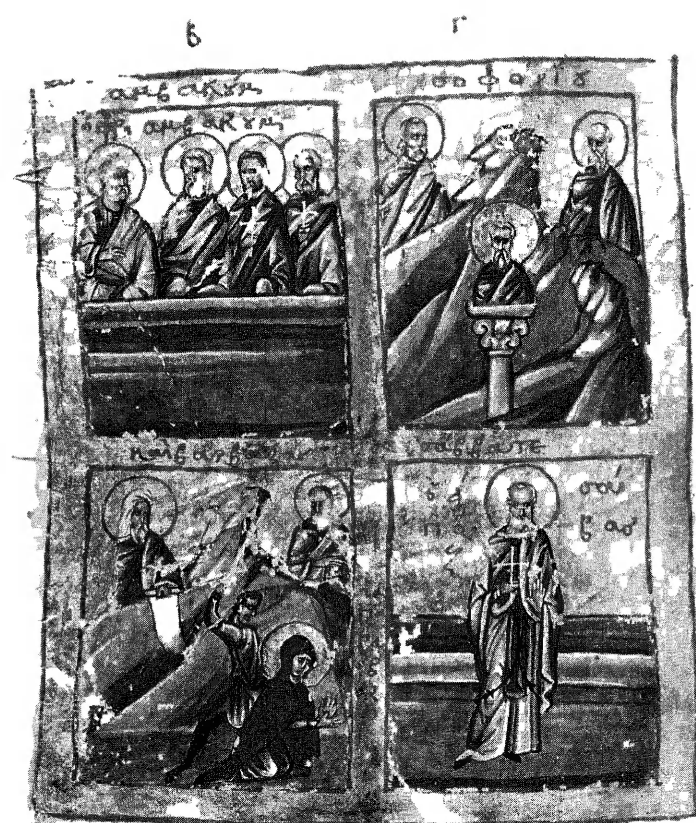
29 1 Gr. th. f. 1, f. 17



30 1 Gr. th. f. 1, f. 17^v



31 1 Gr. th. f. 1, f. 18





36 1 Gr. th. f. 1. f. 20'



37 1 Gr. th. f. 1. f. 21



38 1 Gr. th. f. 1. f. 21'



39 1 Gr. th. f. 1. f. 22



κν

κθ

40 1 Gr. th. f. 1. f. 22'



κλιν κθ ιαυ κθ

41 1 Gr. th. f. 1. f. 23



2

ε

42 1 Gr. th. f. 1. f. 23'



η

θ

43 1 Gr. th. f. 1. f. 24



44 1 Gr. th. f. 1, f. 24



45 1 Gr. th. f. 1, f. 25



46 1 Gr. th. f. 1, f. 25



47 1 Gr. th. f. 1, f. 26



κη

κθ

48 1 Gr. th. f. l. f. 26'



κω

κζ

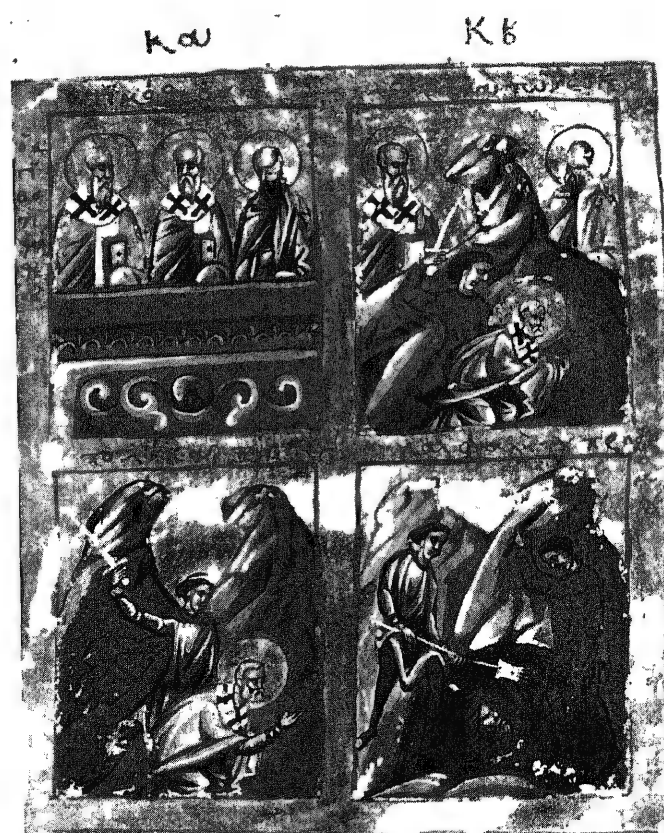
49 1 Gr. th. f. l. f. 27



α

ε

50 1 Gr. th. f. l. f. 27'

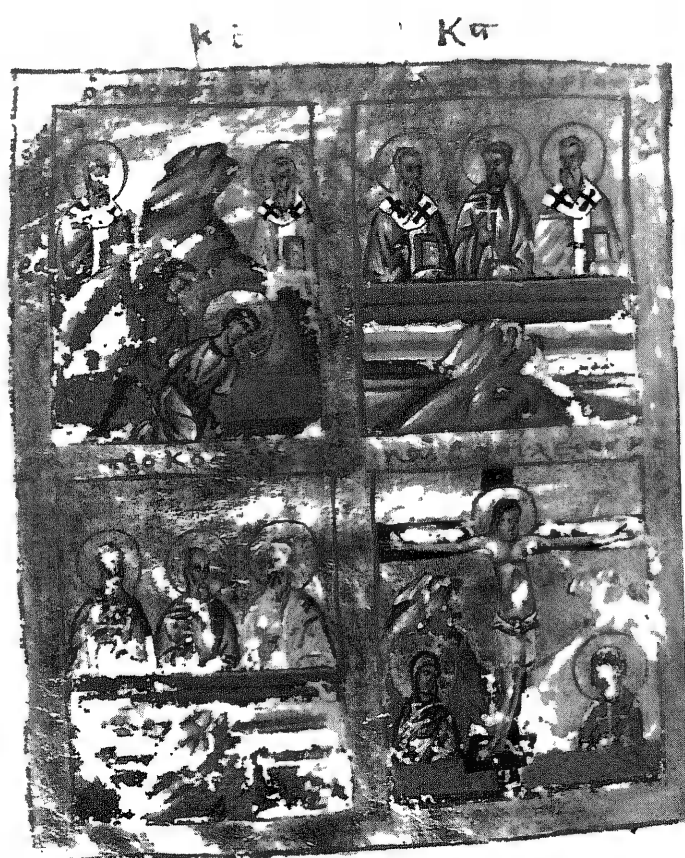


κρ

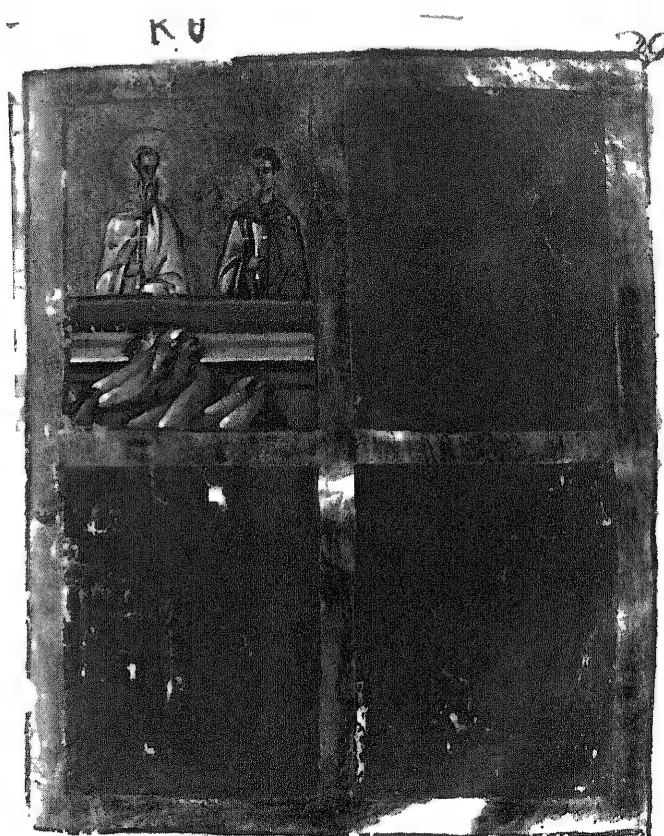
κς

51 1 Gr. th. f. l. f. 28

Nr. 1



52 1 Gr. th. f. l. f. 28^v



53 1 Gr. th. f. l. f. 29



54 1 Gr. th. f. l. f. 30



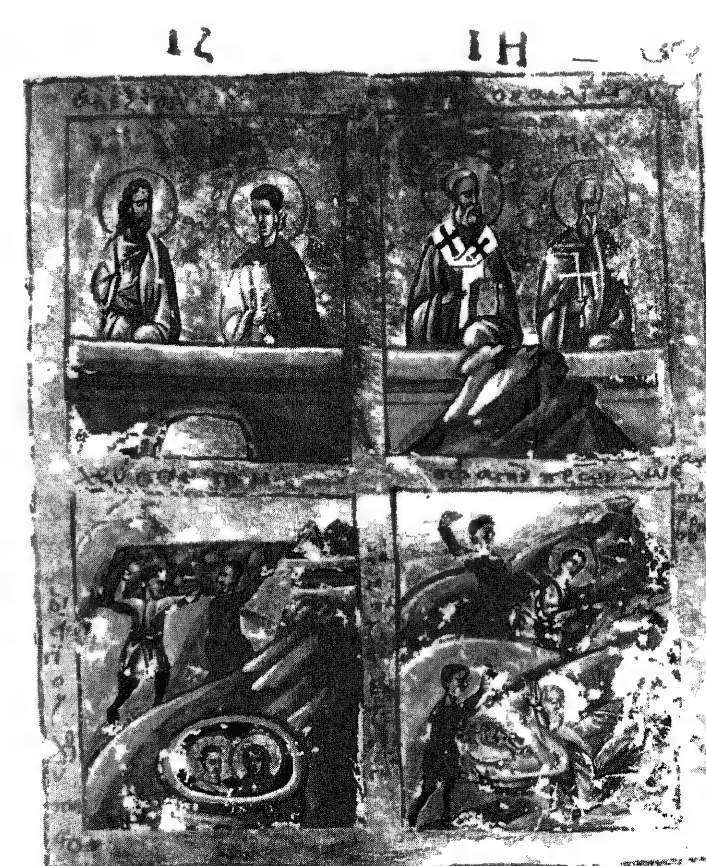
55 1 Gr. th. f. 1, f. 30^v



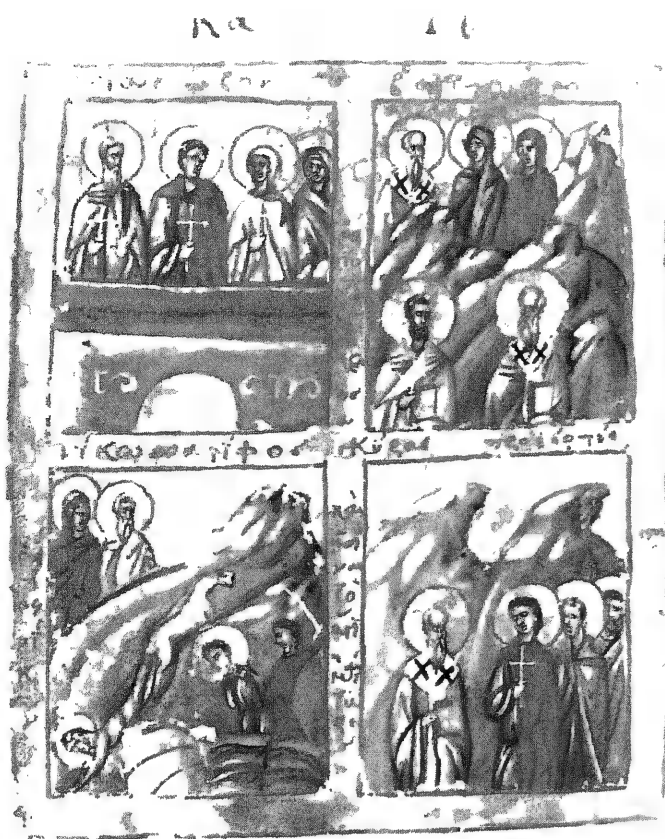
56 1 Gr. th. f. 1, f. 31



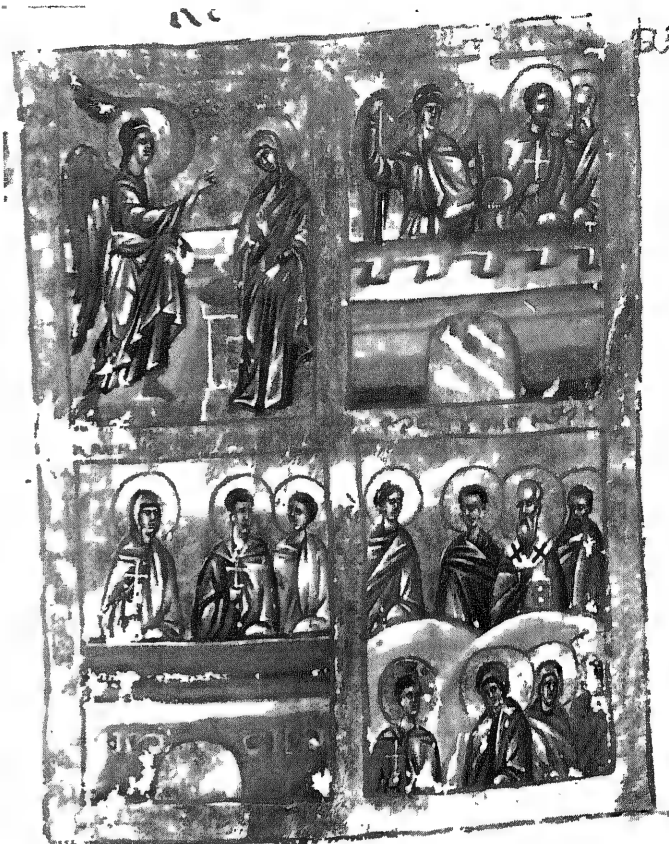
57 1 Gr. th. f. 1, f. 31^v



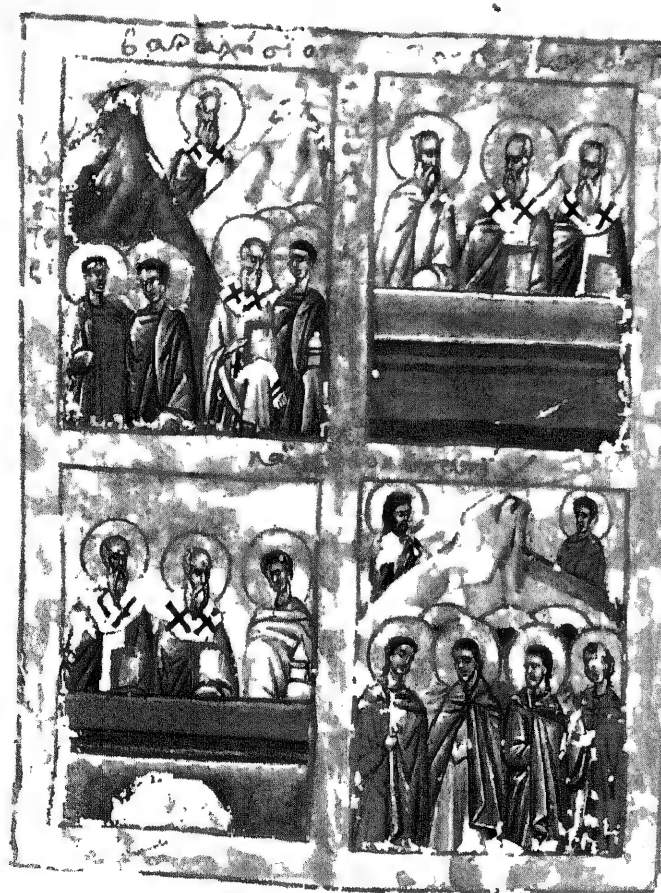
58 1 Gr. th. f. 1, f. 32



59 1 Gr. th. f. l. f. 32^v



60 1 Gr. th. f. l. f. 33



61 1 Gr. th. f. l. f. 33^v



62 1 Gr. th. f. l. f. 34



63 1 Gr. th. f. l. f. 34^v



64 1 Gr. th. f. l. f. 35



65 1 Gr. th. f. l. f. 35^v



66 1 Gr. th. f. l. f. 36



Κ. Ρ

Κ. Γ

67 1 Gr. th. f. 1, f. 36



Κ. Σ

Κ. Ε

68 1 Gr. th. f. 1, f. 37



Α

69 1 Gr. th. f. 1, f. 37



Ε

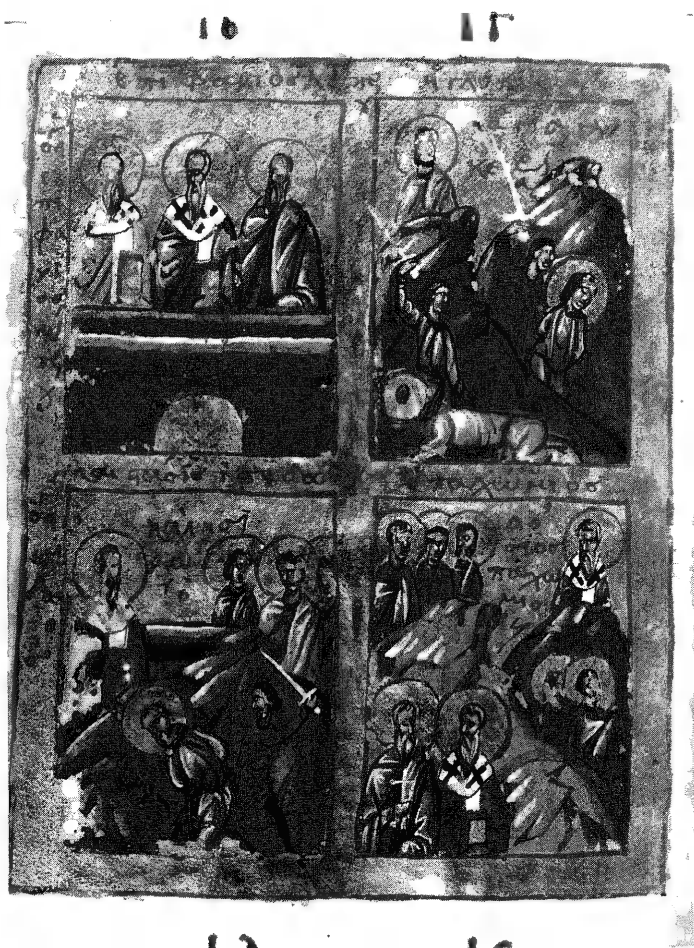
70 1 Gr. th. f. 1, f. 38



71 1 Gr. th. f. 1. f. 38^v



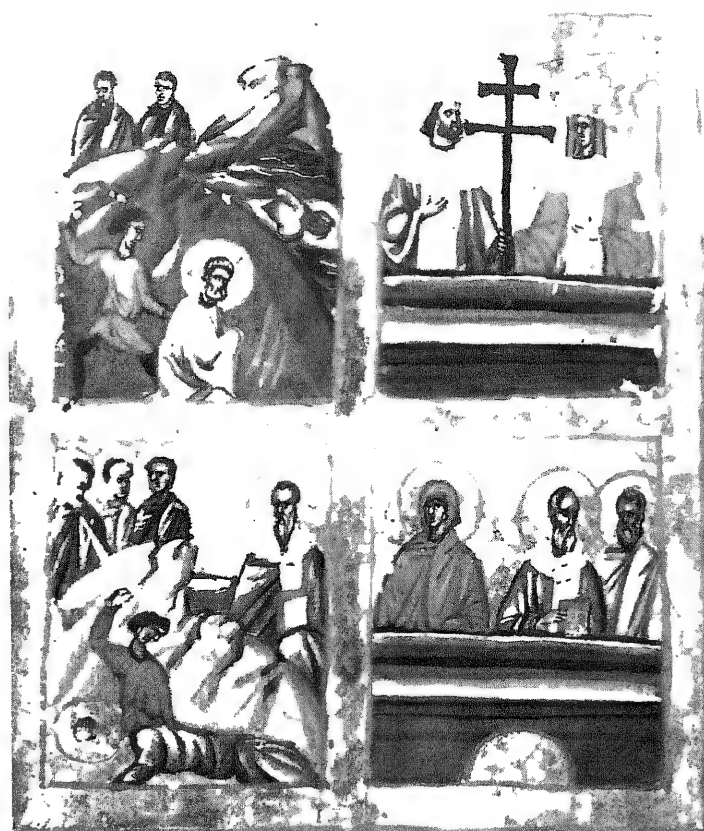
72 1 Gr. th. f. 1. f. 39



73 1 Gr. th. f. 1. f. 39^v



74 1 Gr. th. f. 1. f. 40



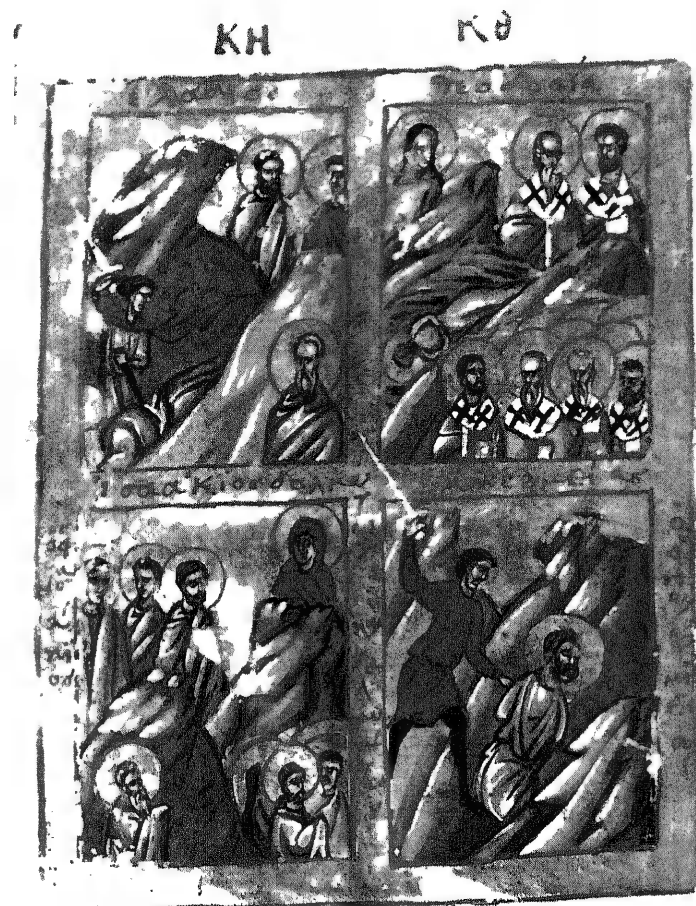
KP

Kr

75 1 Gr.th.f.1.f.40'



76 1 Gr.th.f.1.f.41



KH

Kθ

77 1 Gr.th.f.1.f.41'



78 1 Gr.th.f.1.f.42



79 1 Gr. th. f. 1. f. 42'



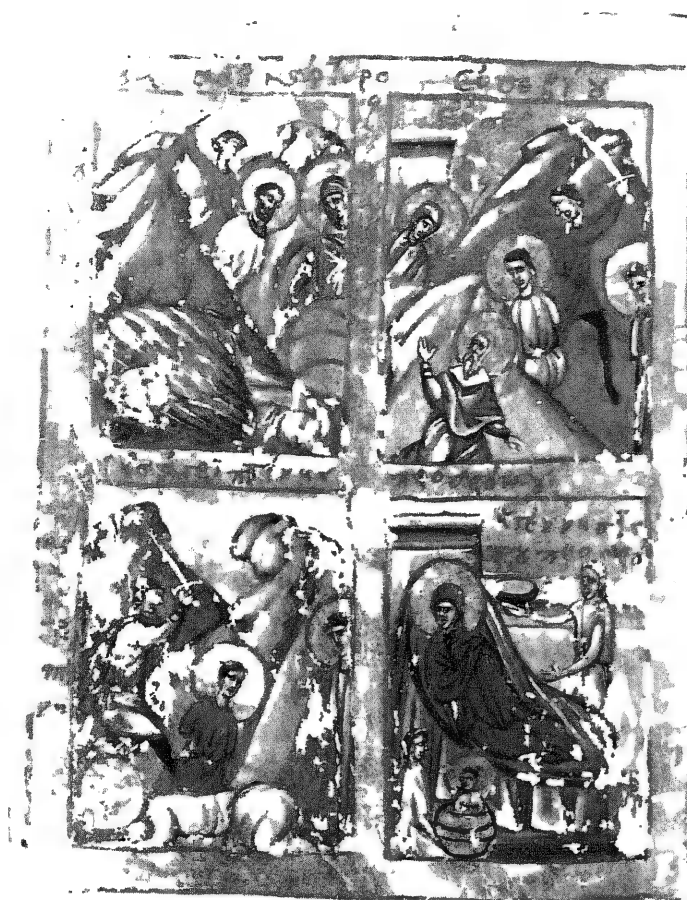
80 1 Gr. th. f. 1. f. 43



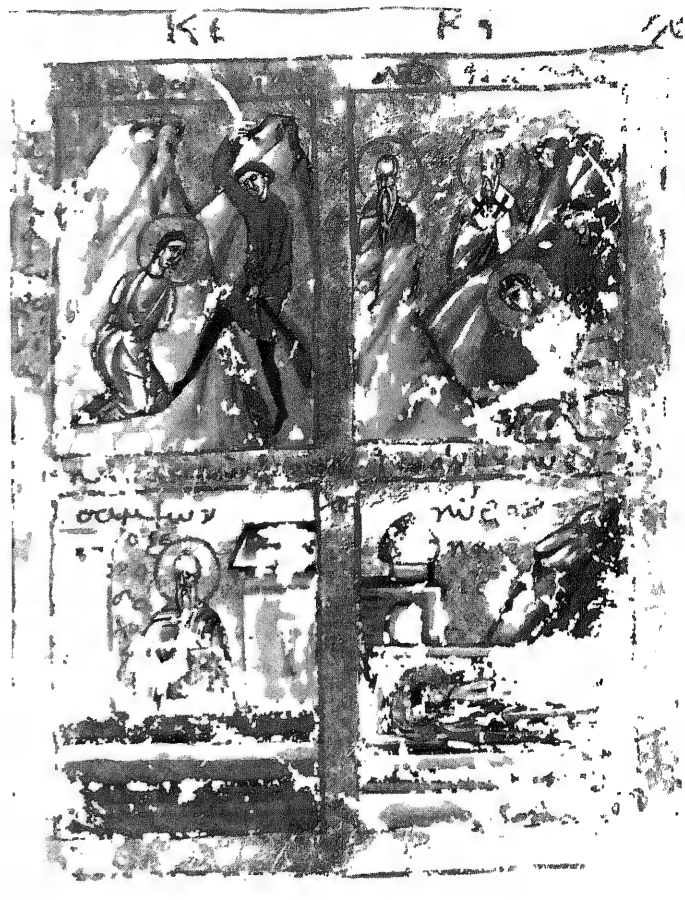
81 1 Gr. th. f. 1. f. 43'



82 1 Gr. th. f. 1. f. 44



83 1 Gr. th. f. l. f. 44'



84 1 Gr. th. f. l. f. 45



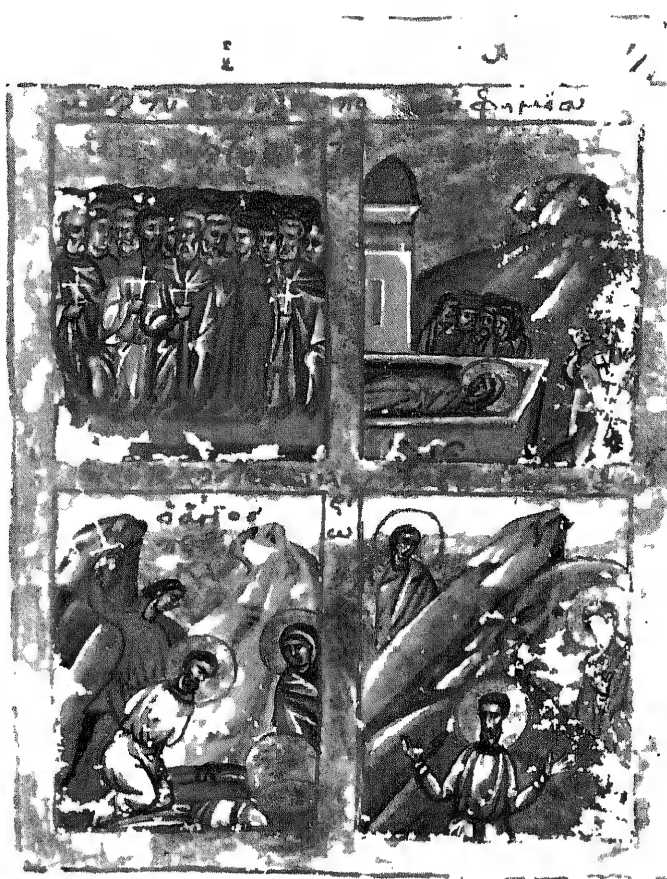
85 1 Gr. th. f. l. f. 45'



86 1 Gr. th. f. l. f. 46



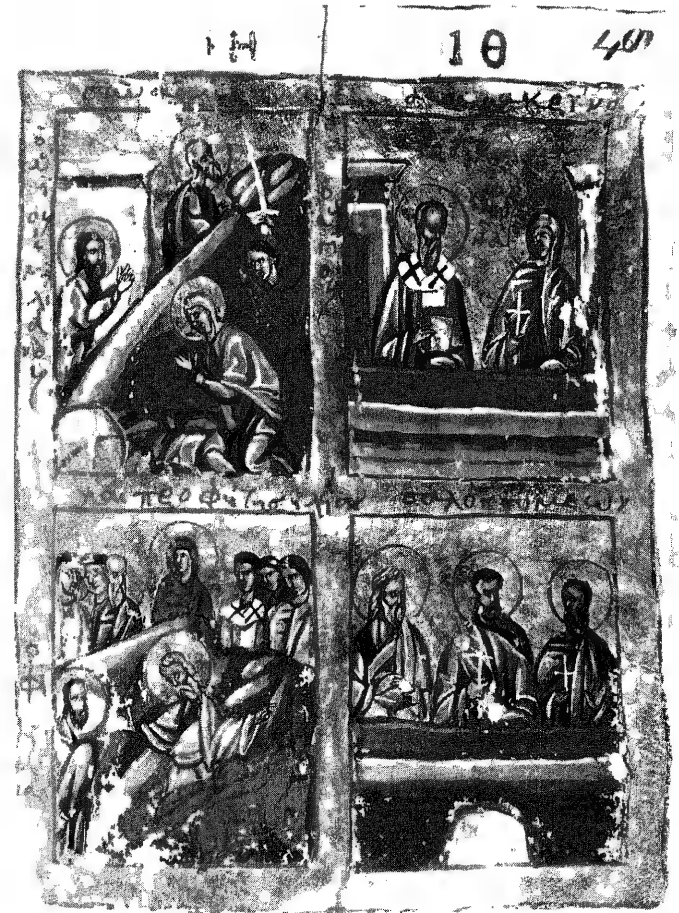
87 1 Gr. th. f. l. f. 46v



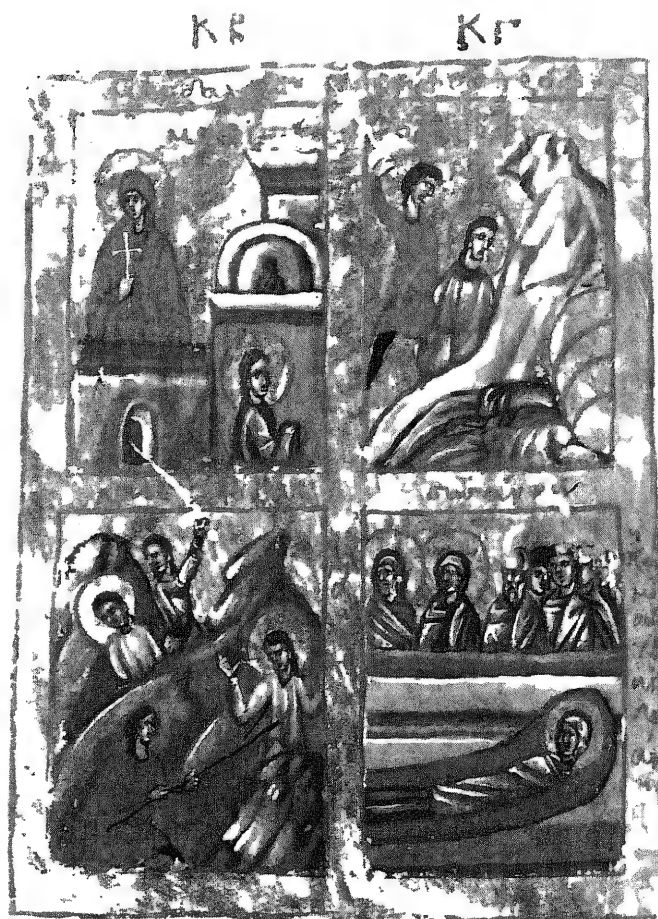
88 1 Gr. th. f. l. f. 47



89 1 Gr. th. f. l. f. 47v



90 1 Gr. th. f. l. f. 48



91 1 Gr. th. f. l. f. 48'



92 1 Gr. th. f. l. f. 49



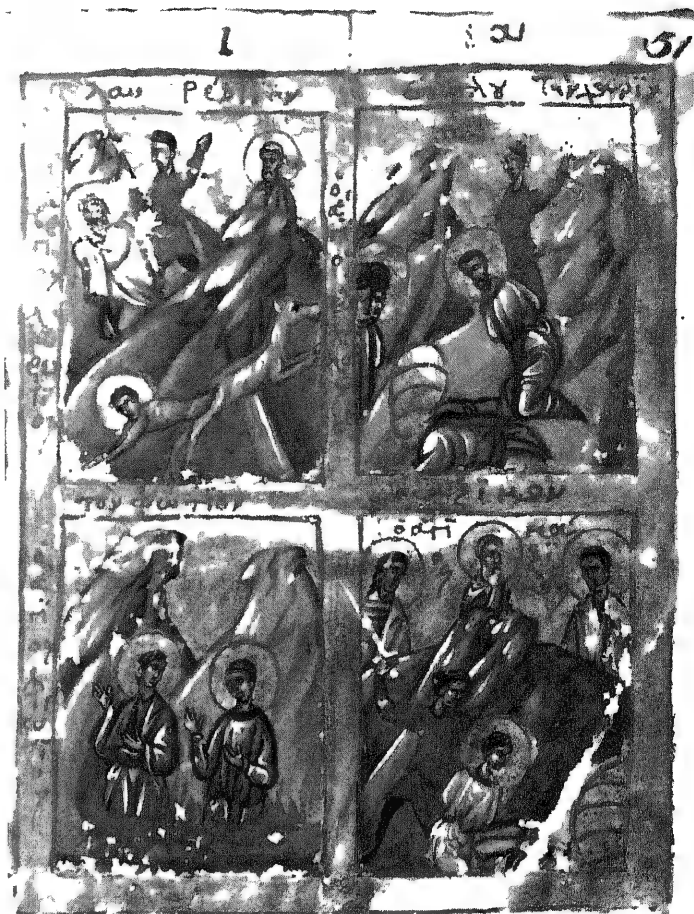
93 1 Gr. th. f. l. f. 49'



94 1 Gr. th. f. l. f. 50



95 1 Gr. th. f. 1, f. 50^v



96 1 Gr. th. f. 1, f. 51



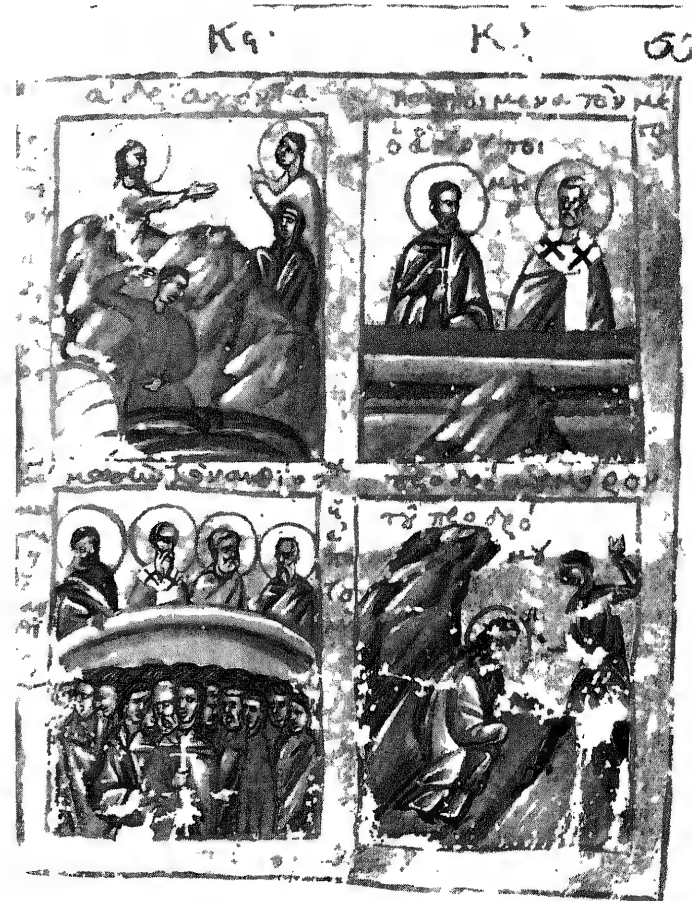
97 1 Gr. th. f. 1, f. 51^v



98 1 Gr. th. f. 1, f. 52



99 1 Gr. th. f. l. f. 52v



100 1 Gr. th. f. l. f. 53



101 1 Gr. th. f. l. f. 53v



102 I Gr. th. f. l. f. 54^v

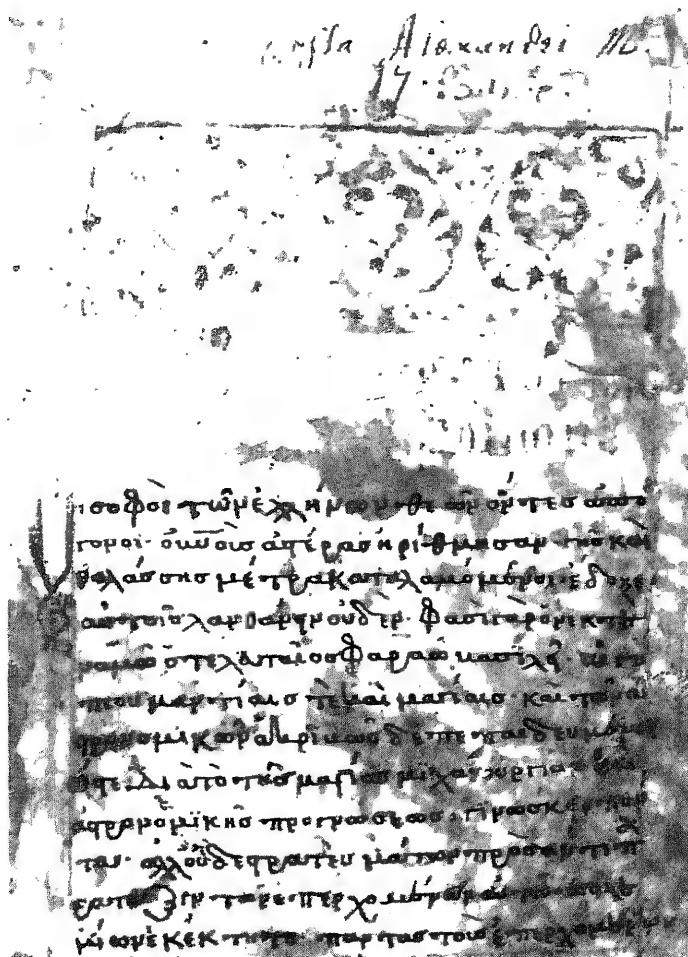
103 1 Gr. th. f. 1, f. 55

[illegible]

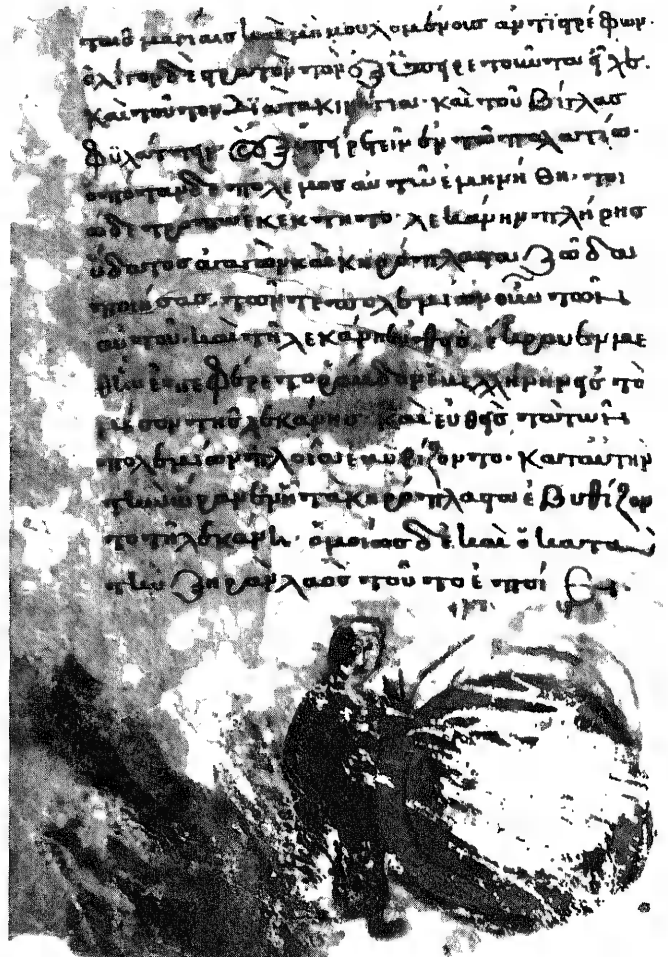
104 1 Gr. th. f. 1, f. 55^b

66
 53
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100

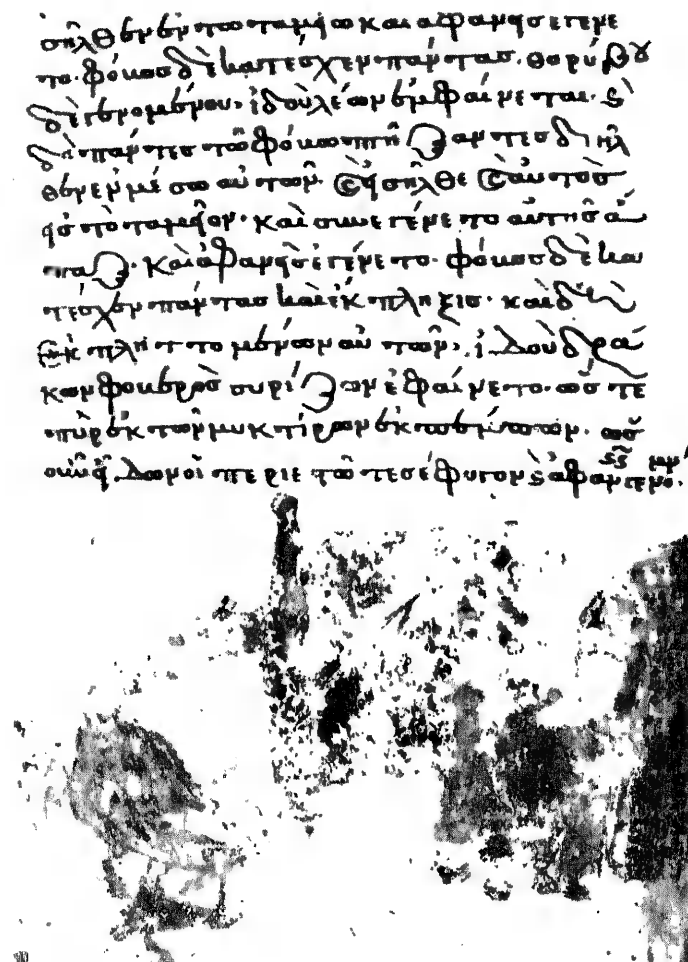
105 1 Gr. th. f. 1, f. 56



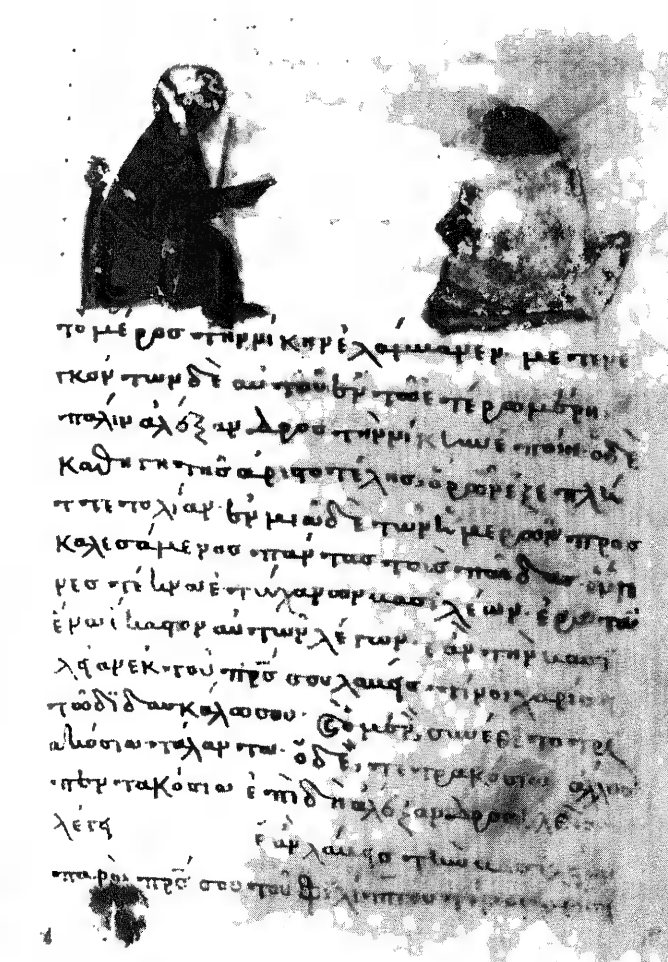
106 2 Barocci 17, f. 1



107 2 Barocci 17, f. 1



108 2 Barocci 17, f. 4



109 2 Barocci 17, f. 7

μεθ' αὐτοῦ φράσσεται τὸ
ἰκανόν· καταλθὲν δὲ ῥώμην· καὶ τὸ
χρῆμα· καὶ εὖ οἰαίματι λατοῦντες εἶχον·



115 2 Barocci 17, f. 11

τὸ πρῶτον τῆς ἡλικίας· καὶ τὸ θρασὺ καὶ
τὸ ἄγαν τοῦ προσώπου· καὶ τὸ εὐγενὲς
τοῦ καὶ διαμνηστὸς ἐπὶ τῆς πόλεως· καὶ
ὡς ἴσται οὗτος εἶχον· ἰδοὺ γὰρ κόλασ
τὸς ὑπομαστίχων· ἐμπύρωτατος
δὲ τὸ ἀρματιχότηρ· ἀνὰ εὐμετέρεϊ ἡλικίᾳ·



116 2 Barocci 17, f. 11'

μοι καὶ πᾶσι ἡ πόλις σχεδόν· καὶ λασμέ
δ' οὐδ' αὖ αὐτὸ ἀρματιχότησας· καὶ
οὐκ ἔμολθο καταλῆσαι αὐτὸν· ρεῖσι
κοσπάρχητος καὶ θεῶν ἄξιον· πάλ
λιν τοῦ σιδοῦσθαι μάζον τῆς
πῆλιν σῶσθαι καὶ ἀνδρῶν ἀλδ' ἀνδρῶν
ὑπομ' αὐτὸ πλ' ἔσθαι τεσπτοῦδε·



117 2 Barocci 17, f. 13'

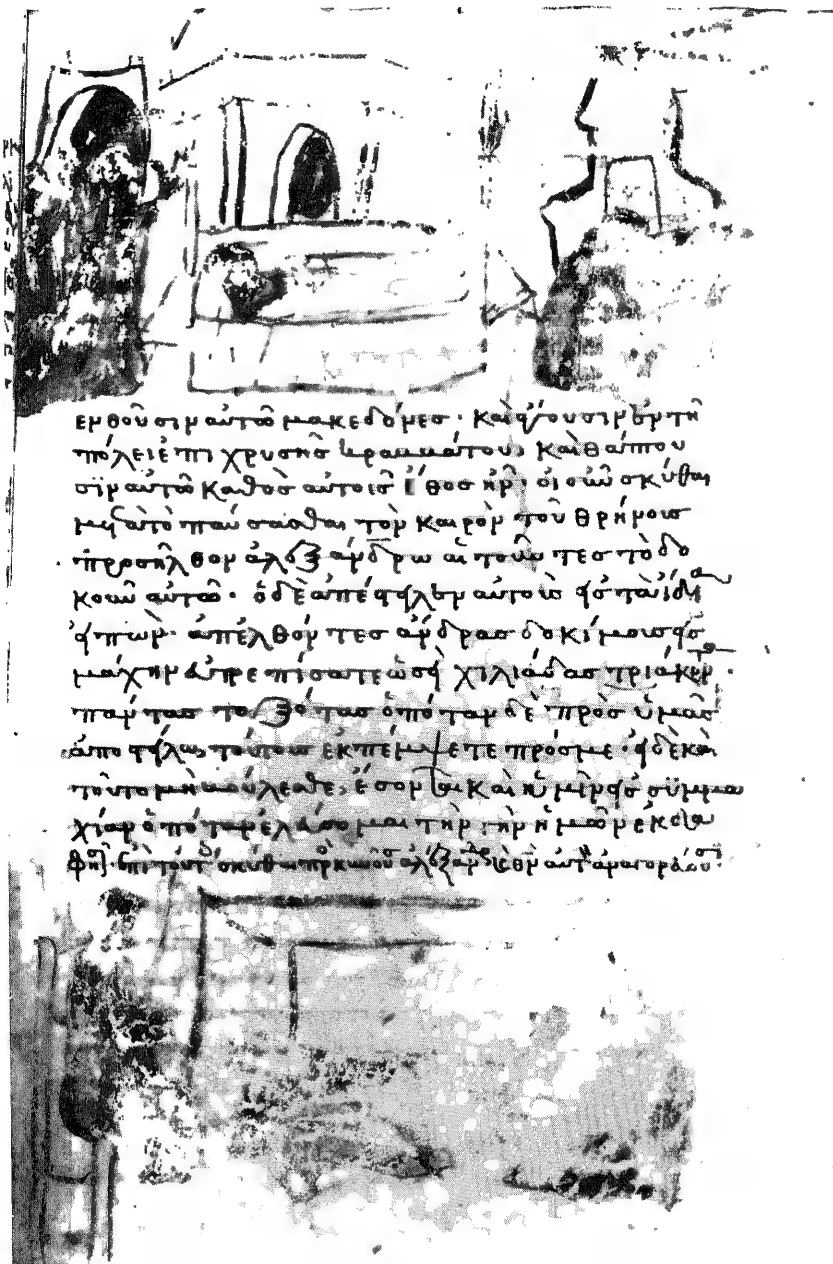


δὲ φίλιππος θεοσώμενος, σκυθροῦ ποσ
πύρεται· καὶ μεθ' αὐτὸν ἐπὶ τῶν
ἐθρῶν οὐκ ἔμολθο· θεοσώμενος δὲ
αἱ κεκλημένοι τοῦ πρῶτου πορφυρίππου
διεγρῶσαν αὐτοῦ τὸ ἐμβύλιον· καὶ δὲ
κύλικας φέρουσι τῶν φίλιππων· ὁ δὲ
οὐκ ἔμελλε πύρε· ἀρσένος δὲ εἰς τῶν
κεκλημένων ὅς ἢ πῦρ ἀρ' ὑμῶν δασύτος

118 2 Barocci 17, f. 14'



125 2 Barocci 17, f. 19

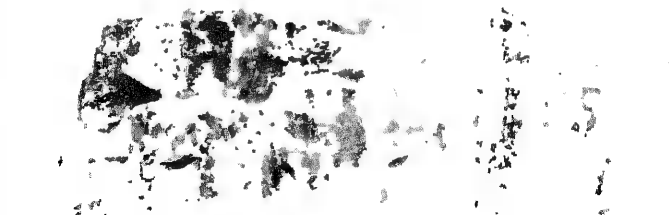


126, 127 2 Barocci 17, f. 20



128 2 Barocci 17, f. 21

ρὶ (φρ) καὶ τῶν καὶ θωρ· οὐ γὰρ ἡ αὐτοῖς κορυ
 τῆς θείας· τρεῖς δὲ προσκυνήσαντες·
 τὰρ ἐπιφάνειαν αὐτοῦ τῶν ἑλθόντων
 ὑπέδωκε· καὶ τῶν καὶ θωρ· οὐ γὰρ ἡ αὐτοῖς
 ἀρσενικῶν τῶν ἑλθόντων· τὰ δὲ
 τὰ ἐπιφάνειαν αὐτοῦ τῶν ἑλθόντων· οἱ πρὶ καὶ



ἡ τὸν τῆς μορῆς αὐτοῦ, μὲν δ' αὖτε
 ὁ δὲ δόσται· καὶ τῶν ἑλθόντων· οἱ πρὶ καὶ

129 2 Barocci 17, f. 22



130 2 Barocci 17, f. 23



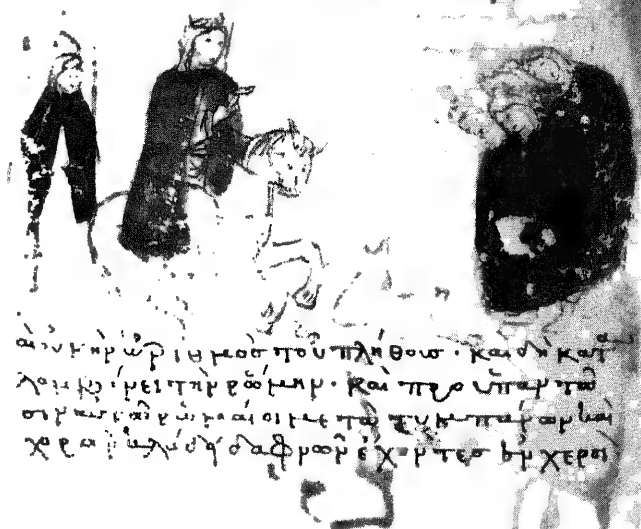
131 2 Barocci 17, f. 23

ὡς ἐπὶ τῆς τοῦ κυρίου ἀλφειᾶς
 τῆς θείας τῆς καὶ ἐνθεῖας πολυκράτους
 ἀφ' ἧς ἡ ἐκείνη χαίρει· ἐπὶ δὲ ἡ περὶ
 προνοίας ἀποστολῆς τῆς παρ' ἡμῶν
 τύχης ὑποτάσσεται χρεώρ· διὸ δὲ καὶ
 σὲ τὸν θεὸν τὸν ἡμῶν ἀσπασμένον
 οἶδ' ὅτε ἐκ θείας προνοίας γέγονεν
 ὡς καὶ τὰς κοινὰς παρ' τῷ ἀκείρῳ
 ἡ τύχη πεποικῆ· δουλὴ καὶ ἡ καὶ
 θάλασσά τοι τὰρ ὑποῦρμα ἡμῶν
 κοινῶν τὰ βράχια σου τὸ σῆμα ὑπὲρ
 τῆς θαλάσσης· ὅθεν κῆρ ἀκείρῳ ἡ περὶ
 τῶν αὐτῶν τύχῶν πληροῖς κτήματα
 πρὸς σέμου δούλοισι· ἡ δὲ ἡμῶν
 γὰρ γὰρ τοῦτον, ὅθεν ἐκείνη

τι μαθεύτης ἡ δὲ γνησὶ ἐκτίθω. καὶ οὐτ
 θη καὶ οἱ ὑπὸ τῶ φάεισ ἐκτίθωσαν. σ
 δε αὐλοῦντος, φάβανθον καὶ αὐρα φά
 τῶ τῶ φάπῶν, οὐ κε καὶ φανθὸν τὸ σῶσ
 ἀλλ' ἡρὸ θῶ μὲν αὐτοῦ ἐπὶ τοῖς φάθεσθ
 αὐτῶ. ὡς δὲ ἐπαύσαντο ὁ πόλεμος π
 ἀλ' ἔφαθον. ἔρτυχ' ἄρ' ὁ γέννην β
 μιήλιακῶ καὶ δεξομένης τὸ πῶ. καὶ φη
 οὔτος δὲ πῶ. οἱ δὲ περὶ αὐτὸν ἔφηνσαν.
 δι' ὁ γέννησ' ὁ φίλος φῶ. ὁ πολλακίς σ
 βουλόμενος ἀντιμαίεσιν τῶ σῶμα καὶ
 ἑρῶν. ταῦτα ἀκούσας ἀλ' ἔφαθον, κα
 λαμῶν φά τῶν τῶ πῶ φάσθ' ὁ γέννησ' καὶ
 ἡλ' ἔφθ. πρὸς τῶν ἡρ καὶ ὁ γέννησ' τῶ
 φά πῶ φθ. καὶ φησὶν ἀλ' ἔφαθον.



δι' ὅτε γε σὺ τί σοι χάρις ὦμαι· ὁ δὲ οὐδ' ἐρέει
 ἄλλο· ἵ τὴν ἡλίου μοι χάρις ἐπὶ τῶν ἀπ' ἐμοῦ
 ἱερὰ τοῦ παρ' ὀφθαλμοῦ· ἐπὶ ταῦτα δὲ ὁ ποιη-
 τὴν μαρτυρεῖται ὡς τῶν γιγνόμενων ἐφ' ἑμὲ
 ἀπαρτίζων τῶν ἐκείνων ἀλλ' ὅτι οὐδὲν ὡς
 χε τοῦ ῥομῆν καὶ ταυλακῶν· καὶ οὐδ' ὡς προ-
 ὑπαμ' τῶν σὺν αὐτῷ πρὸς ἀφ' ἀπὸ παλ' ὧν ἵ-
 τῶν ἐβ' ὡν καὶ πρὸς Κωνσταντίνον πρὸς αὐτὸν
 αὐτοῦ· ὅς γε τὸ αὐτῷ δῶρα χρυσίου τε
 ἀργύριον ὡς οὐκ ἐτιμῶν ἀφ' ὁμοῦ σωτηρίας
 μετ' αὐτῷ παλ' ὧν ὅς οὐ μὴ ἀχθῶν·



καὶ τῷ ἀλφειῷ δὲ ὡς ἐπιστολὴν τῶν ἀποστόλων
κοσμοῦ αὐτοῦ αὐτοῦ ἀφ' ἑαυτοῦ ἔχοντες
δὲ ἐν τῇ πόλει αὐτῇ ἐν τῷ καπετανλίῳ θύῳ
καὶ οἱ ἐρῶντες ἐχόντες αὐτὸν καὶ ἔχοντες
εὐαγγέλιον· ὁ δὲ ἔχων τὸν ἀλφειὸν ὅσοι μὲν ἐν τῇ πό-
λει εὐαγγέλιον ἔχοντες τοῦ αὐτοῦ τὰ τὰ αὐτοῦ.



ὁ δὲ ἔχων τὸν ἀλφειὸν ὅσοι μὲν ἐν τῇ πόλει
αὐτῇ ἔχοντες αὐτὸν αὐτὸν ἔχοντες αὐτὸν
καὶ αὐτὸν ἔχοντες αὐτὸν αὐτὸν ἔχοντες αὐτὸν
συνεχίζοντας πᾶν τὸν κόσμον· ὁ δὲ συμμαχί-
αυ ἀλφειῶν ἔχων τὸν αὐτοῦ δῶρον· ἐν
τῇ χρυσίῳ καὶ λίθοις καὶ μαργαρίταις· ὁ δὲ ἔχων
τοῦτον ἀλφειῶν ἔχων αὐτὸν καὶ ἔχων
ὡς κατὰ τὴν ἀλφειῶν· καὶ ὡς γερμᾶν· εἰς τὴν ἡμέ-
ραν καὶ τὴν αὐτῇ δῶρον μαχόμενον σύμμετρον.

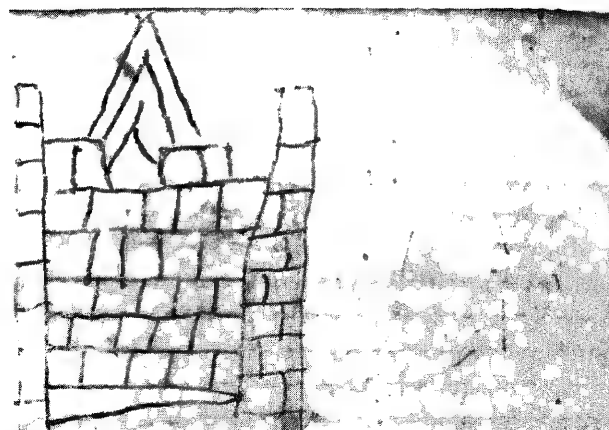
135 2 Barocci 17, f. 29

παρὰ τῶν ὡς περὶ ἡλθόν· διὰ μαχόμενον
ταχύνοντες αὐτὸν δὲ ἐν τῷ πρὸς τὸν
μαχόμενον ἐν τῷ αὐτοῦ τεθῆναι· ἐν τῇ
δὲ αὐτῇ ἡ τῶν τριῶν δῶρον αὐτῶν· αὐτῶν
δὲ ἐπελθόντες, ὅσοι μὲν ἔχοντες τὸν αὐτοῦ
ὡς παρὰ τὴν αὐτῇ ἡλθόν μαχόμενον
μετὰ τὰ αὐτῶν ὡς ἐθεάσαντο τὸ περὶ τὸ μέτρον.



αὐτῶν αὐτῶν τὸν αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν
δὲ αὐτῶν ὡς ἔχοντες πρὸς τὸν αὐτοῦ
καὶ τὸν αὐτοῦ ὅσον κεντὸν αὐτῶν τὸν αὐτοῦ
τὸν αὐτοῦ πρὸς τὸν αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν
τὸν αὐτοῦ πρὸς τὸν αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν

136 2 Barocci 17, f. 30



αὐτῶν πόλιν ἐπὶ τῷ αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν
ἐπὶ τῷ αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
τῷ αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
πόλιν ἐκ τῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
ὡς κεντὸν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
καὶ τὸν αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν
χρυσίῳ δὲ ἐπὶ τῷ αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν
λάκκοις μετὰ τὸν αὐτοῦ αὐτῶν αὐτῶν
αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν αὐτῶν

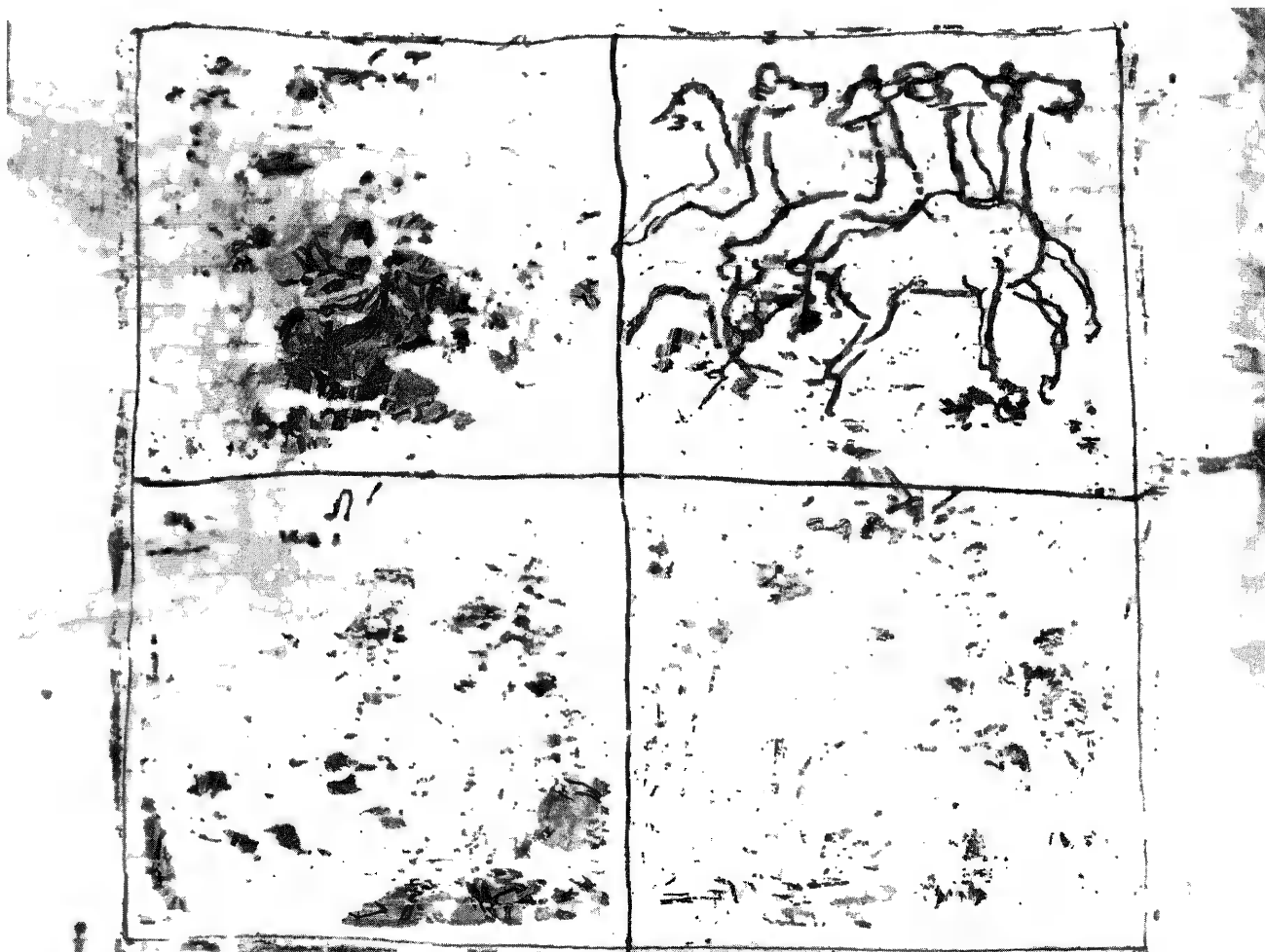
137 2 Barocci 17, f. 31



τοῦ καὶ ἡρώδου ἀσέβητος υἱοῦ. —
 ἔγενοντο δὲ αὐτῶν υἱοὶ πέντε καὶ θυγατέρες τέσσαρες.



139 3 Barocci 201, f. 4



ἔπειτα ἡρώδης αὐτὸν ἀπορήμει τὰ κτήνη ἐν ἀδύλῳ καὶ αὐτὸν ὠφε-
 λήσεται. ὅς τις οὐδὲν αὐτῷ προσδικαίωσιν ἢ πλοῦτος ἢ πτωχὸς ἢ γόνυ-
 ἐκστατός. ἀμήν.

140 3 Barocci 201, f. 5



141 3 Barocci 201, f. 6



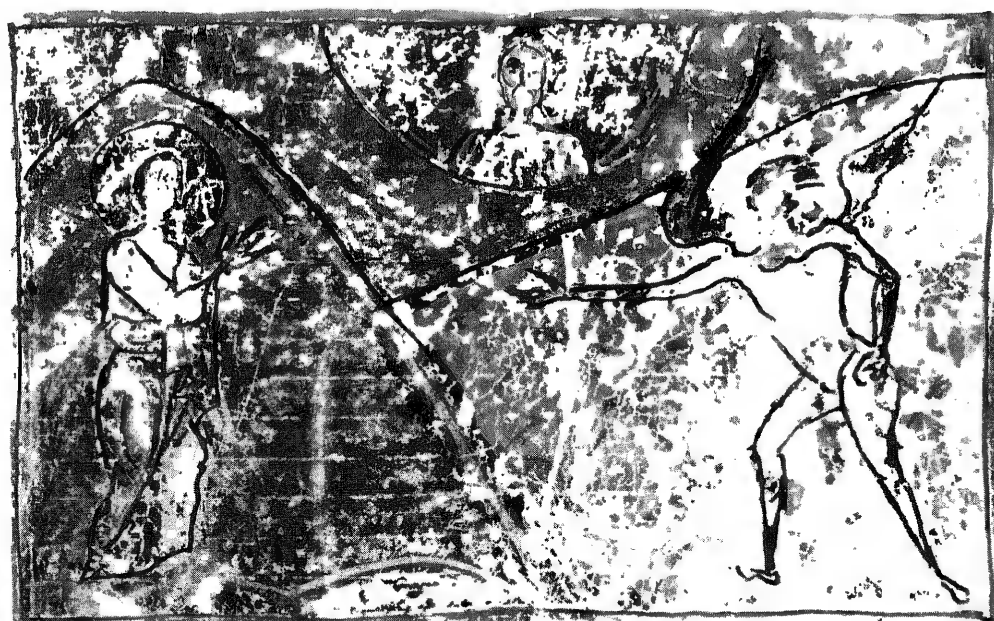
142 3 Barocci 201, f. 8



143 3 Barocci 201, f. 10



144 3 Barocci 201, f. 12



145 3 Barocci 201, f. 13



146 3 Barocci 201, f. 14

ΚΑΙ ΕΞΗΛΘΕΝ Ο ΑΝΘΡΩΠΩΝ ΤΟΥΤΟ ΤΟ ΕΡΓΟΝ



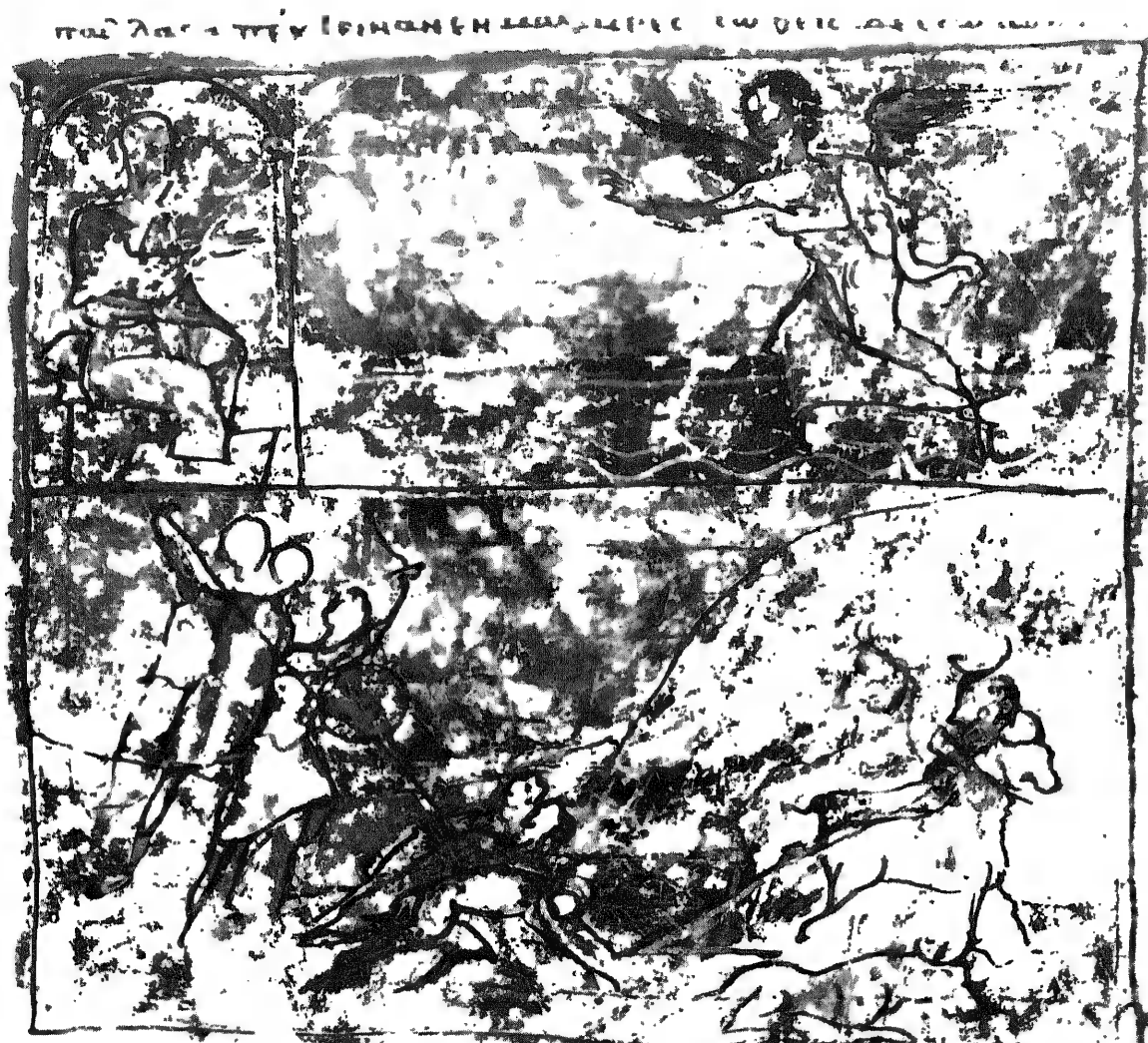
ΚΑΙ ΤΟΙΣ ΟΥΚ ΕΛΘΟΝΤΟΣ ΔΕ ΤΟΥΤΟ ΤΟΥ ΒΥΘΟΥ ΔΕΚΑΠΟΤΙΣΑΣ· ΑΛΛ' ΟΥΤΩΣ
ΕΙΠΟΝ ΤΗΝ ΔΕΙΞΕΙΝ ΟΤΙ ΤΗΝ ΕΠΙΣΤΑΣΙΝ ΛΑΜΒΑΝΕΙ ΑΠΟ ΣΥΓΧΟΡΕΩΣ
ΕΛΛΗΝΟΛΟΓΟΥΝΤΕΣ ΕΛΛΗΝΟΛΟΓΟΥΝΤΕΣ ΕΛΛΗΝΟΛΟΓΟΥΝΤΕΣ ΕΛΛΗΝΟΛΟΓΟΥΝΤΕΣ

147 3 Barocci 201, f. 15'

ΚΑΙ ΟΙ ΛΟΙΠΟΝ ΤΟΝ ΚΑΙ ΑΙ ΕΓΓΛΙΕΣ ΑΧΤΟΥ· Ε ΠΗΚΗ ΕΝ Τ
ΟΙΚΙΑ ΤΟΥ ΑΔΕΛΦΟΥ ΑΧΤΩΝ ΤΟΝ ΠΡΕΣΒΥΤΕΡΟΝ.



148 3 Barocci 201, f. 16



149 3 Barocci 201, f. 16r



150 3 Barocci 201, f. 17r



πολλὰ καὶ ἄλλα θεῶν ὁμοῖα τοῦ ποταμοῦ, ὡς ἂν αὖτε εἴπω καὶ ὑποθεύ καὶ

151 3 Barocci 201, f. 18



αὐτὰ κινῶν ὁμοῖα ἰσοκρίβη, τοῦ τοῦ ὅθι αὖτε πάντα ἐκπύματα

152 3 Barocci 201, f. 19



παιμένται ὅτι τὸ πρῶτον ἡ ἀρχὴ, σὺν μοῦσῃ ὡς εἰκόσ καὶ ἑθαί
μαζετῶν μόνον· ὡς δὲ τὸ πρῶτον πολλῶν καὶ ὡς αἰὼν παίδων
χρόνῳ ἐκοιτετὸ λατὴν· ἵνα μὲν· ἵνα ἀμάλγμα τοσούτοι δόξαι καὶ ἀσπίδι

153 3 Barocci 201, f. 21

μῦθος ἀρχὴ τοσούτοι λατὴν ἀντιπαραφω.

καὶ ἡ ἀρχὴ τοσούτοι λατὴν ἀντιπαραφω.



μαῦδρυν ἡ χεῖρ, καὶ οὐδὲν αὐτόν ἐκ τῆς ὁδοῦ ἔλχοντες ἄρως· τὸ
σφοδρὸς ἀπαρρίνυσθα καὶ ὡς πᾶσι τοῖς λυσιπείροις· ὡς πᾶσι

154 3 Barocci 201, f. 23



ἰδὼν τε καὶ ἑκάστην ἡμέραν παρατηρούμενος αὐτὸν εἰσέειπεν ἵνα μεθ' αὐτὸν
μενησιπύου καὶ ἄλλοι ἄνθρωποι παραμένωσι. ἀλλ' ὁ ἄνθρωπος ἀποστειλὼν

155 3 Barocci 201, f. 28

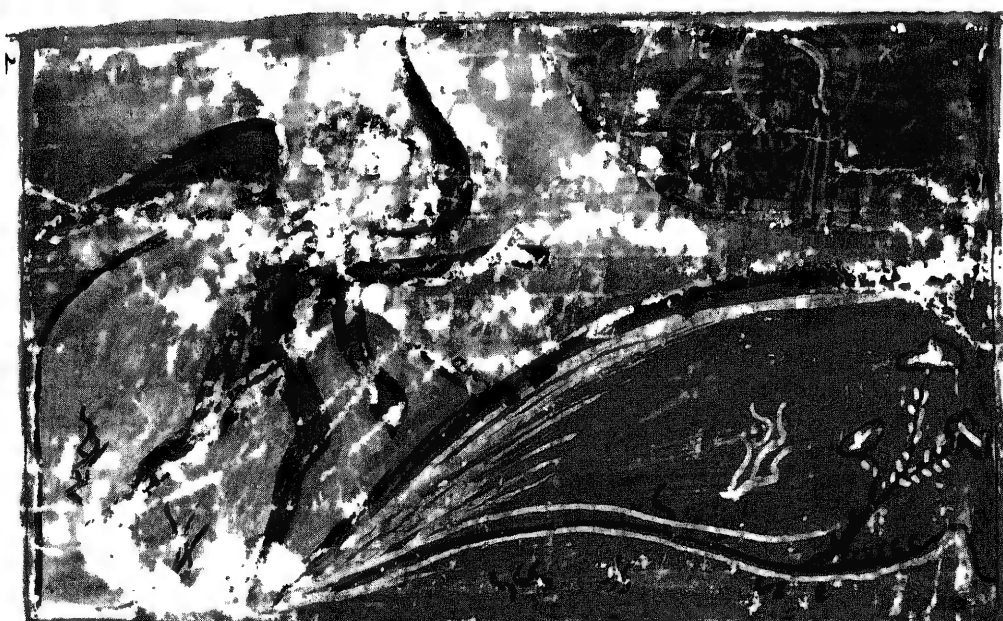
[illegible]

Ἡ δὲ δυνάμις τοῦ φρονεῖν, ἡ τοῦ ὑπερφανείας διδασκαλίας. παρ
τὰς οὐδὲ, τὸν ἀσπασμὸν ἐνδύκνυται πρὸς ὅσον· ταῦτα ποικαίμν, ὅ
ἐαυτοῦ κατακακύνει παρὶς· δὸν· καὶ τὸν πρὸς τὸν αὐτὸν ἀποῖν

156 3 Barocci 201, f. 29



157 3 Barocci 201, f. 29^v



158 3 Barocci 201, f. 30^v



159 3 Barocci 201, f. 31^v



πλὴν ἐφ' ὅτι μὴ αὐτὸν χαλεπὸν τὰ πρὸς αὐτὸν· χάρις καὶ ἐλεῖ φαντὶς καὶ

160 3 Barocci 201, f. 32v



ἡ ἀκρίβεια τῆς ζωῆς· τὰς δὲ ἀκρίβειας τῆς ζωῆς· τὰς δὲ ἀκρίβειας τῆς ζωῆς·

161 3 Barocci 201, f. 33



162 3 Barocci 201, f. 36



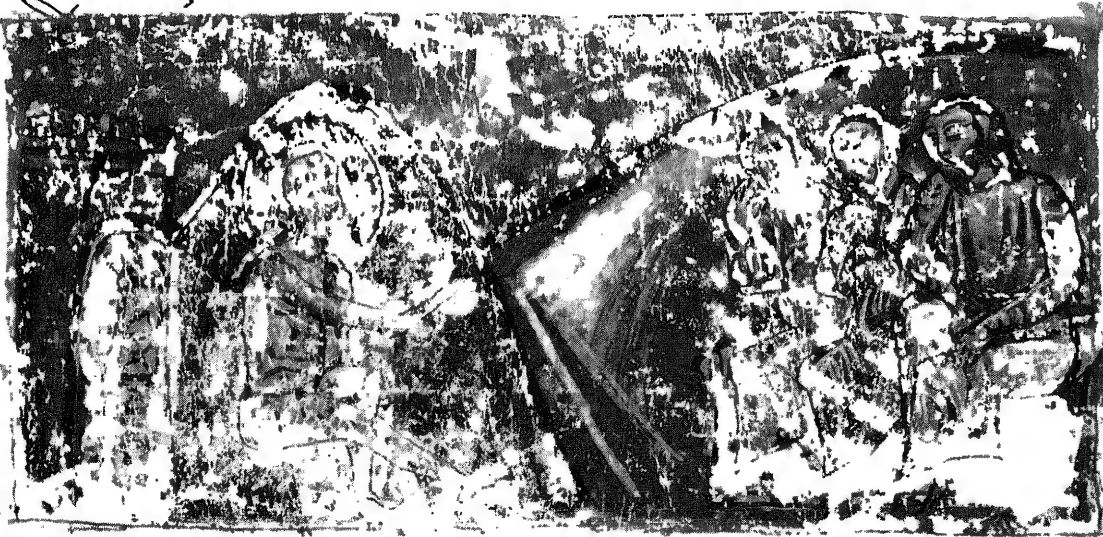
163 3 Barocci 201, f. 39^v



164 3 Barocci 201, f. 44^v



167 3 Barocci 201, f. 46^v



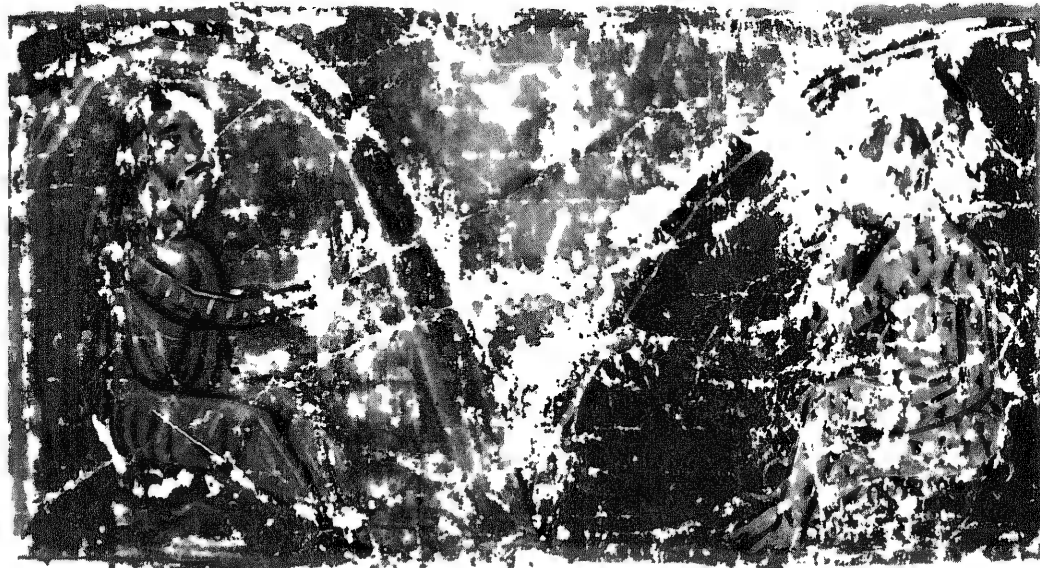
168 3 Barocci 201, f. 48



169 3 Barocci 201, f. 51



170 3 Barocci 201, f. 54



171 3 Barocci 201, f. 56

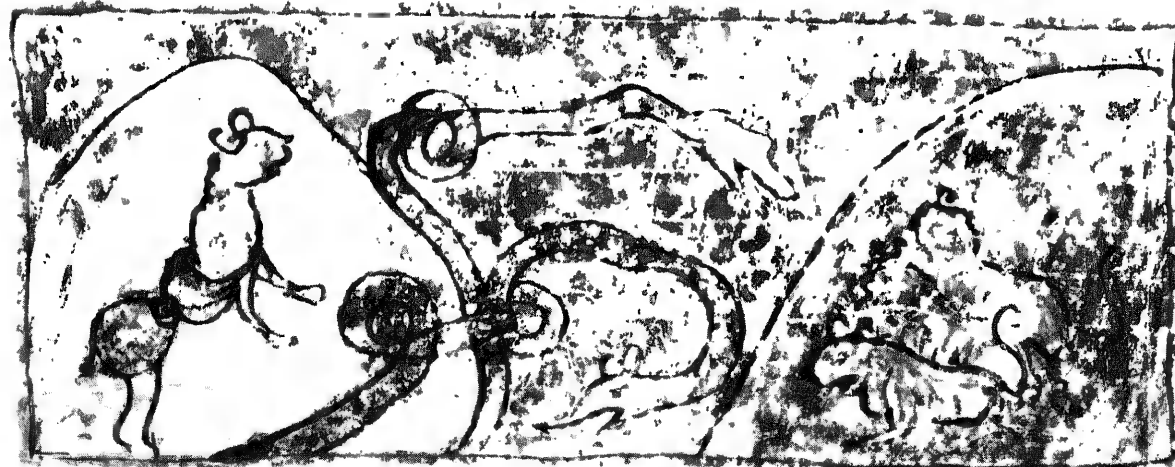


τι μὲν ὁ ἀσπίς ἐστι πύλο καὶ θεοὶ βίβλιν καὶ τὴν ἐρμὴν ἀπόστολον· πρὸ
 Δαχον· καὶ καλεῖται τὸντο εἶσα μὲν ἐλὶ φά· ἄλλοι τὶ εἰσ τιμωρίαν οἱ ταῖ

172 3 Barocci 201, f. 57



173 3 Barocci 201, f. 57r

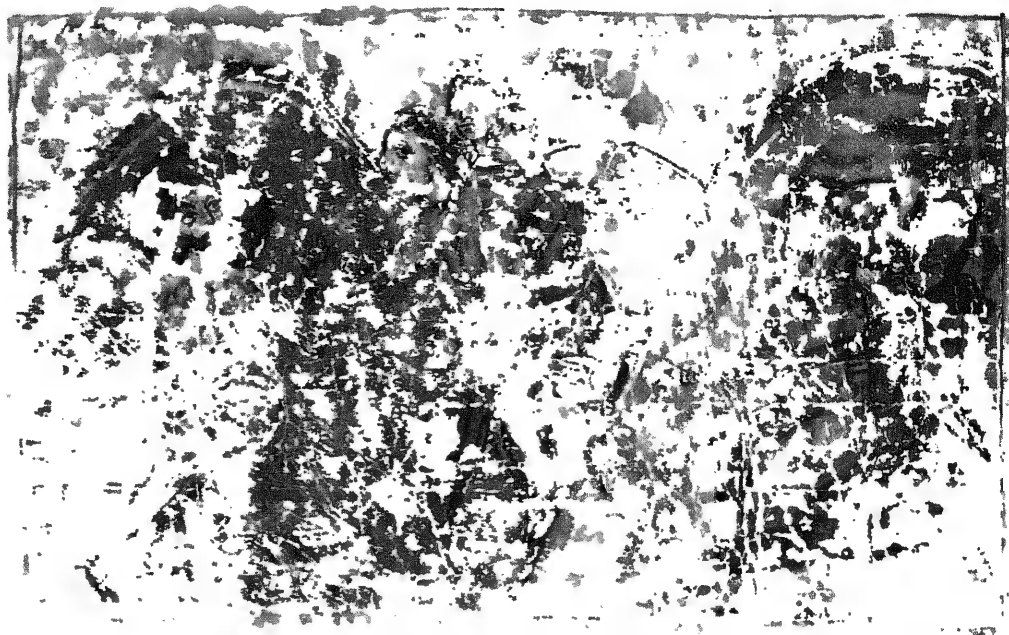


174 3 Barocci 201, f. 58 oben



Τὸν μέντοι μύριμα κολέοντα· τίμεν, οὐδὲ ὅπως εἶναι φασὶν ὧσόν καὶ ἱστορίαν·
ἀλλὰ καὶ τὴν ἡμετέραν οὐτως εἰεῖν ἵσθαι· διὰ τὸ ὅτι οὐκ ἔστιν ἄλλο τι εἶναι μέγα.

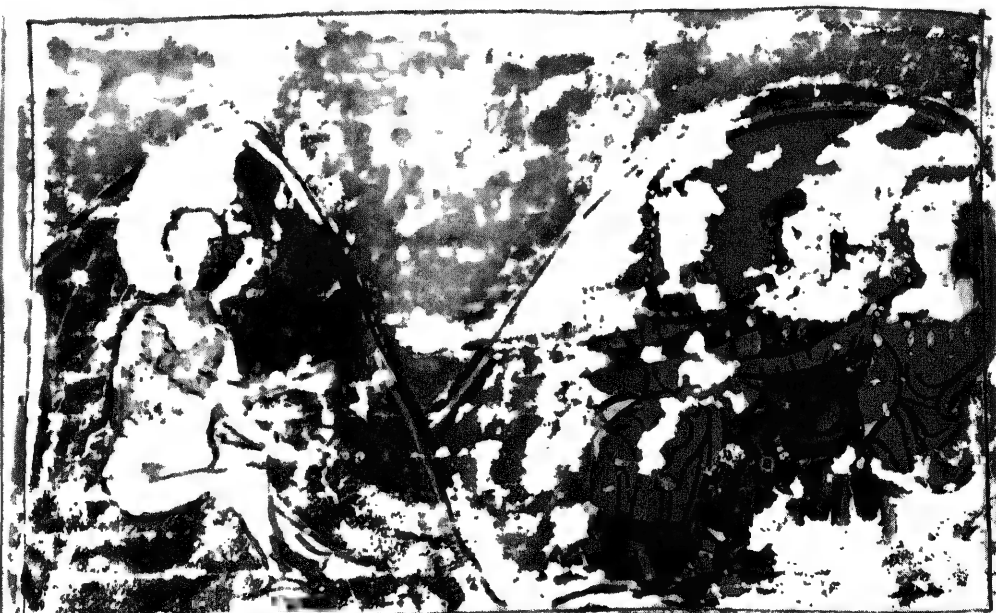
175 3 Barocci 201, f. 58 unten



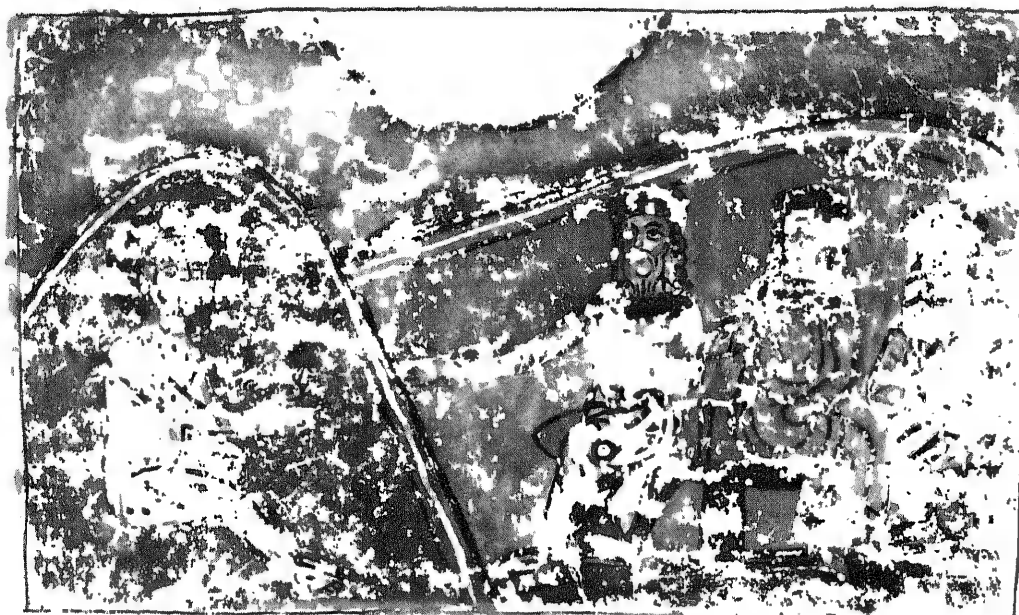
176 3 Barocci 201, f. 69^b



177 3 Barocci 201, f. 70



178 3 Barocci 201, f. 70^b



179 3 Barocci 201, f. 72



180 3 Barocci 201, f. 72v



181 3 Barocci 201, f. 74



182 3 Barocci 201, f. 75



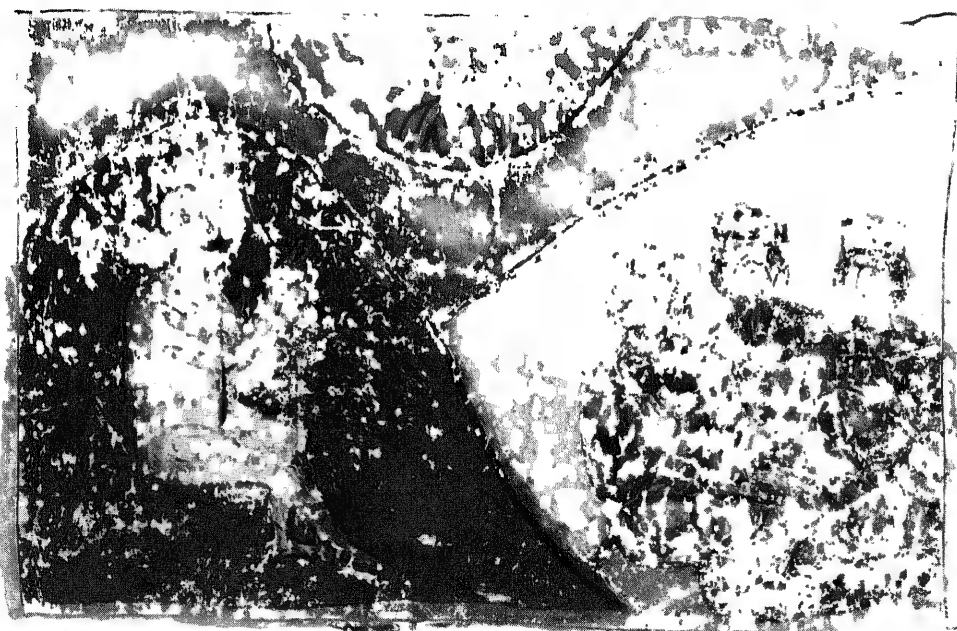
183 3 Barocci 201, f. 75



184 3 Barocci 201, f. 76



185 3 Barocci 201, f. 77



186 3 Barocci 201, f. 78



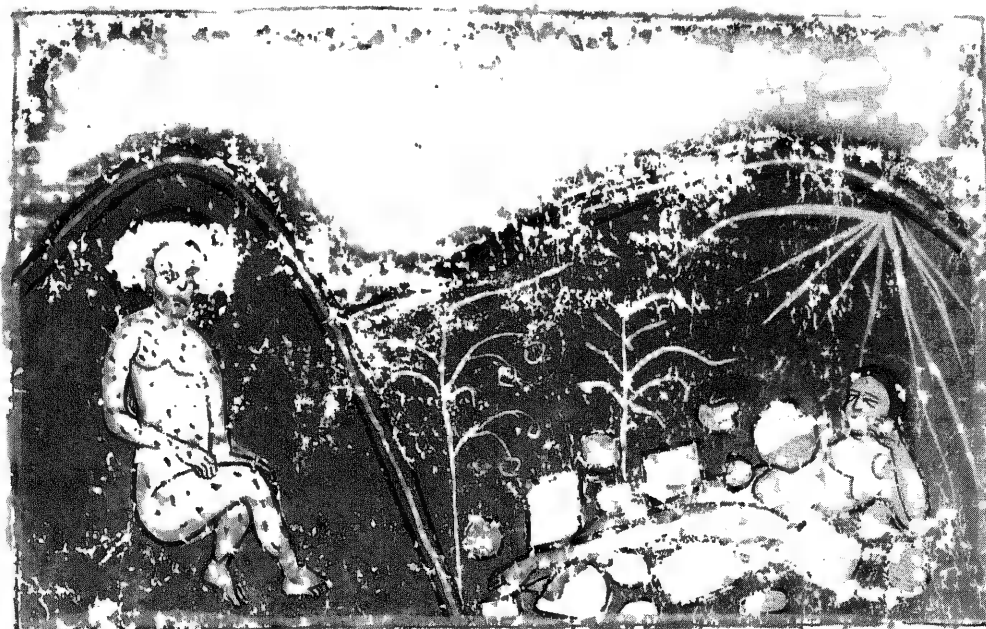
187 3 Barocci 201, f. 78'



188 3 Barocci 201, f. 79



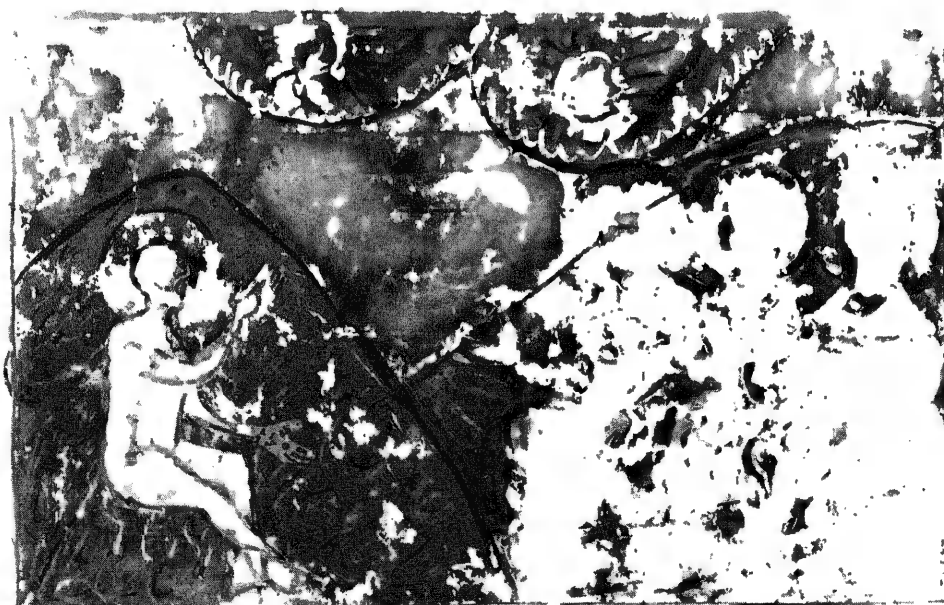
189 3 Barocci 201, f. 80



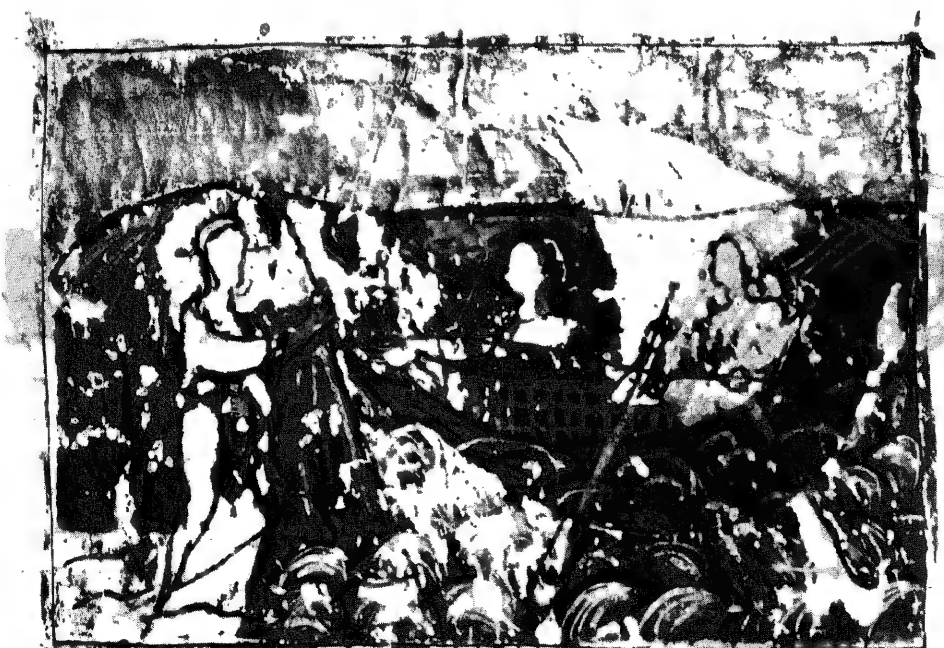
190 3 Barocci 201, f. 81



191 3 Barocci 201, f. 83



192 3 Barocci 201, f. 84v



Καταμάρτυρις το εἶμα ὁ καὶ τὸν ὀχλὸν ἀναμάρτυρον ἑαυτοῦ ἀποδοχόν-ε

193 3 Barocci 201, f. 85 oben



194 3 Barocci 201, f. 85 unten



195 3 Barocci 201, f. 86



196 3 Barocci 201, f. 87



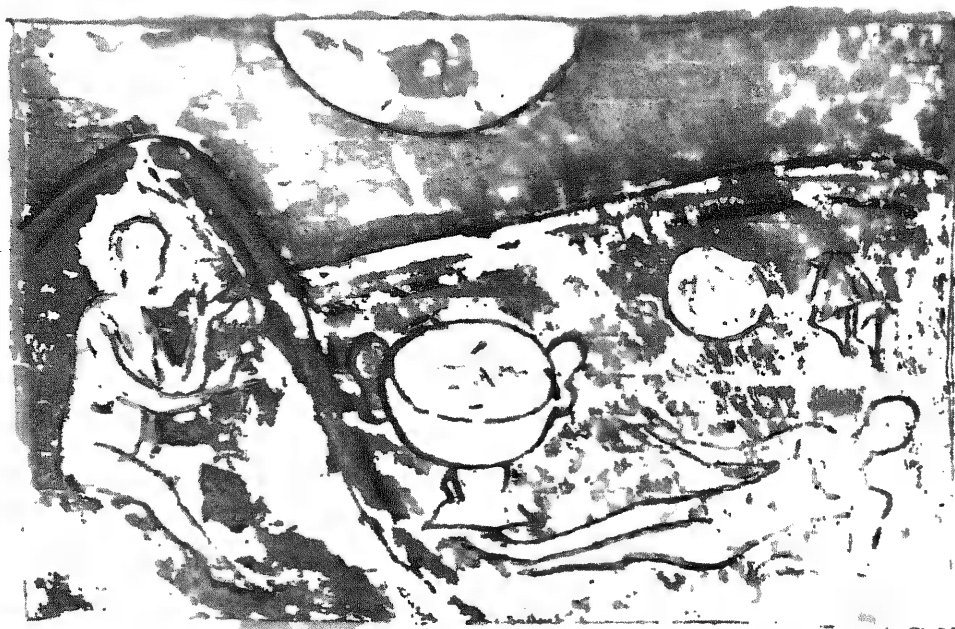
197 3 Barocci 201, f. 89v



198 3 Barocci 201, f. 90



199 3 Barocci 201, f. 92



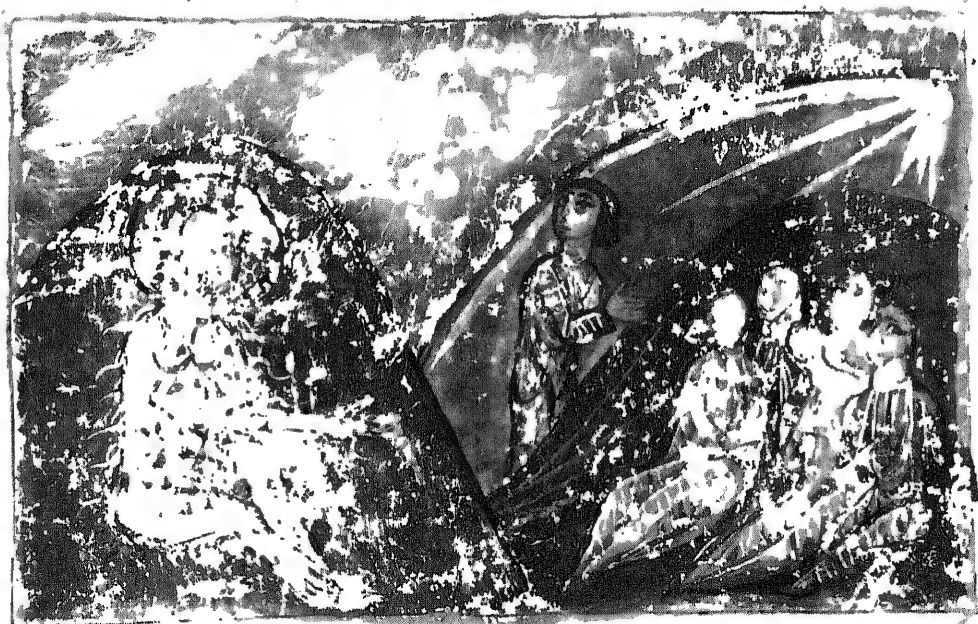
200 3 Barocci 201, f. 92v



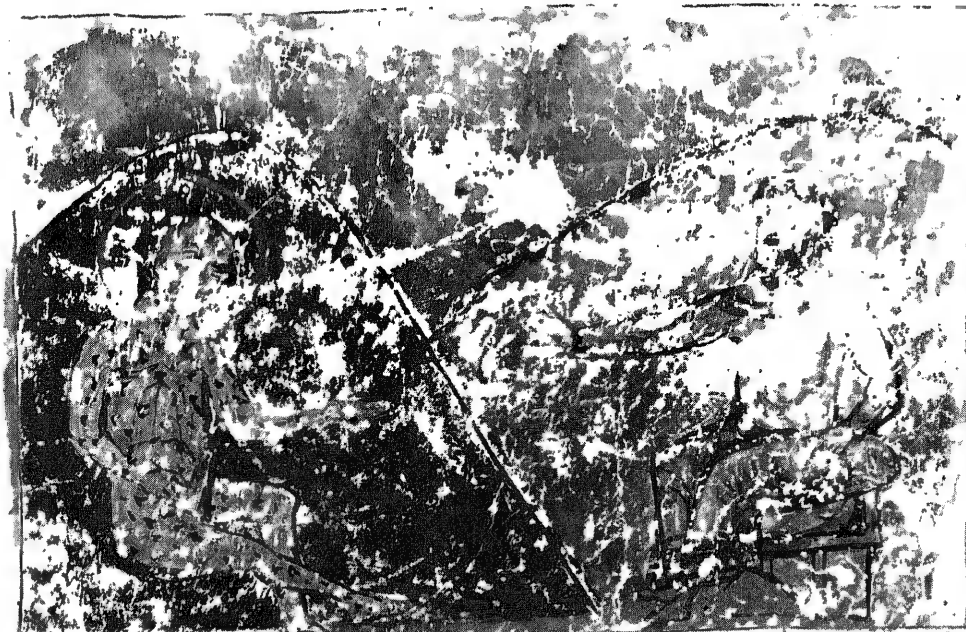
201 3 Barocci 201, f. 94



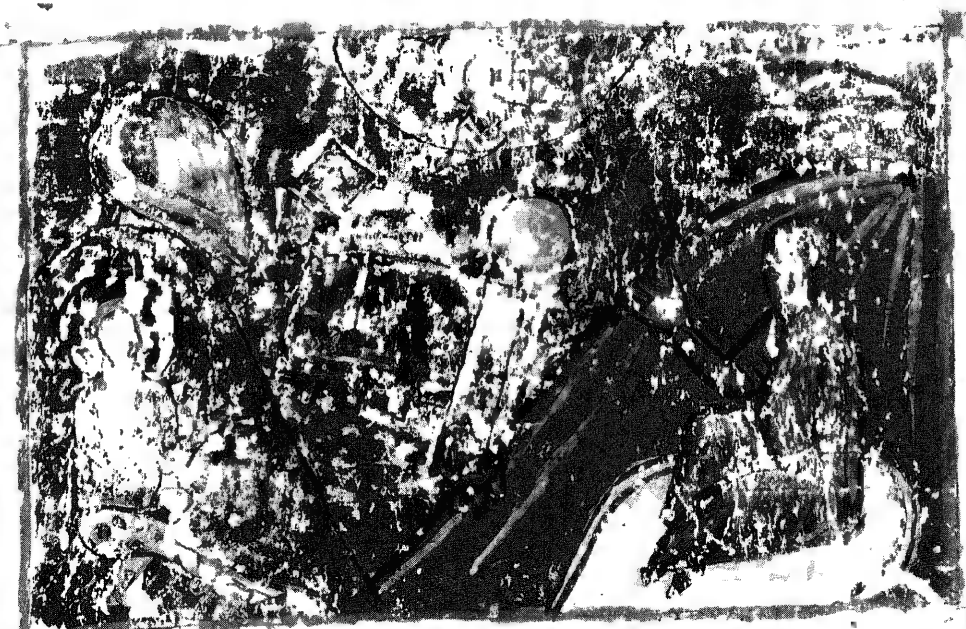
202 3 Barocci 201, f. 94v



203 3 Barocci 201, f. 95v



204 3 Barocci 201, f. 96



205 3 Barocci 201, f. 97v



ὅτι τὸ ἔργον ὡς ἀσφαλὲς ὡς ἀνέστηται ὁ πᾶν ἀνὴρ ὁσὶς ἔχει
 μήχεσθαι αὐτοῖς ματαίωσέθις· καὶ δωαμένον παῖδα τὸν τοῦ θύ-
 ... καὶ μετὰ τὴν ἀνάστασιν διὰ δὲ τοῦ ἐκ μύστη ὅμοιο παρὶς σὺ

206 3 Barocci 201, f. 98

ἐρθεῖ· ἀλλ' ὅλως ἐμὴν ἰφίλοιο φεῖ· —
 ἡ ληψὶς τὴν ἀλίστην ἡμετέραν· τὴν ἀλίστην



ἡ ἰστορία τὴν ἀνὴρ κρύνει ἀνὴρ· ἡ δὲ ἰστορία τὸ μέγα ἔργον τοῦ θύ-
 ... καὶ τὸ ἔργον ἀκριβοῦς διασφύλαξαι· καὶ ἡ ἐκ μύστη ὅμοιο παρὶς σὺ

207 3 Barocci 201, f. 100



208 3 Barocci 201, f. 101

μειδ' ἔστιν ὅτι· Εἰκότως· ὅτι δὲ πάντων δαπάνων, ἄφ' αὐτοῦ χεῖν τὴν
 ἡμετέραν καὶ τῶν ἄλλων·



209 3 Barocci 201, f. 102



210 3 Barocci 201, f. 102v



211 3 Barocci 201, f. 103



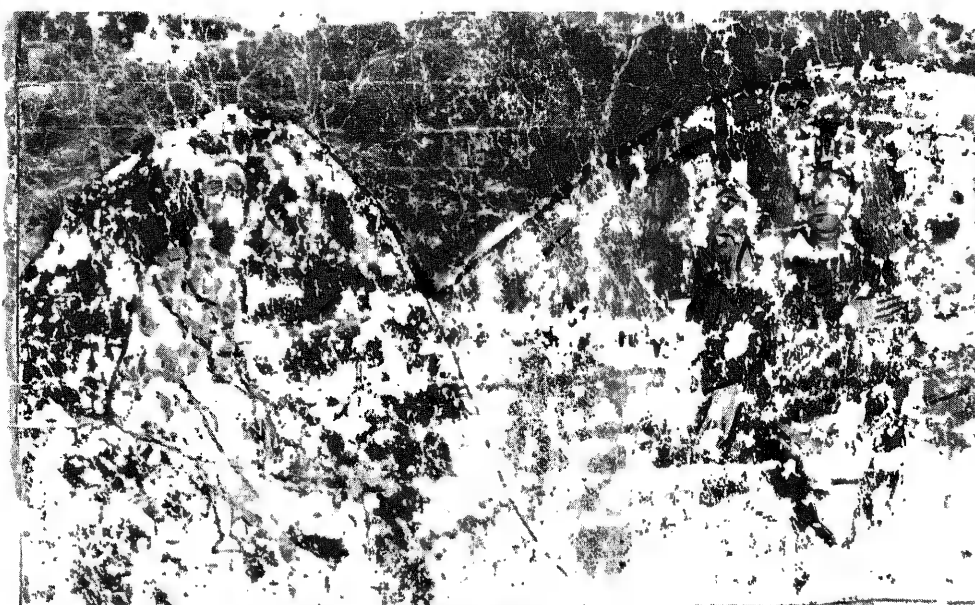
212 3 Barocci 201, f. 103v



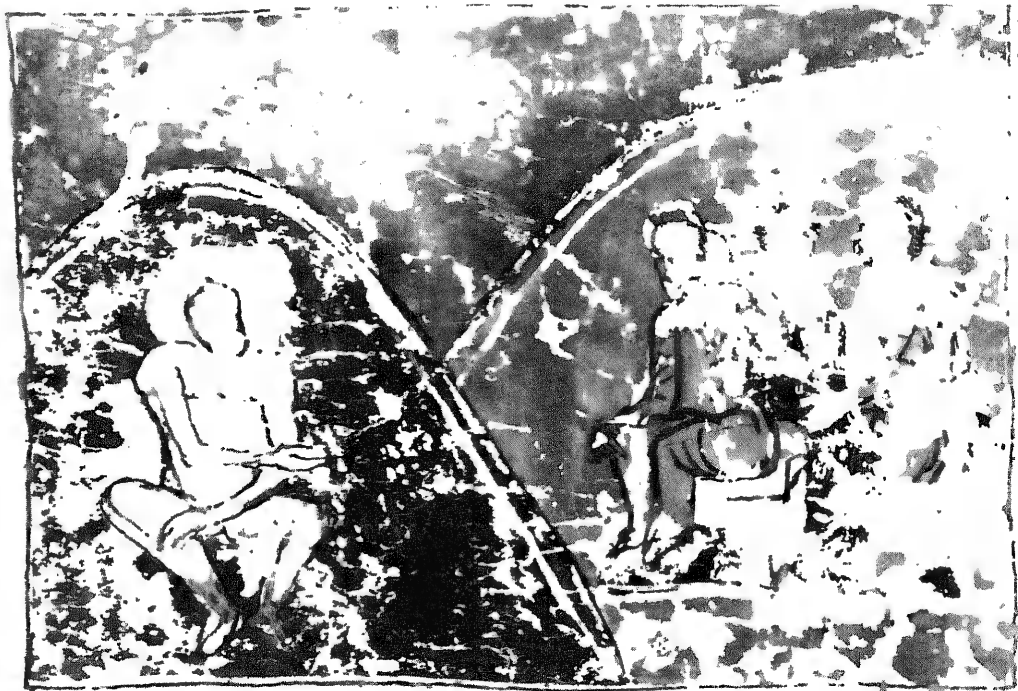
213 3 Barocci 201, f. 104



214 3 Barocci 201, f. 104^v



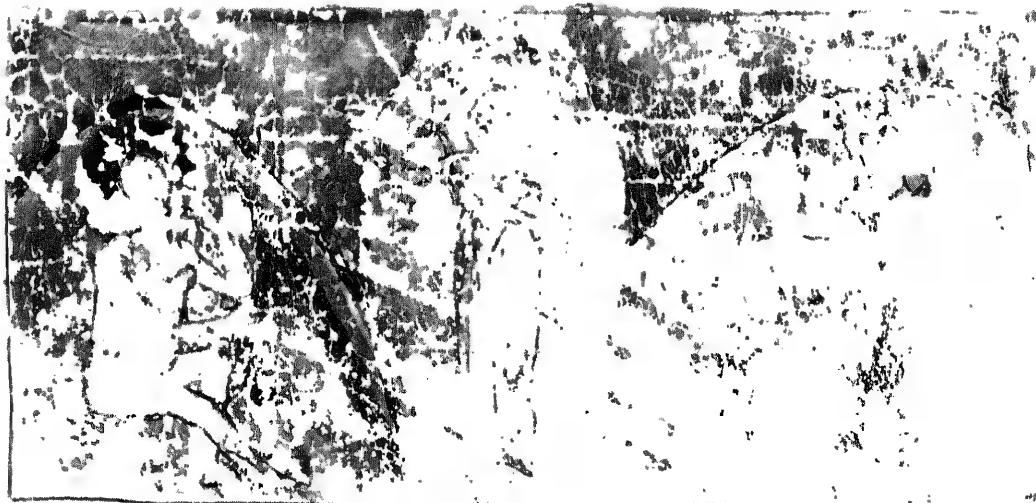
215 3 Barocci 201, f. 105^v



216 3 Barocci 201, f. 106^v



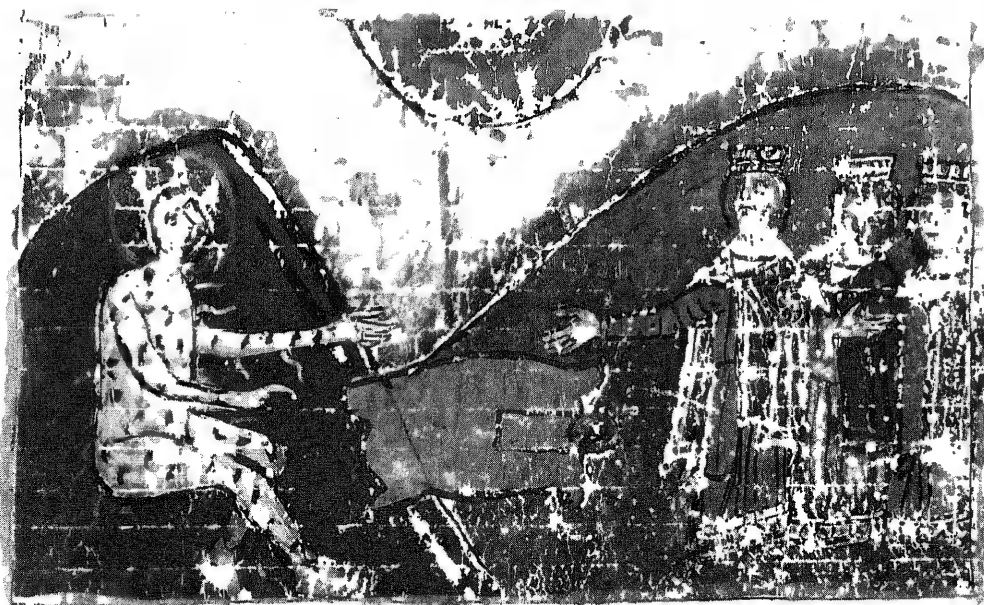
217 3 Barocci 201, f. 107^v oben



218 3 Barocci 201, f. 107^v unten



219 3 Barocci 201, f. 108^r

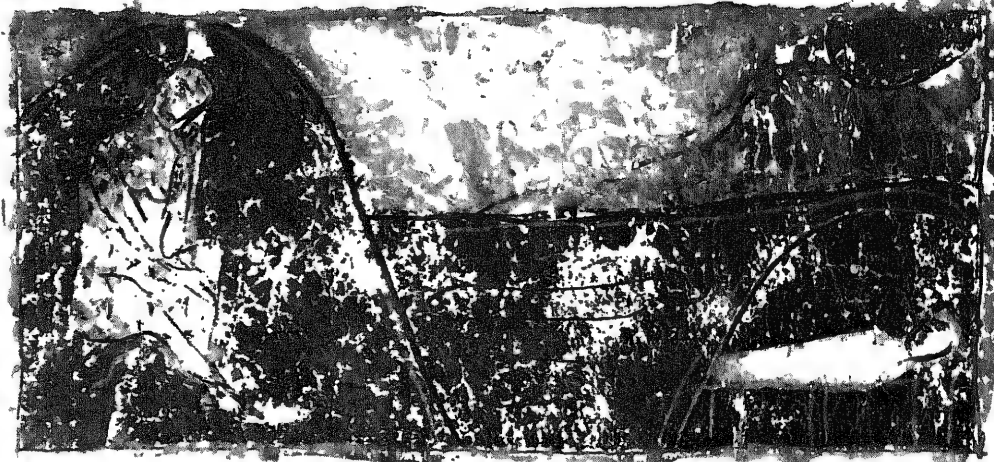


220 3 Barocci 201, f. 109^v



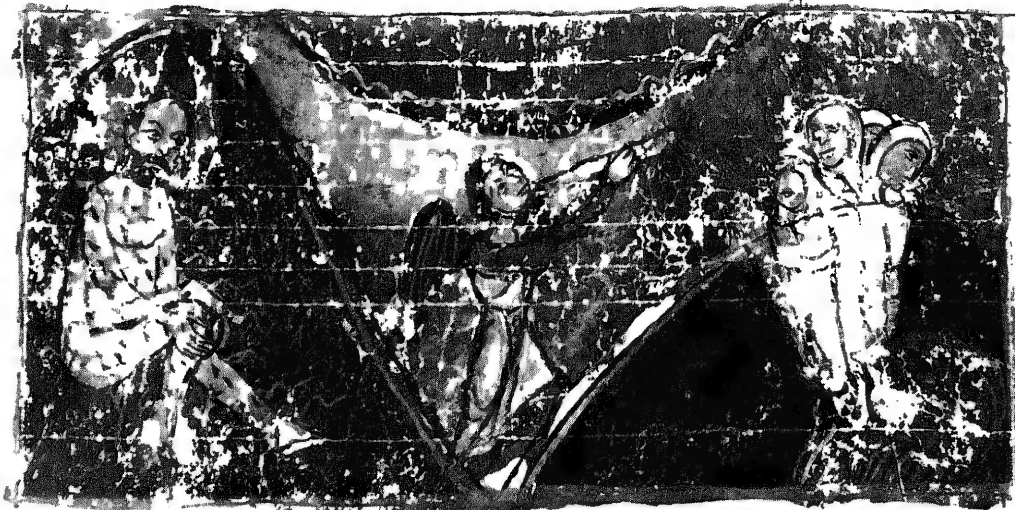
221 3 Barocci 201, f. 111

ΧΡΟΝΟΣ ΑΠΟΛΗΨΕΤΑΙ ΘΑΥ· ΠΟΤΑ ΔΕ ΕΡΗΜΕΤΕΣ ΕΡΘΕΝ· ΔΗΘΕ
 ΚΟΙΜΗΘΥΜΕΝ· ΔΗΘΕ· ΣΟΥΚΕΣΥΠΗΙΣ ΘΕΙΟΝ ΕΞΥΠΝΟΙΔΕΤ·

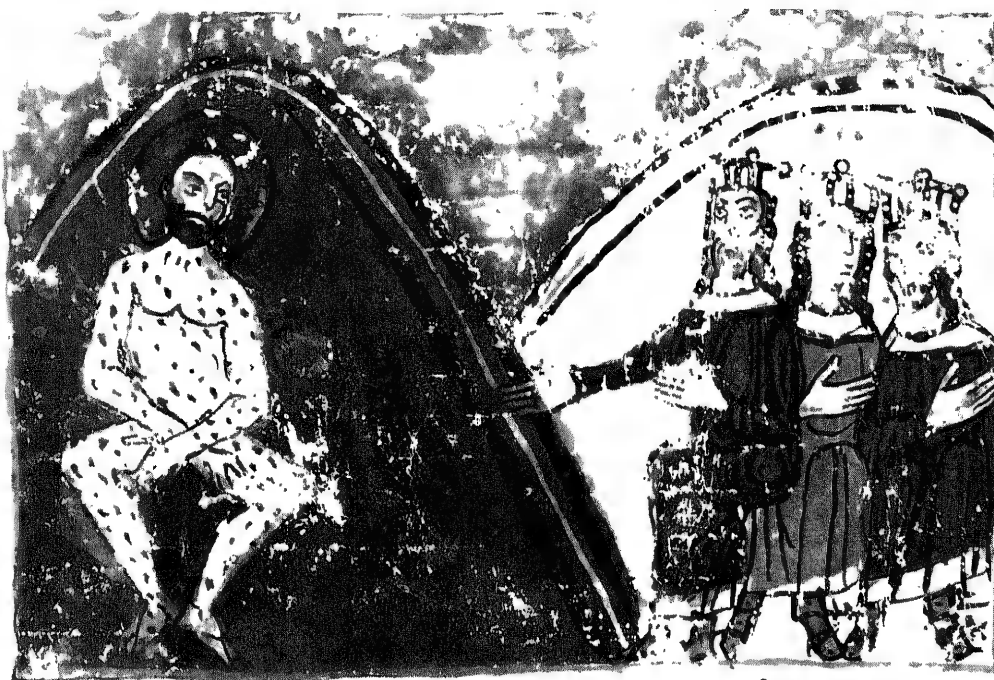


222 3 Barocci 201, f. 111

ΕΝΑΝΤΙΟΝ· ΗΣΑΝ· ΑΝΕΣ· ΤΟΥΤΟ· ΝΗ· Ε· ΔΗΘΕ· ΕΠΙΘΕΜΕΝ· Μ
 ΕΥΗ· ΕΣΑ· ΤΑ· ΚΑΛΕ· ΡΑ· ΤΟΥ· ΚΙΟΥ· Α· Υ· Κ· Ε



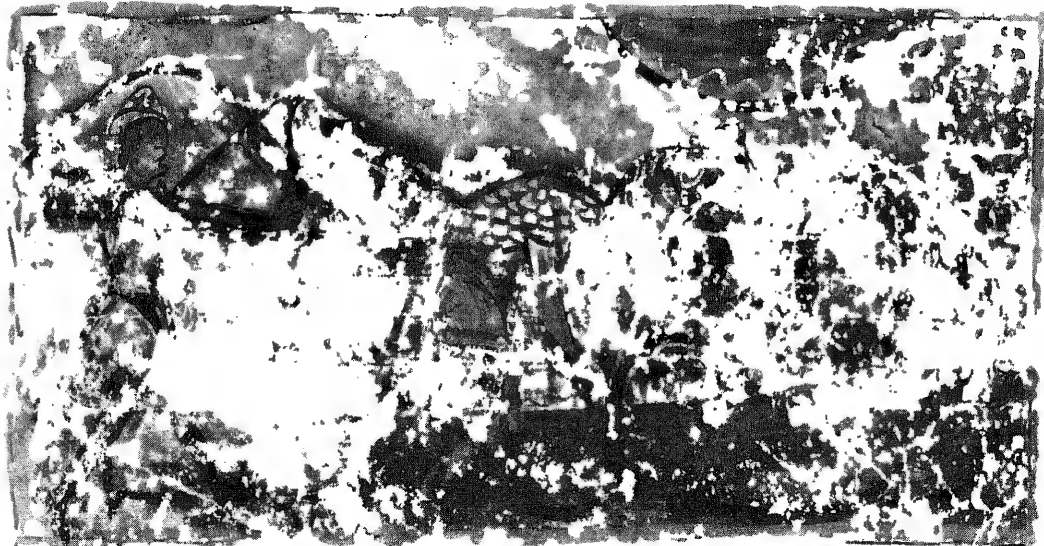
223 3 Barocci 201, f. 112



224 3 Barocci 201, f. 114



225 3 Barocci 201, f. 116v



226 3 Barocci 201, f. 117



227 3 Barocci 201, f. 118



228 3 Barocci 201. f. 118^v



229 3 Barocci 201. f. 120



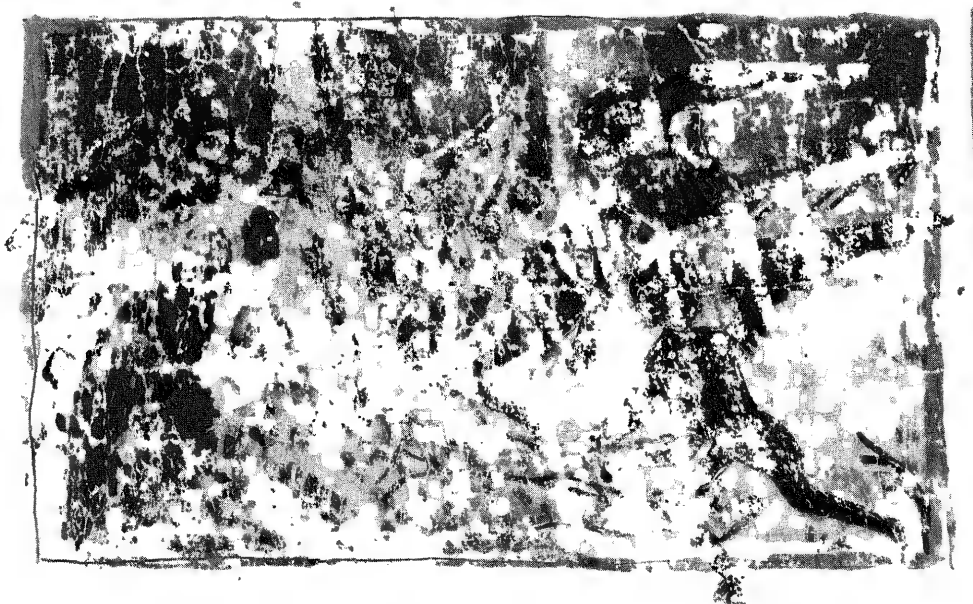
230 3 Barocci 201. f. 121



231 3 Barocci 201, f. 121^v



232 3 Barocci 201, f. 122 oben



233 3 Barocci 201, f. 122 unten



234 3 Barocci 201. f. 122^v



235 3 Barocci 201. f. 123



236 3 Barocci 201. f. 123^v



237 3 Barocci 201, f. 124



238 3 Barocci 201, f. 124v



239 3 Barocci 201, f. 125



240 3 Barocci 201. f. 125v



241 3 Barocci 201. f. 127



242 3 Barocci 201. f. 128



243 3 Barocci 201, f. 128^v



244 3 Barocci 201, f. 129^r



245 3 Barocci 201, f. 130



οὐτάρ τι μὰ παρ' ἑταίρου στήθεσσι τοῦ οὐτοῦ· εἰδὲ ἀμείνων λέγει, ἀμὰ μὲν
 γυναικὶ καὶ τῷ συμπαίοντι αὐτοῦ· ἱμάμι δὲ δόξα καὶ ἀνὸν λέγει· ὁ δὲ λέγει
 τοιοῦτο μὲν ἐστίν· οὐχὶ πρὸς τῷ μὲν πρὸς δὲ βέλτερον ὄντα παρ' ἑαυτοῦ· καὶ εἰς τὸ δεῖν

246 3 Barocci 201, f. 130v



Ἐἰς οὐτὸν σὸς ὅρα μὲν δὲ εἶδε τὸ ἐκαστὸν ἐγγεγραμμένον· ὡς περὶ τὸ φῶς καὶ τὸ ἐκαστὸν
 ἐκαστὸν τῶν ὁσίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων
 καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων καὶ τῶν ἀσπίων

247 3 Barocci 201, f. 131v



Χριστὸς δὲ δαιμονίου τῶν παίδων ἀφ' ὧν ἀνέστη·
ἐξ οὗτοι μὲν αἱ χεῖρες αὐτοῦ καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ· ἡ δὲ αἰμαίναν· καὶ

248 3 Barocci 201, f. 146v

συνεῖλον· τὸ σῶμα αὐτοῦ καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ·



Ἀλλ' οὐ μὲν αὖτε ἀνάπαυσαν· οἱ δὲ ἀνέστησαν αἱμαίναν·
καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ καὶ τὸ σῶμα αὐτοῦ·

249 3 Barocci 201, f. 147



Φημι λέγει τὴν ἀποφάνει τὴν παῖσι καὶ ἀντιστάμενον· αὐτόν τινος

250 3 Barocci 201, f. 149



αὐτὸν ἐμνοῶν φησὶν· ὅτι μόνος ὁ θεὸς τὴν ἀρετὴν ἀντιστάμενον

251 3 Barocci 201, f. 150



χρυσίμ· εἰ καὶ ἀνὰ μάχαις ἐμὸς δὲ τῷ ὡς ὁρᾶται, ὁ χρυσίμ

252 3 Barocci 201, f. 150v



ὄντο τὸν ἰσὺν ἱερέος· σωτὴρ ἔστι τοῦ γένους οἱ λίθοι· καὶ
 χρυσίμ· οἱ δὲ καὶ ὅτι τὸ ὡς ὁ γένος δι' οὗ ἐμὸς τὸ ὡς ἔστι

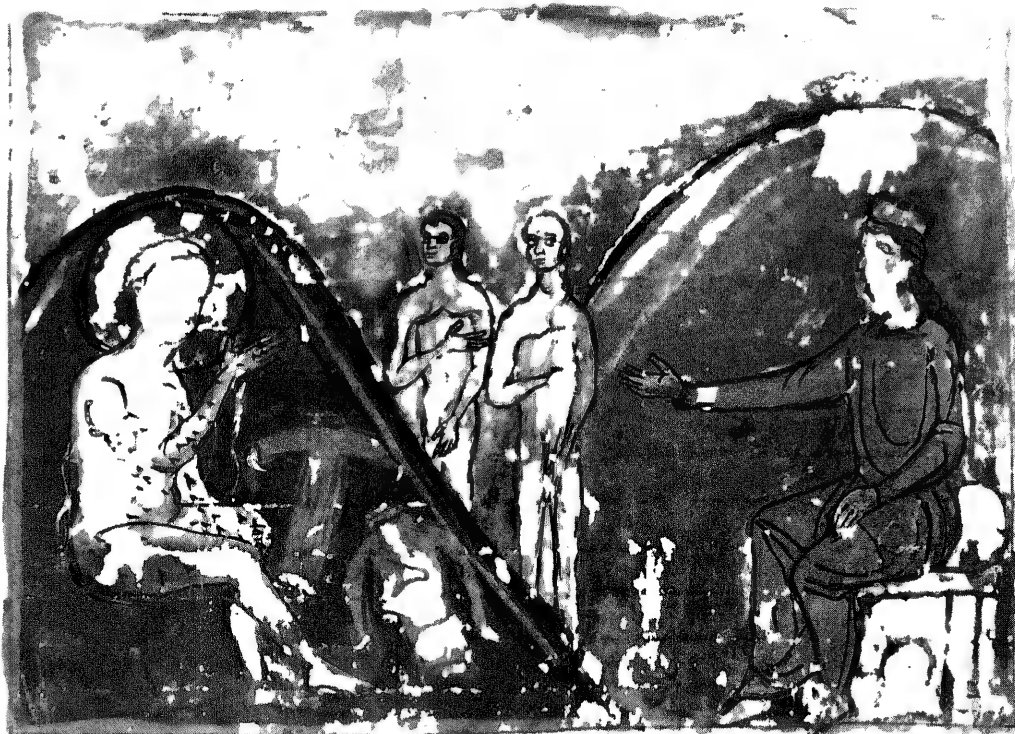
253 3 Barocci 201, f. 152

καὶ ὁ ἀρχιεπίσκοπος τῆς πόλεως ἐπισκοπεῖ αὐτοὺς



δὲ σὺ μέγας ἀναιτίου· τοῦτά ἐστι τὸ ἴδιον δὲν ὁ φείλοντας ὡς
ὁ φείλοντας ἐν ἑαυτῶν δὲ θεοκλειστομένῳ, τοῖς ματὲρ δ'.

254 3 Barocci 201, f. 153



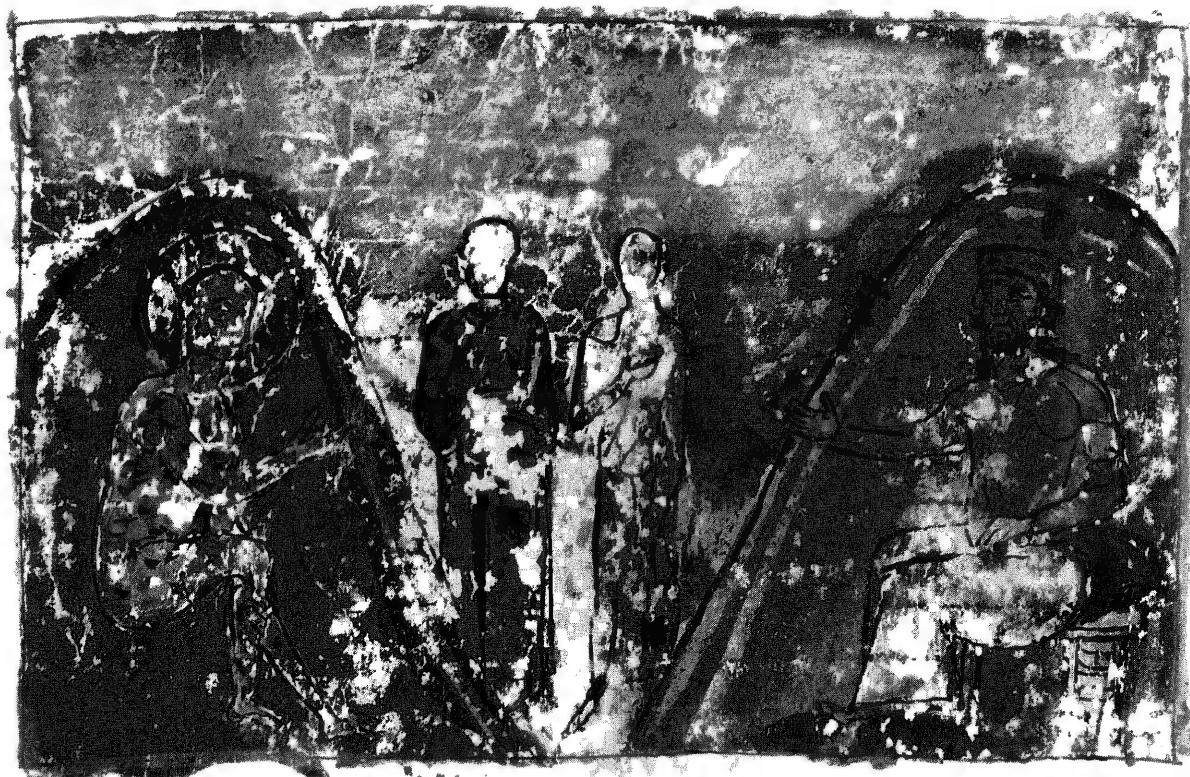
ὡς πῶς ἐμὲ τὸν γένον ἐκ δ' ἐμ· γένον οὖν τὸ ἐσθ' ἡ σέμ' ἡ στα
ἐλθέτω μετὰ ἀποδομένη

255 3 Barocci 201, f. 153'



ἰλέω φησὶν ἐπὶ τοῦ παρὰ χροῖον μένω· ὅτι καὶ σὺν μακρῶν

256 3 Barocci 201, f. 154

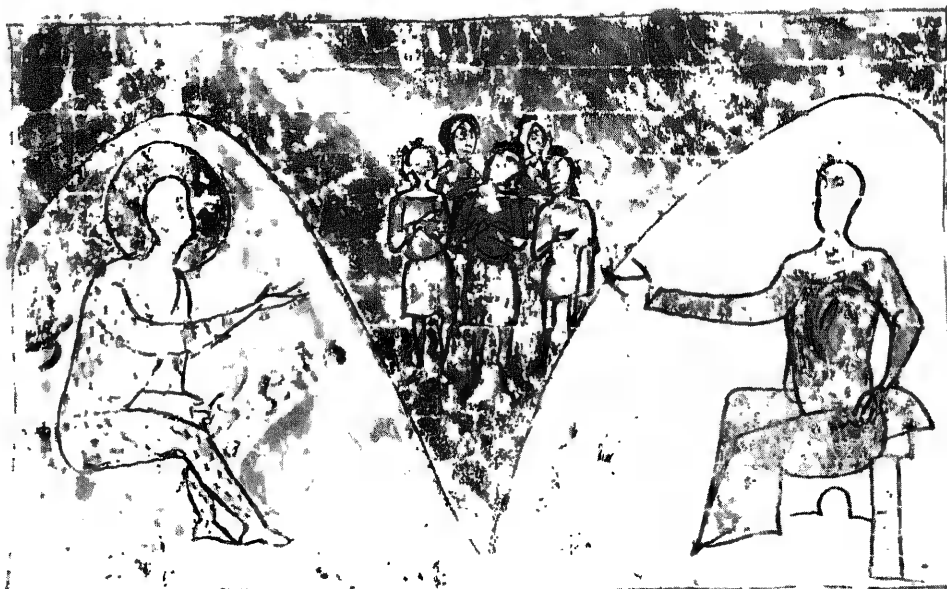


οὐ γὰρ καὶ τὰ κρίσεις οὐδὲ καὶ αἰεὶ· οὐδὲ ἀποθῶσ· ἀλλὰ ἀμφοροπ
 εἰκόσθωσι· πρὸς ποσὶ καὶ ἀντιθέσιν· καὶ δὲ κάθωμ.

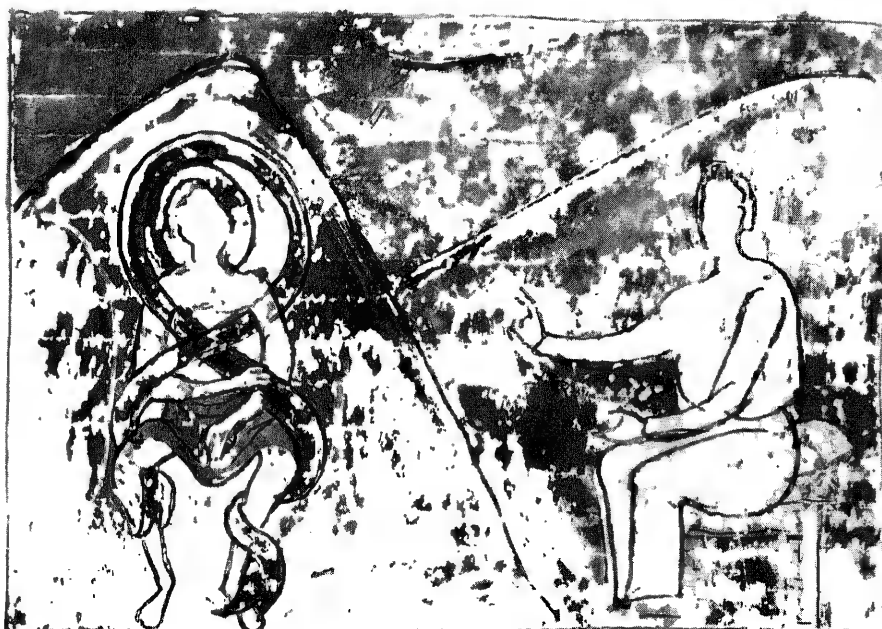
257 3 Barocci 201, f. 154v



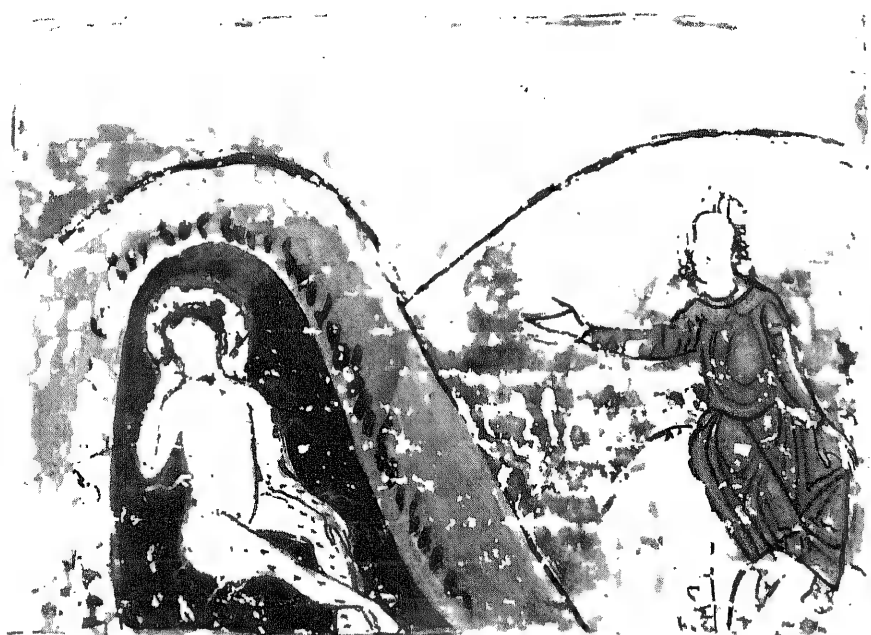
258 3 Barocci 201, f. 155 oben



259 3 Barocci 201, f. 155 unten



260 3 Barocci 201, f. 155'



261 3 Barocci 201, f. 156



262 3 Barocci 201, f. 158v



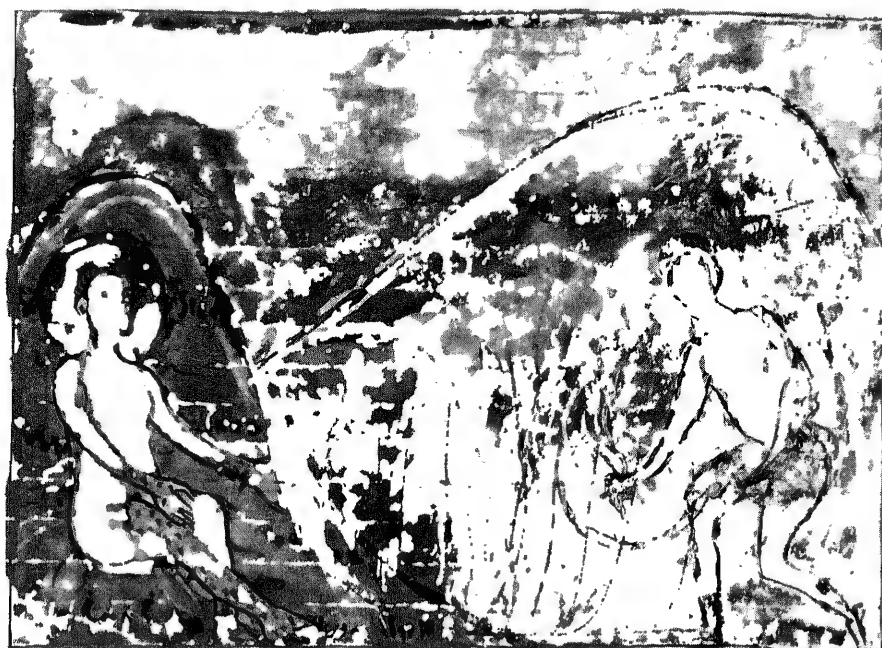
263 3 Barocci 201, f. 159v



264 3 Barocci 201. f. 160v



265 3 Barocci 201. f. 161



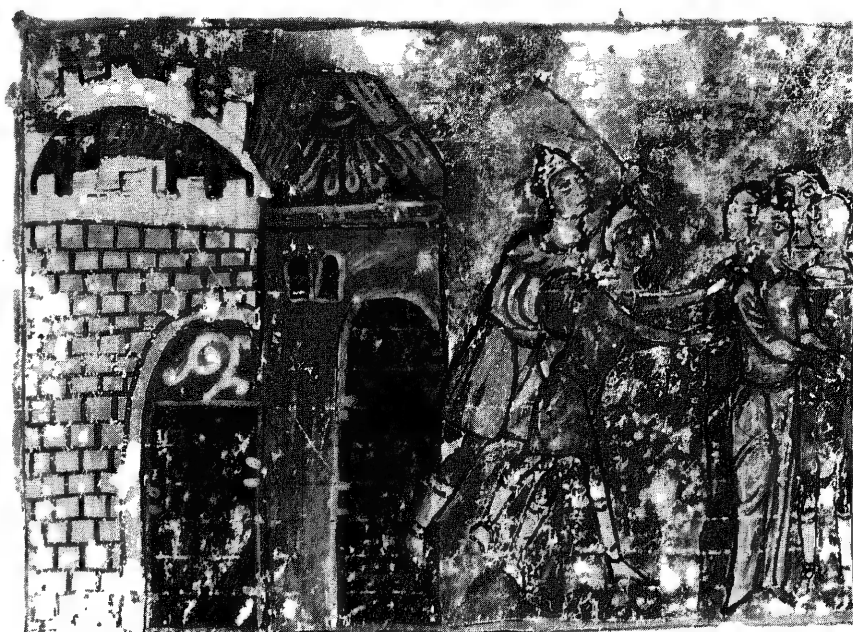
266 3 Barocci 201. f. 161v



267 3 Barocci 201, f. 162



268 3 Barocci 201, f. 162'



269 3 Barocci 201, f. 163



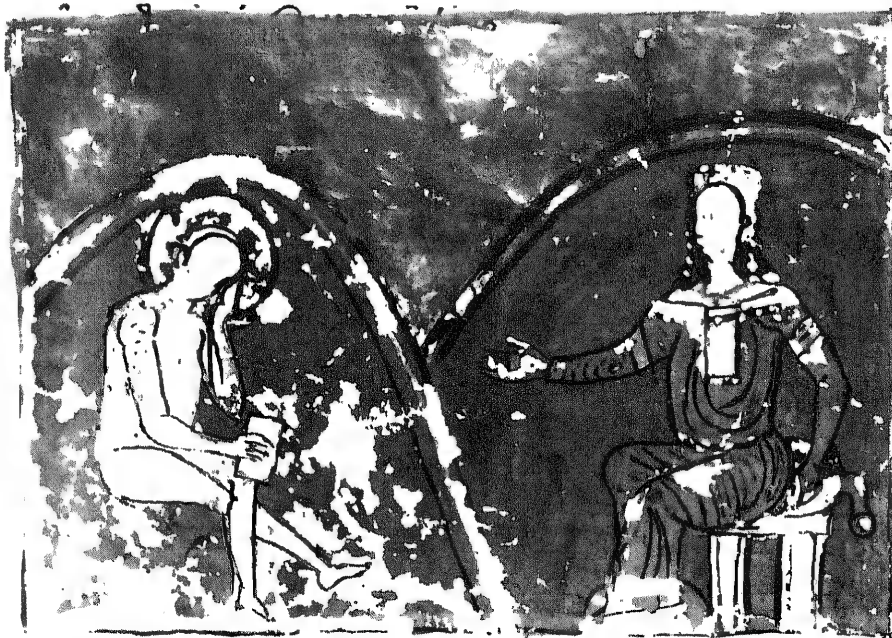
270 3 Barocci 201, f. 163v



271 3 Barocci 201, f. 165



272 3 Barocci 201, f. 165v



273 3 Barocci 201, f. 166



274 3 Barocci 201, f. 167v



275 3 Barocci 201, f. 168

καὶ ἐκ τῶν ἀνέμων· —



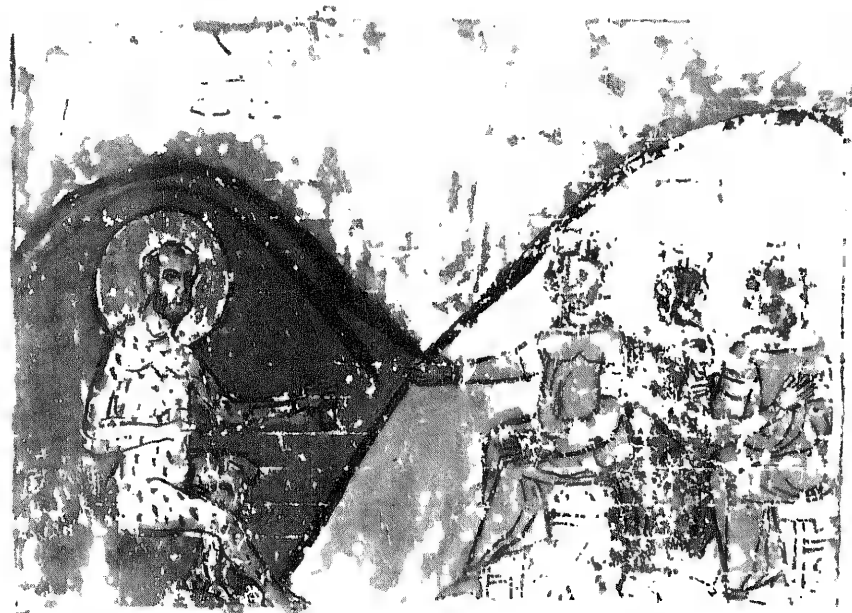
ὁ οὐρανὸς ὡς περὶ τῶν νεφελῶν· καὶ τὸ ὕψος θαυμάσιον· ὁ δὲ σὺν ἑαυτῷ·

276 3 Barocci 201, f. 168

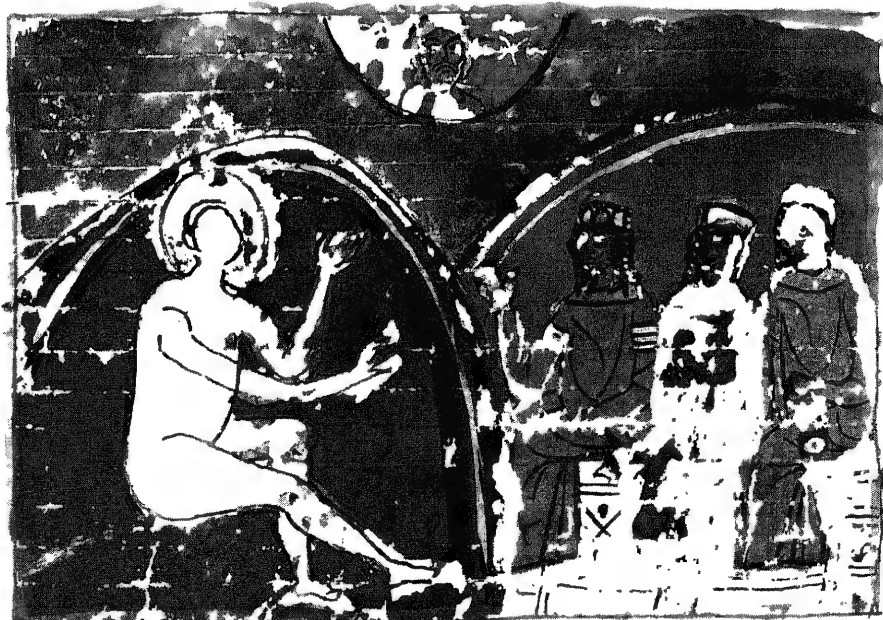
ἀνὰ δὲ τὴν ὁδὸν τῆς φρενὸς· —



277 3 Barocci 201, f. 170



278 3 Barocci 201, f. 171



279 3 Barocci 201, f. 171v



280 3 Barocci 201, f. 172v

οίχεται αἰσώχῃ· οὕτω καὶ τὸ ὑπὸ τοῦ αἵματος ὑπὸ τῆς
τοῦ αἵματος ἐμφάνεται σαφὲς, ἐν δὲ αὐτοῦ· ὡς ὑπὸ τοῦ οὐρανοῦ τὸ ἄστρο

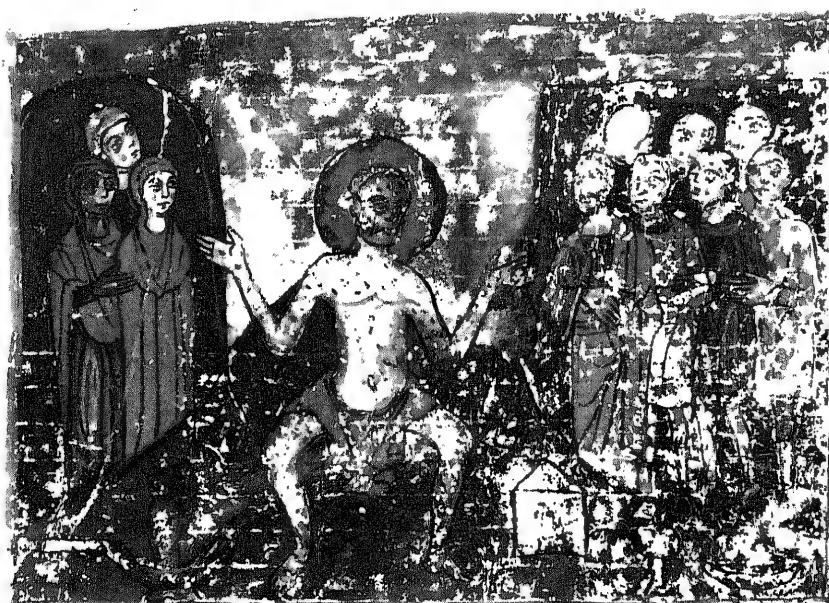


281 3 Barocci 201, f. 173



ἡμῶν δὲ καὶ αὐτῶν· τίς δὲ αἰσώχῃ καὶ τὸ ὑπὸ τοῦ αἵματος ὑπὸ τῆς
τοῦ αἵματος ἐμφάνεται σαφὲς, ἐν δὲ αὐτοῦ· ὡς ὑπὸ τοῦ οὐρανοῦ τὸ ἄστρο

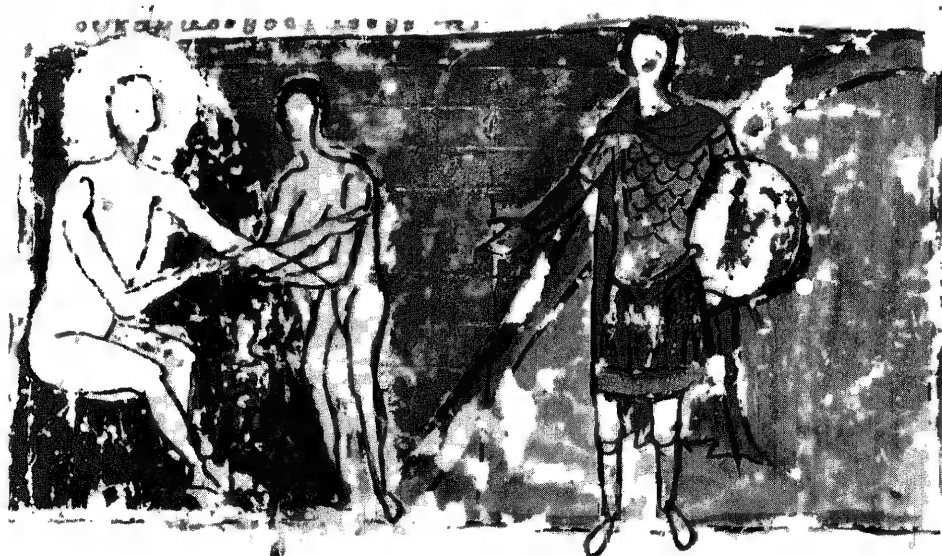
282 3 Barocci 201, f. 178



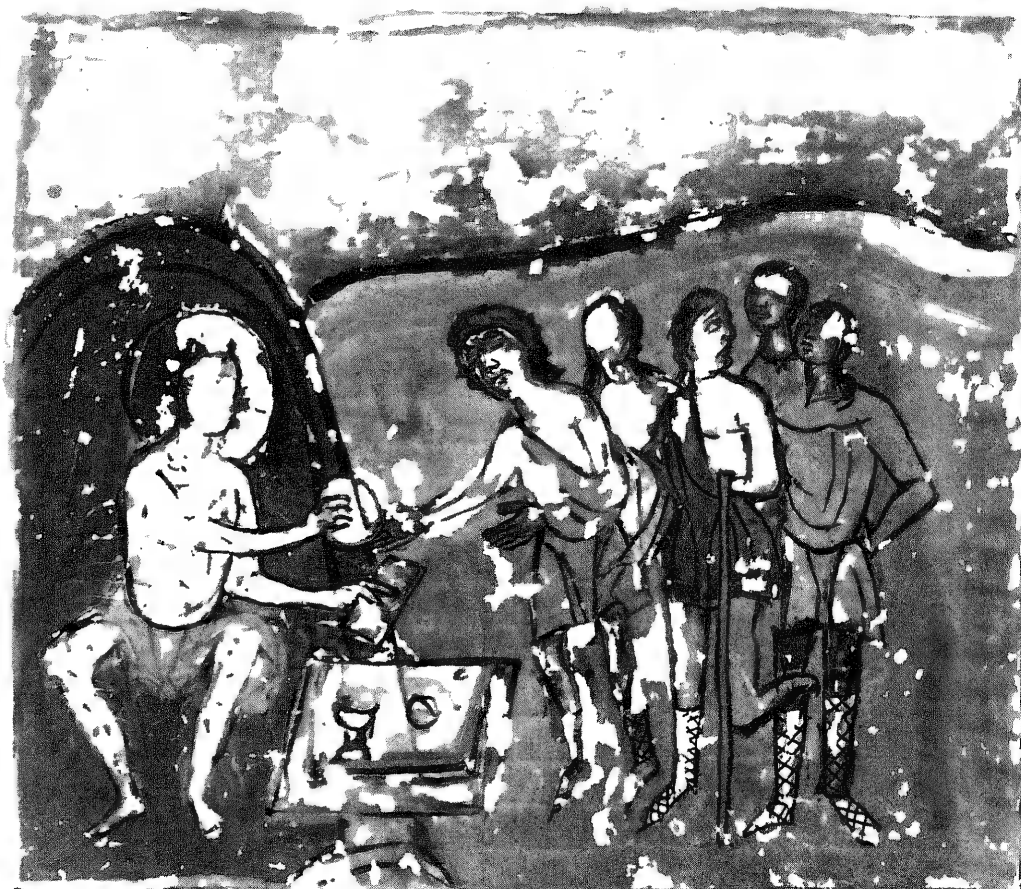
283 3 Barocci 201, f. 179



284 3 Barocci 201, f. 179v



285 3 Barocci 201, f. 180



ῥαὶ παρὰ τὸ ἰσχυρὸν μέγιστον ἀνὰ τὸ πρῶτον ποιεῖται ὡς ἔστιν ἐρομένοις

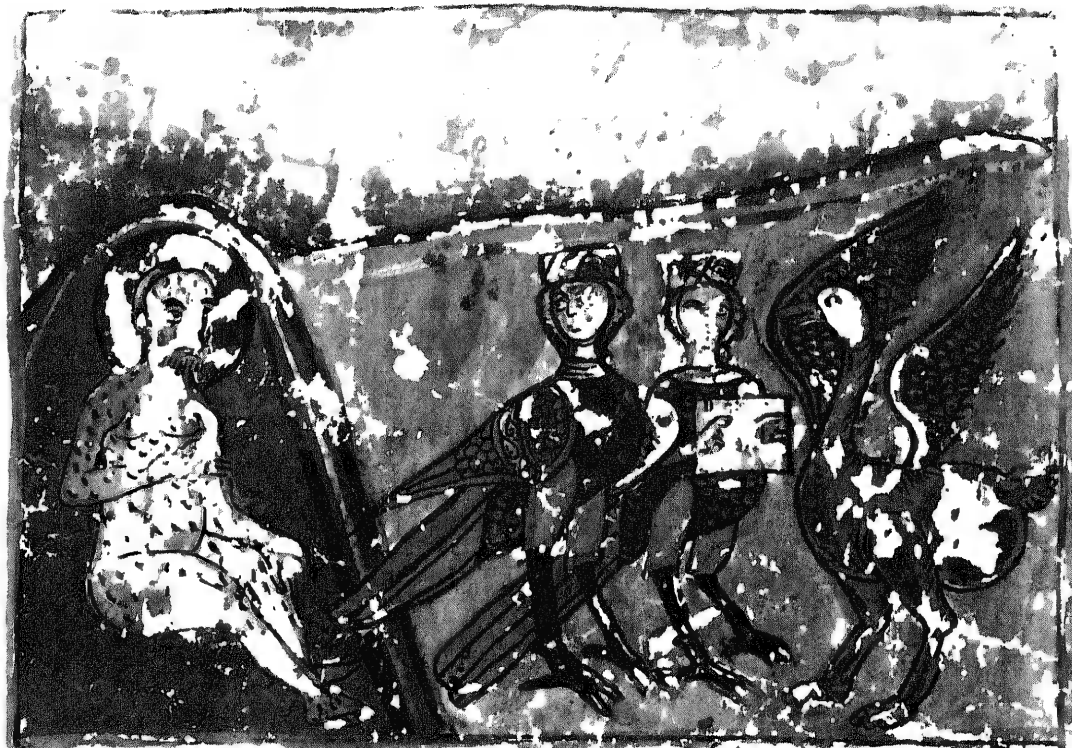
286 3 Barocci 201, f. 181v



ἐν οὗτοι οὐκ ἀνίστανται αὐτοῦ κατὰ ῥα ματὸν κατὰ δὲ ζεν· ὅπως τε
καὶ τὰ ἄλλα ἵνα ἴδωμεν ἐν ἐν δὲ αὐτῶν

287 3 Barocci 201, f. 186v

λεμον· ἄλλ' ἂν καὶ πολλὰ περὶ βακόντες ἀνὰ κρηθον· —



εὐδύναν λέγει ὁ δικόωντι πρὸς οὐρανὸν· ἄλκυονας· ἡ γαῖαν· ἀνέ-

288 3 Barocci 201, f. 187v

— — — — —



δὲ σίμαχος καὶ οὐδὲν ἐν ἐνόσῳ περὶ παρθένου· ἀσπλῆκτον

289 3 Barocci 201, f. 188



τοι δὲ ἰδοὺ ἡμεῖς συλλαμβάνομεν σὲ καὶ ἀμαρτίαν· καὶ ἀντίμῃ

290 3 Barocci 201, f. 190



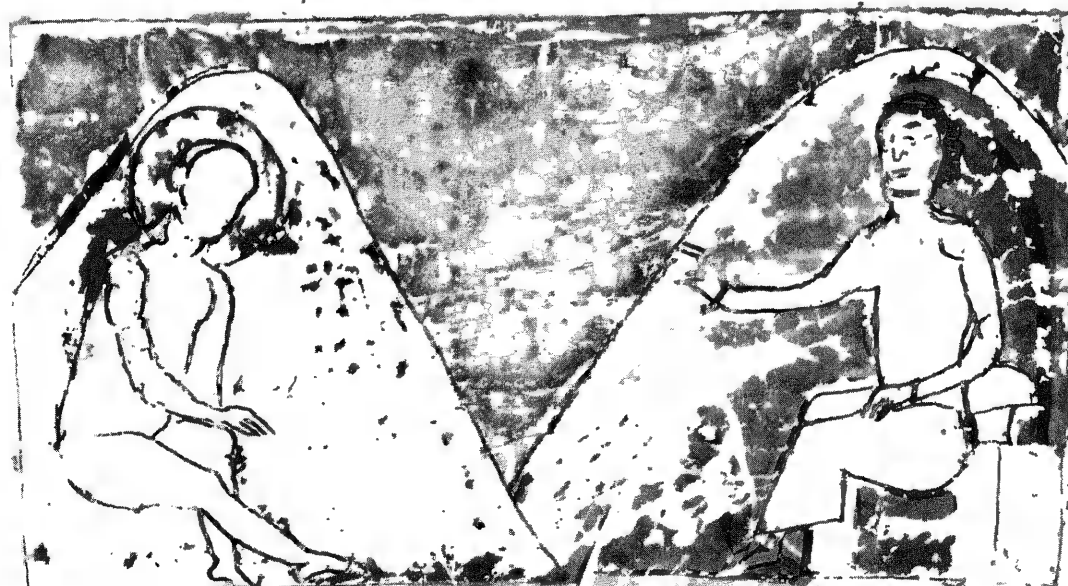
291 3 Barocci 201, f. 191



292 3 Barocci 201, f. 191^v



293 3 Barocci 201, f. 193



294 3 Barocci 201, f. 196



295 3 Barocci 201, f. 197



296 3 Barocci 201, f. 197v



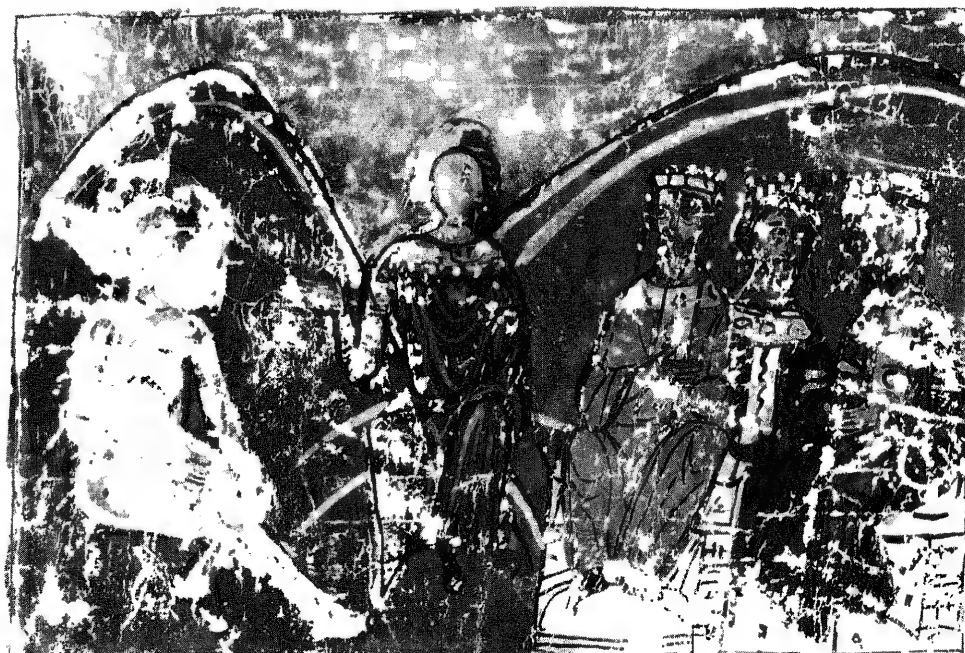
297 3 Barocci 201, f. 198v



298 3 Barocci 201, f. 199^s



299 3 Barocci 201, f. 202



300 3 Barocci 201, f. 205



301 3 Barocci 201, f. 205v



302 3 Barocci 201, f. 207v



303 3 Barocci 201, f. 211

την· εαμπερίτηαροιστομ· νειο· λεοσνα· ονιαι·



σου τέναν· εν· κατ· θου· η· δι· α· ρ· ι· α· η· τ· α· ε· ι· θ· ι· μ· ε· ν· ω· και· α· ν· α· φ· ο· ρ· η· σ· α· ι·
 τ· ο· υ· θ· υ· τ· η· ν· ι· σ· χ· ι· ω· s· ο· σ· τ· ι· s· α· η· μ· ο· υ· τ· ο· s· α· κ· υ· λ· α· s· θ· ε· ο· δ· ο· τ· ε· s· ω· μ· σ· υ· μ· μ· α· χ·
 η· α· τ· α· μ· ο· s· σ· μ· σ· υ· λ· ε· s· ε· ν· θ· ι· μ· ε· s· θ· ε· τ· ι· -

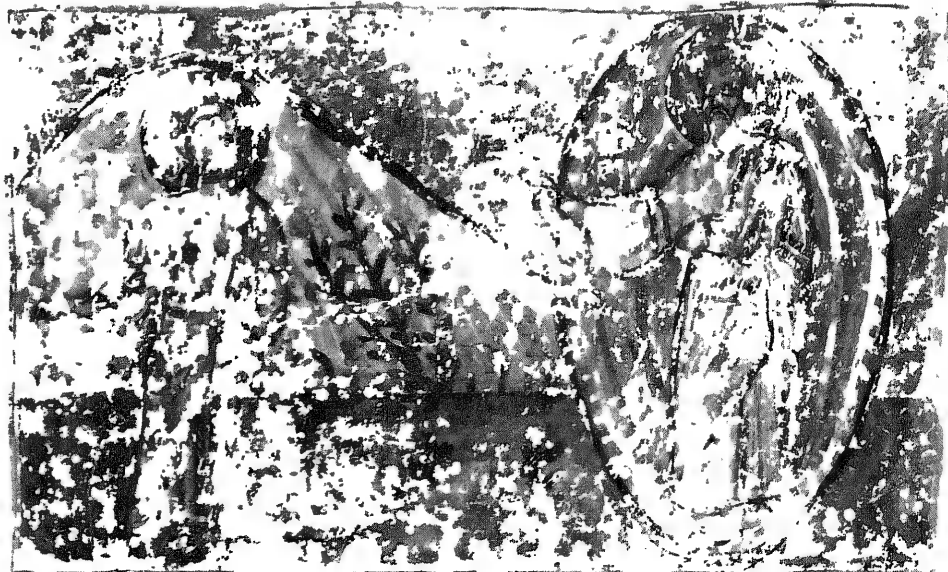
304 3 Barocci 201, f. 212

η· τ· ο· υ· τ· ο· s· ο· κ· ρ· υ· α· τ· ω· μ· α· s· ο· u· λ· ε· n·



η· τ· ο· υ· τ· ο· s· ο· κ· ρ· υ· α· τ· ω· μ· α· s· ο· u· λ· ε· n·

305 3 Barocci 201, f. 214v



306 3 Barocci 201. f. 215



307 3 Barocci 201. f. 216



308 3 Barocci 201. f. 217



309 3 Barocci 201, f. 218 oben



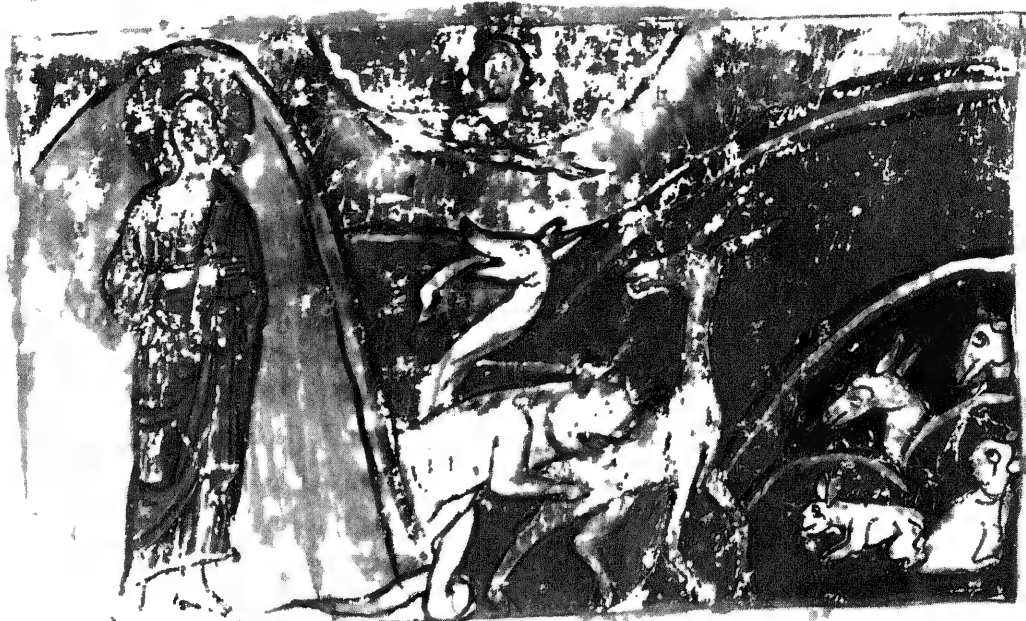
310 3 Barocci 201, f. 218 unten



311 3 Barocci 201, f. 219



312 3 Barocci 201. f. 220v



313 3 Barocci 201. f. 221



314 3 Barocci 201. f. 221v



315 3 Barocci 201, f. 222r



316 3 Barocci 201, f. 224 oben



317 3 Barocci 201, f. 224 unten



318 3 Barocci 201, f. 224v



319 3 Barocci 201, f. 225



320 3 Barocci 201, f. 225v



321 3 Barocci 201, f. 226



Εἰς τὴν πόλιν ἔρχεται ὁ Χριστὸς καὶ τὸν ἄνθρωπον ἔκστατον ἔχει· ὁ Χριστὸς ἔκστατον ἔχει.

322 3 Barocci 201, f. 226^v



323 3 Barocci 201, f. 227^v



324 3 Barocci 201, f. 228v



325 3 Barocci 201, f. 229



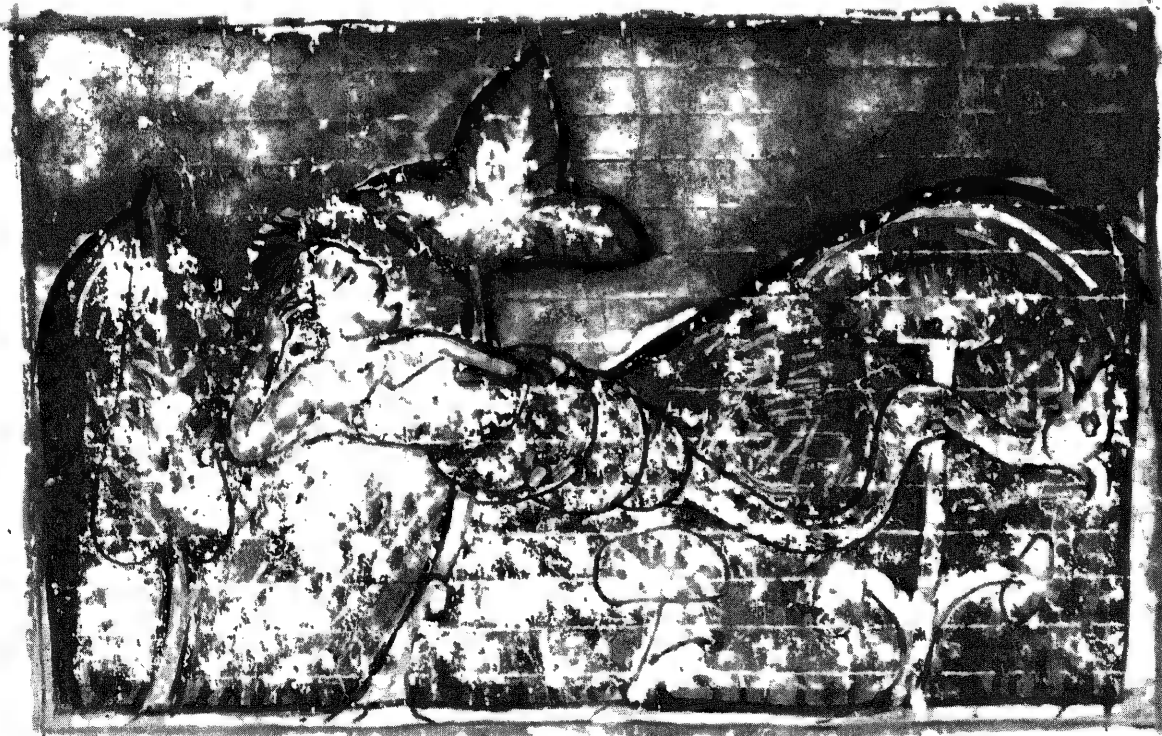
326 3 Barocci 201, f. 229v

δια τοῦτο λέγεται ἀρχὴ πολλὰ αὐτοῦ κῦτῳ ἐν τῷ σχ. κόσμῳ διὰ χρονοτίμωμους.



δὲ σὺ μὲν ποιεῖς πρὸς τοὺς ἀνθρώπους αὐτοῦ, ἵνα δὲ γὰρ ἀπὸ τοῦ
πολλοῦ γόμμεν τοὺς καὶ τὸν γόμμεν τοῦ θῦ ἀνθρώπου ἀκαταπαύστως ἀεὶ
ἐν τῷ κόσμῳ.

327 3 Barocci 201, f. 230v



παρὰ πάντας τοὺς οὐρανούς, ἀλλὰ καὶ ἐν τῷ κόσμῳ διὰ χρονοτίμωμους
ἐν τῷ κόσμῳ.

328 3 Barocci 201, f. 231



ἄνθρωποι τοῦ οὐρανοῦ καὶ τῆς γῆς καὶ διασφύρει τὸ θεῖον χάρισμα κατεπιτίλ-
 λει ἐν αὐτοῖς - λευκαῖς καὶ διὰ τὸν χιτῶνα τοῦ ἐν ἑαυτοῖς ἐν χρυσοῖς

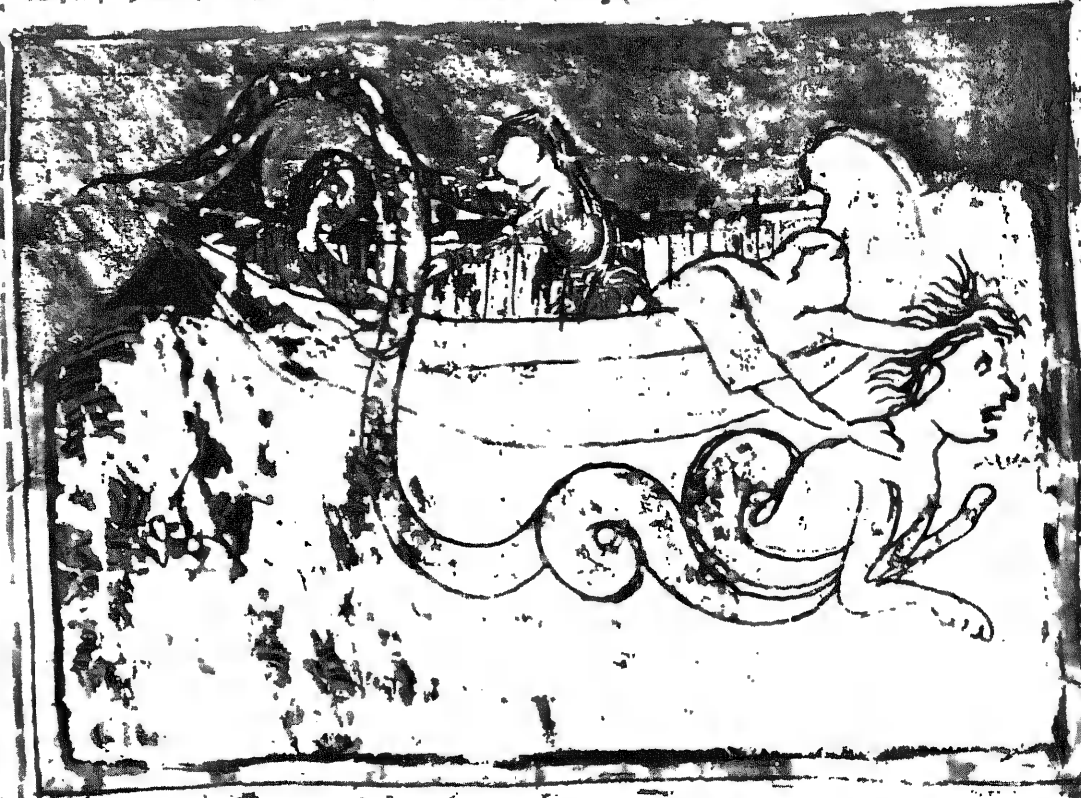
329 3 Barocci 201, f. 231v



δὲ λοιποὶ λευκαῖς ἀνδράσι τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν ἐκείνην τὰ πάντα

330 3 Barocci 201, f. 232

II. $\alpha\beta\gamma\delta\epsilon\zeta\eta\theta\iota\kappa\lambda\mu\nu\pi\rho\sigma\tau\upsilon\phi\chi\psi\omega\pi\alpha\beta\gamma\delta\epsilon\zeta\eta\theta\iota\kappa\lambda\mu\nu\pi\rho\sigma\tau\upsilon\phi\chi\psi\omega$
 $\alpha\beta\gamma\delta\epsilon\zeta\eta\theta\iota\kappa\lambda\mu\nu\pi\rho\sigma\tau\upsilon\phi\chi\psi\omega\pi\alpha\beta\gamma\delta\epsilon\zeta\eta\theta\iota\kappa\lambda\mu\nu\pi\rho\sigma\tau\upsilon\phi\chi\psi\omega$



ὅσα, ἢ φοβήσιν ἡ περὶ αὐτῶν ἐλπίς, ἢ ἀποδοῦναι ἔχουσιν τοῦτο εἰς τὸν φθισιμόν, ὅτι παρὰ

333 3 Barocci 201. f. 233^v



πειδὴ φησὶ δὲ αὐτοὺς εἶναι πάντα καὶ ἀποτίσθαι, οὐκ ἔτι μακροτέρως
δι' αὐτὸν συλλαβίσαντα σὴν ὑπόμνησιν· ἀλλ' ἔτι πρὸς ἐλπίσιν καὶ ἀμνησίαν
αὐτοῦ· τῶν μέντοι ἀποδοδόντων τῶν δ' ἀποδοσέων, συμφορὰν οὐκ αἰετοῖς

.134 3 Barocci 201, f. 234^v

στὸ σὸ κ' ἔστ' ὡς τὴν ἑλπίδα



...τὸ τοῦ οὐδὲν ἄλλο ἔστιν ὡς τὸ πρῶτον... τοῦ οὐδὲν ἄλλο ἔστιν ὡς τὸ πρῶτον...

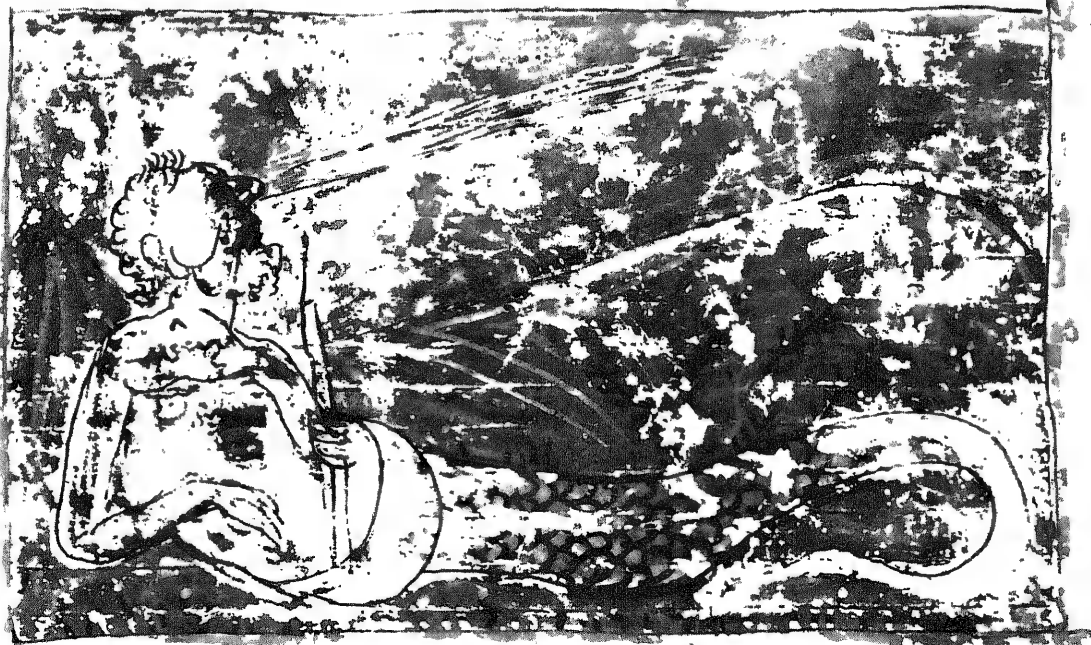
335 3 Barocci 201, f. 235



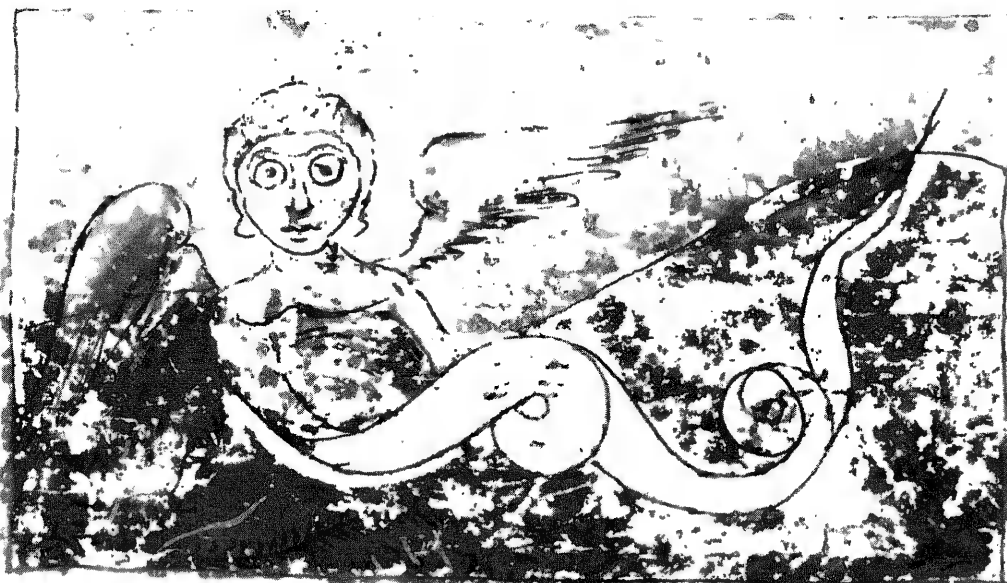
...τὸ τοῦ οὐδὲν ἄλλο ἔστιν ὡς τὸ πρῶτον... τοῦ οὐδὲν ἄλλο ἔστιν ὡς τὸ πρῶτον...

336 3 Barocci 201, f. 236

[illegible]



339 3 Barocci 201, f. 237'



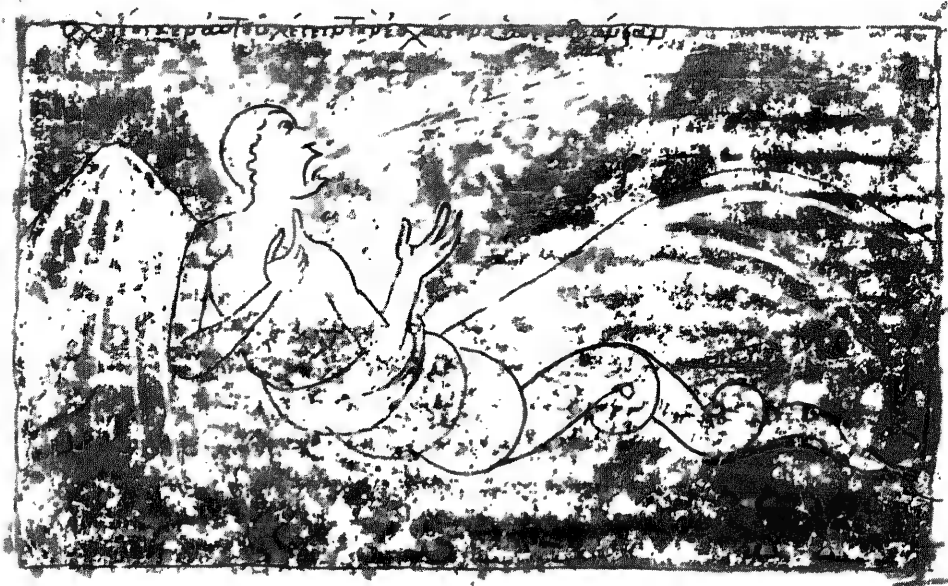
340 3 Barocci 201, f. 238 oben



341 3 Barocci 201, f. 238 unten



342 3 Barocci 201, f. 238v



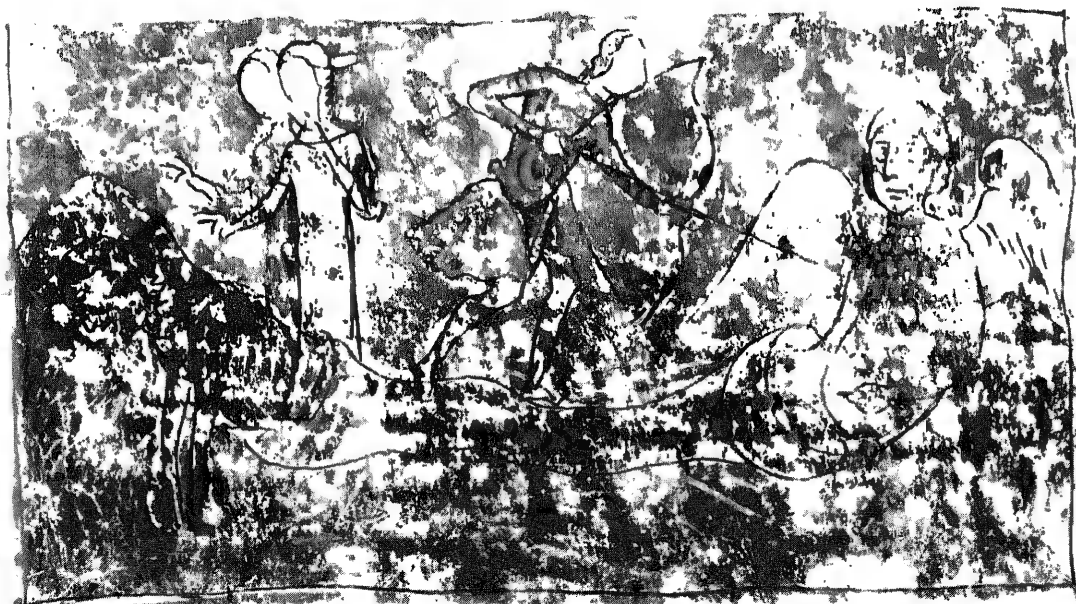
343 3 Barocci 201, f. 239



344 3 Barocci 201, f. 240 oben

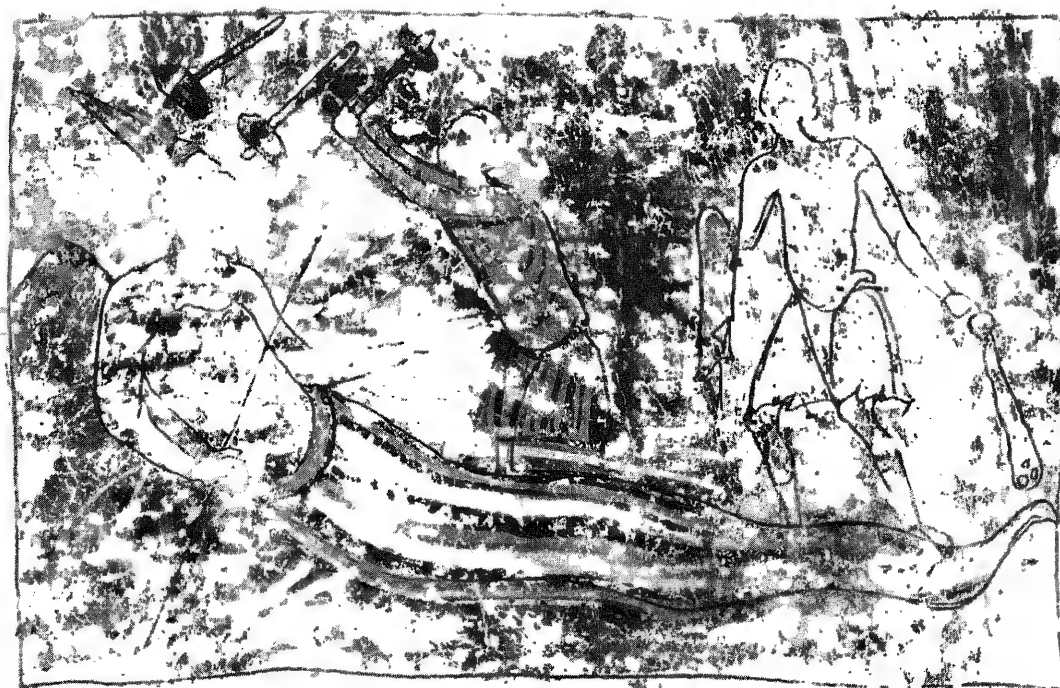


345 3 Barocci 201, f. 240 unten



ΔΕΝ ΙΔΕΝ ΤΙ ΤΕΘΟΣ ΚΕΙΤΟΝ Ο ΑΥΤΑΡ ΜΑΡ· ΑΓΚΕ ΑΥΤΕΙ, ΟΔΕ ΚΑΙ ΕΓΩ ΣΠΕΡ ΑΝΑΡΕΙ ΑΥΤΟΥ

346 3 Barocci 201, f. 240° oben

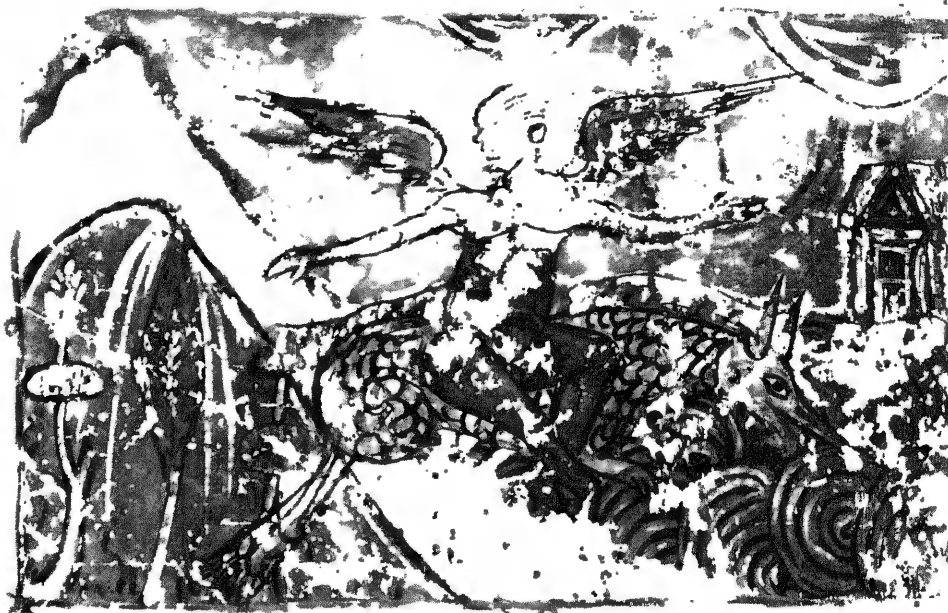


347 3 Barocci 201, f. 240° unten



δὲ θεοὶ δὲ τῶν σιδηρῶν τετονός· ἐπὶ γὰρ τοῖς ὁδωκροῖς καὶ ἀνωμαλοῖς
τοῖς ῥασιμὶς ἀνὰ πᾶσι πάντας· καὶ βῶν δὲ δὴ μενῖναι τὰ ἐν οὐτοῖς

348 3 Barocci 201, f. 241



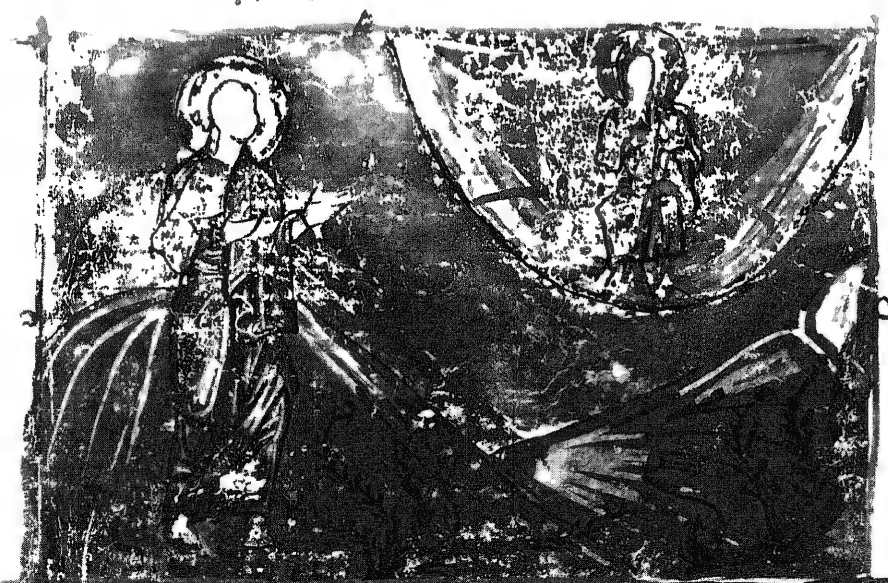
349 3 Barocci 201, f. 241'



350 3 Barocci 201, f. 242



351 3 Barocci 201, f. 242



352 3 Barocci 201, f. 243



353 3 Barocci 201, f. 244



μ. π. τ. ο. κ. α. ε. π. ω. σ. η. μ. α. λ. κ. υ. λ. α. σ. μ. ε. ν. κ. α. ι. θ. ε. ο. δ. ο. τ. ι. ω. μ. ο. λ. ο. κ. α. ι. τ. α. σ. η. μ. σ. ι. μ. μ. α.
 χ. ο. δ. ε. α. ν. α. φ. ο. ρ. η. μ. ο. ξ. ε. δ. ο. κ. η. μ. ο. δ. ε. α. ν. α. π. α. ρ. α. ν. τ. ι. γ. ρ. α. φ. ι. τ. ι. μ. ο. σ. κ. α. ι. τ. ο. λ. η. ο. σ.

354 3 Barocci 201, f. 244



α. ι. α. ι. τ. ι. μ. κ. ο. ι. σ. κ. ο. μ. ο. λ. η. η. μ. τ. ο. ι. σ. γ. λ. ο. ι. σ. ο. κ. α. ι. ω. σ. η. μ. ε. λ. θ. α. μ. α. τ. ο. υ. μ. ε. η. γ. α. ρ.
 ε. ρ. ο. χ. η. μ. α. λ. ω. φ. α. ι. μ. ε. ι. τ. ο. τ. ι. σ. δ. ι. κ. α. ι. ω. μ. κ. α. τ. ο. λ. α. χ. ε. ι. μ. κ. α. ι. τ. η. ν. θ. α. μ. α. τ. ι. θ. ο. ρ. η. μ.

355 3 Barocci 201, f. 245



Ἰὼν ἡγεμὼν· καὶ ὁ πρῶτος αὐτοῦ ὁ θῆς τὸ πορρῶσ· ἡ ἰὼν ἡγεμὼν·

356 3 Barocci 201, f. 245v



Ἰὼν ἡγεμὼν· ὁ πρῶτος αὐτοῦ ὁ θῆς τὸ πορρῶσ· ἡ ἰὼν ἡγεμὼν·

357 3 Barocci 201, f. 246



... τοῖς καὶ ἀνέλαβας τοὺς παῖδας τοὺς σὺν βρεῖσιν ἰδοὺς· ἰδοὺς αὖτε τὸν ἄνθρωπον
 τὸν ἐκείνου· καὶ ἰδοὺς αὖτε τὸν ἄνθρωπον τὸν ἐκείνου· καὶ ἰδοὺς αὖτε τὸν ἄνθρωπον τὸν ἐκείνου·

358 3 Barocci 201, f. 246v

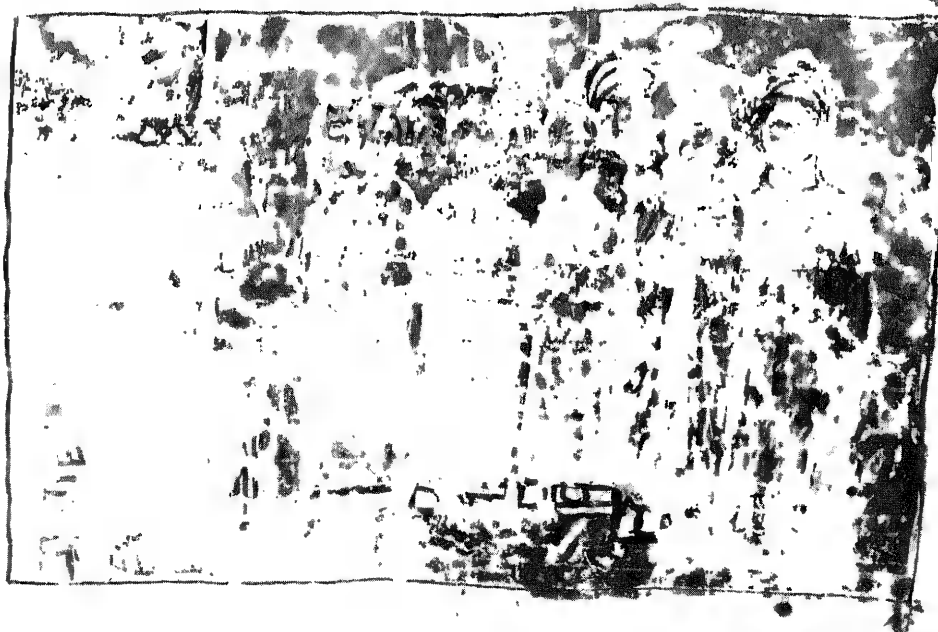


ἀσμέν· ἀμνάδας φέροισιν ὥσθ' ἄωχ' ἀμίσωσ' αὐτοὺς ἐργάμενοι·

359 3 Barocci 201, f. 247v



360 3 Barocci 201, f. 248 oben



361 3 Barocci 201, f. 248 unten



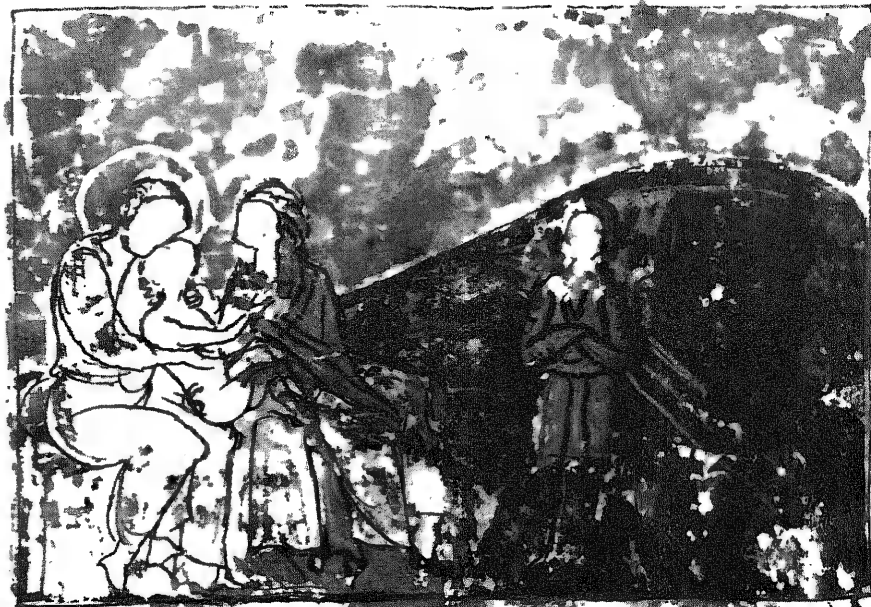
ΟΙ ΤΡΕΙΣ ΚΑΡΕΝΟΙ ΒΕΙΣ ΕΝ ΔΕΙΞΗ ΤΩΝ ΕΡΕΙΩΝ ΟΙΣ ΑΝΤΙΣΤΑΝΤΙ ΑΝΤΙΣΤΑΝΤΙ ΑΝΤΙΣΤΑΝΤΙ

362 3 Barocci 201, f. 249



οὐ πείνημα τοῖς ἀδελφοῖς ἰσχυροῦς ὅτι πάντες οὐκ οἰκτιροῦνται
 σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν. —
 ἡ γὰρ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 οἰκτιροῦνται οὐκ ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 αὐτοὶ οἰκτιροῦνται οὐκ ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 δικαίου. Πάντες οὐκ ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 πάλιν, μετὰ τὴν περὶ τὴν ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς
 τὸν ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς ἐκλήροδοτα σὺν τῇ ἀφ' ἧς

36.3 3 Barocci 201, f. 250



366 3 Barocci 201. f. 251v



367 3 Barocci 201. f. 252



368 3 Barocci 201. f. 252v



369 4 Laud gr. 86, p. 4

Ε, ἀνθρώπου ἰσχυρὰ ἀντιτάξαι ἑαυτὸν

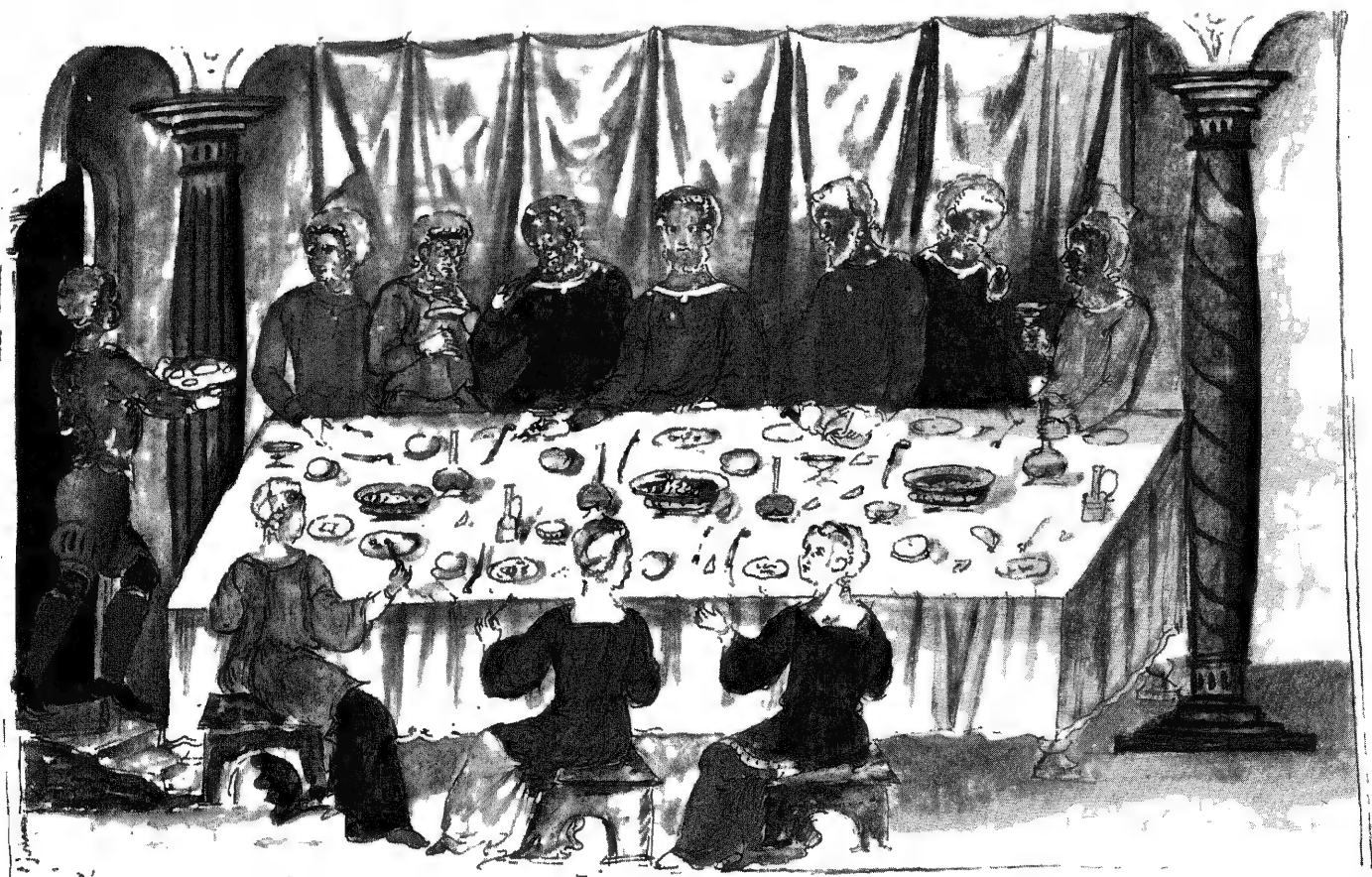


ἐν τῇ πόλει τῇ ἑκκλησίᾳ. καὶ ὁ Χριστὸς ἰσχυρὰ ἀντιτάξαι ἑαυτὸν
ἐν τῇ πόλει τῇ ἑκκλησίᾳ. καὶ ὁ Χριστὸς ἰσχυρὰ ἀντιτάξαι ἑαυτὸν
ἐν τῇ πόλει τῇ ἑκκλησίᾳ. καὶ ὁ Χριστὸς ἰσχυρὰ ἀντιτάξαι ἑαυτὸν
ἐν τῇ πόλει τῇ ἑκκλησίᾳ. καὶ ὁ Χριστὸς ἰσχυρὰ ἀντιτάξαι ἑαυτὸν

370 4 Laud gr. 86, p. 7



371 4 Laud gr. 86. p. 8



372 4 Laud gr. 86. p. 10



373 4 Laud gr. 86, p. 11



374 4 Laud gr. 86, p. 15



375 4 Laud gr. 86, p. 25

ἡμεῖς καὶ οἱ ἄλλοι ἀποστόλοι καὶ οἱ ἄγγελοι
 τοῦ κυρίου ἡμῶν Ἰησοῦ χριστοῦ
 καὶ οἱ ἄγγελοι τοῦ κυρίου ἡμῶν
 Ἰησοῦ χριστοῦ



376 4 Laud gr. 86. p. 26



377 4 Laud gr. 86. p. 27

[illegible]

378 4 Laud gr. 86. p. 28



379 4 Laud gr. 86, p. 30



380 4 Laud gr. 86, p. 32



381 4 Laud gr. 86, p. 33



382 4 Laud gr. 86, p. 36



383 4 Laud gr. 86, p. 40



384 4 Laud gr. 86, p. 46



387 4 Laud gr. 86. p. 56



388 4 Laud gr. 86. p. 60



389 4 Laud gr. 86. p. 63



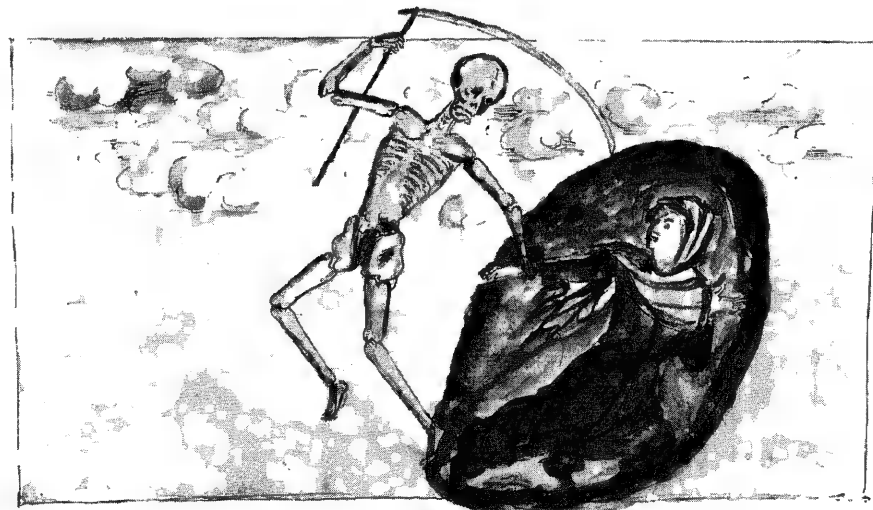
390 4 Laud gr. 86, p. 64



Ο Πάπας εὐχαρίστησε τοὺς ἀρχιερεῖς καὶ τοὺς ἱερεῖς καὶ τοὺς λαοὺς καὶ τοὺς κληρικούς.

391 4 Laud gr. 86, p. 67

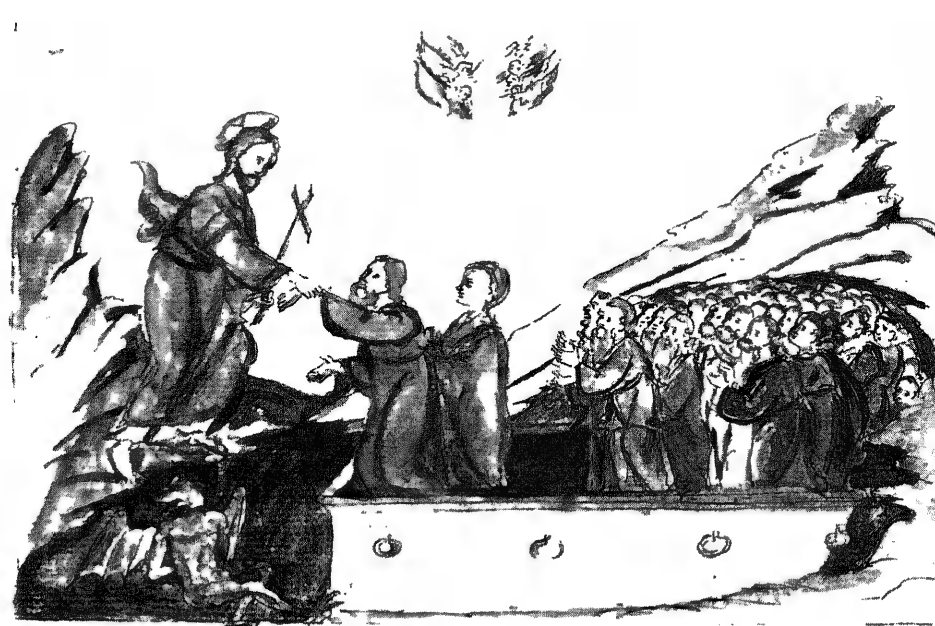
... η 4/1/05 ενχαλοποιώ ενώ στο 7ο, η 4/2/05 παραίτη.



392 4 Laud gr. 86, p. 69



393 4 Laud gr. 86. p. 70



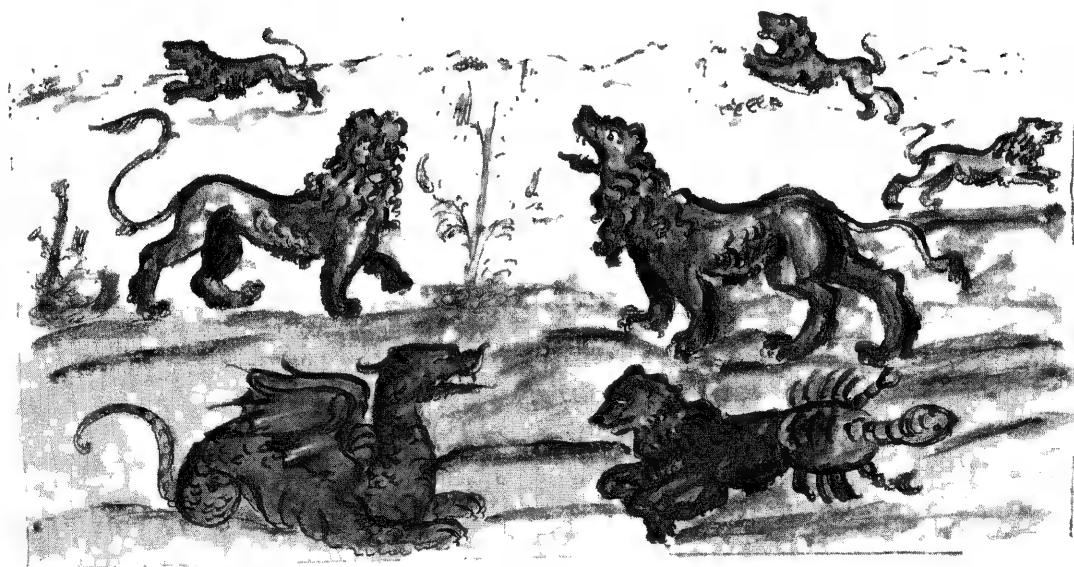
394 4 Laud gr. 86. p. 72



395 4 Laud gr. 86. p. 76



396 4 Laud gr. 86, p. 79



397 4 Laud gr. 86, p. 87



398 4 Laud gr. 86, p. 89



399 4 Laud gr. 86. p. 95



400 4 Laud gr. 86. p. 96



401 4 Laud gr. 86. p. 97



402 4 Laud gr. 86, p. 100



403 4 Laud gr. 86, p. 101



404 4 Laud gr. 86, p. 103



405 4 Laud gr. 86, p. 105



406 4 Laud gr. 86, p. 110



407 4 Laud gr. 86, p. 117



408 4 Laud gr. 86, p. 119



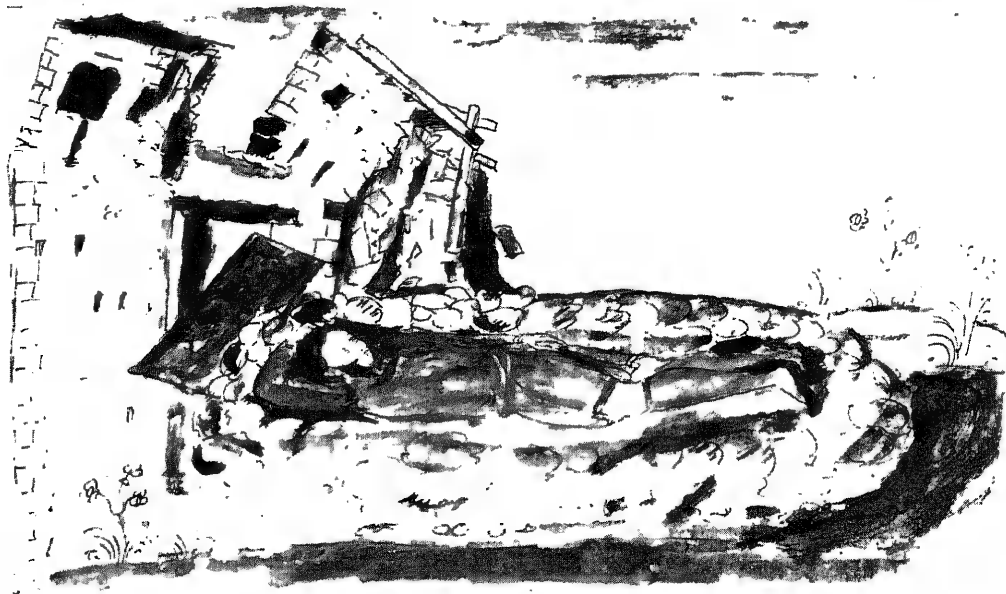
409 4 Laud gr. 86, p. 120



410 4 Laud gr. 86, p. 124



411 4 Laud gr. 86, p. 128



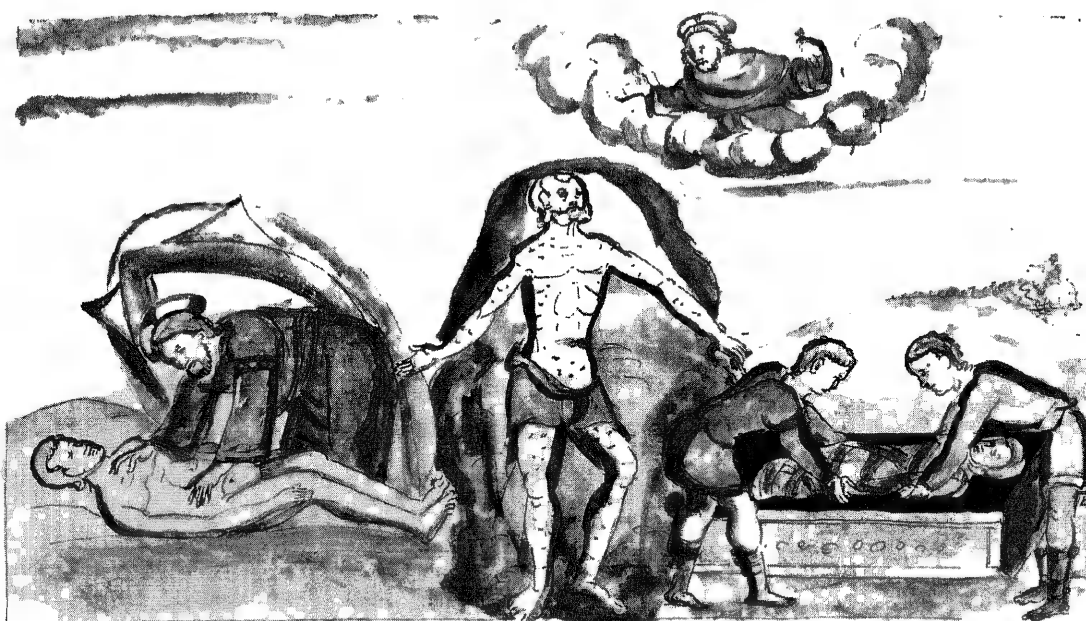
412 4 Laud gr. 86, p. 129



413 4 Laud gr. 86, p. 138



414 4 Laud gr. 86, p. 143



415 4 Laud gr. 86, p. 148



416 4 Laud gr. 86, p. 152



417 4 Laud gr. 86, p. 153



418 4 Laud gr. 86, p. 158



419 4 Laud gr. 86, p. 164

Καθίστων βασιλεὺς τῶν θρόνων, καὶ παρὰ θεῶν ὁρῶντων ὁρῶντων, ἀγαθὸ
 ἔργον ἔργον ἀγαθῶν· διὰ τὸν αἰῶνα, ναὶ τὰς γενεαί·

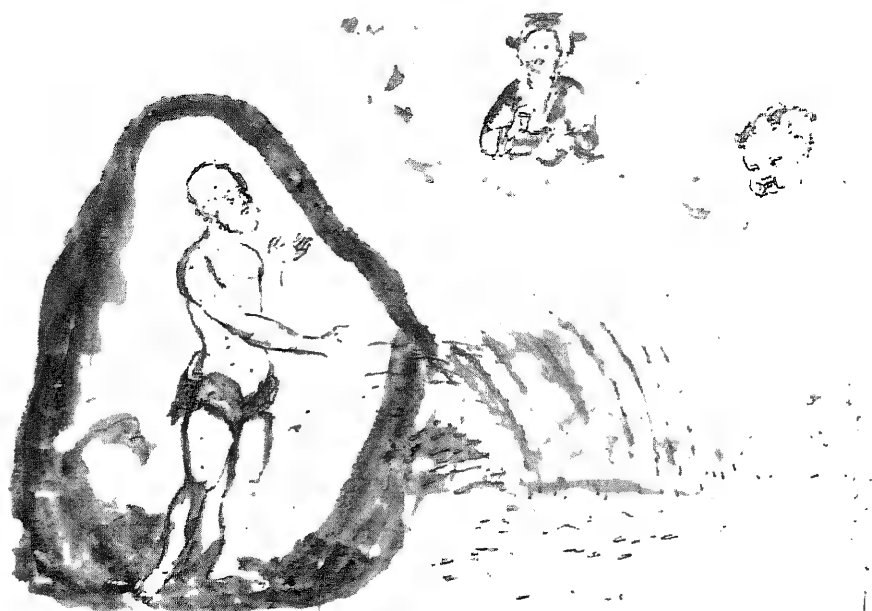


420 4 Laud gr. 86, p. 166



ὅτι ὁ θεὸς ἰσχυρὸς ἐστὶν· ἀγαθὸν αὐτῷ· καὶ ὁ θεὸς ἰσχυρὸς ἐστὶν ἐν τοῖς ἁγίοις,
 διὰ τὸν αἰῶνα· ναὶ τὰς γενεαί· διὰ τὸν αἰῶνα, ναὶ τὰς γενεαί· διὰ τὸν αἰῶνα, ναὶ τὰς γενεαί·

421 4 Laud gr. 86, p. 167



422 4 Laud gr. 86. p. 175



423 4 Laud gr. 86. p. 180



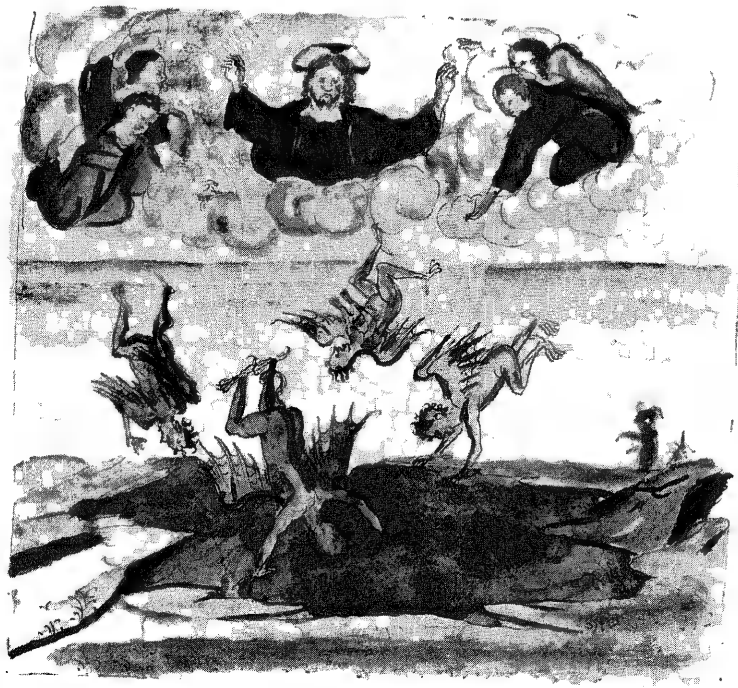
424 4 Laud gr. 86. p. 182



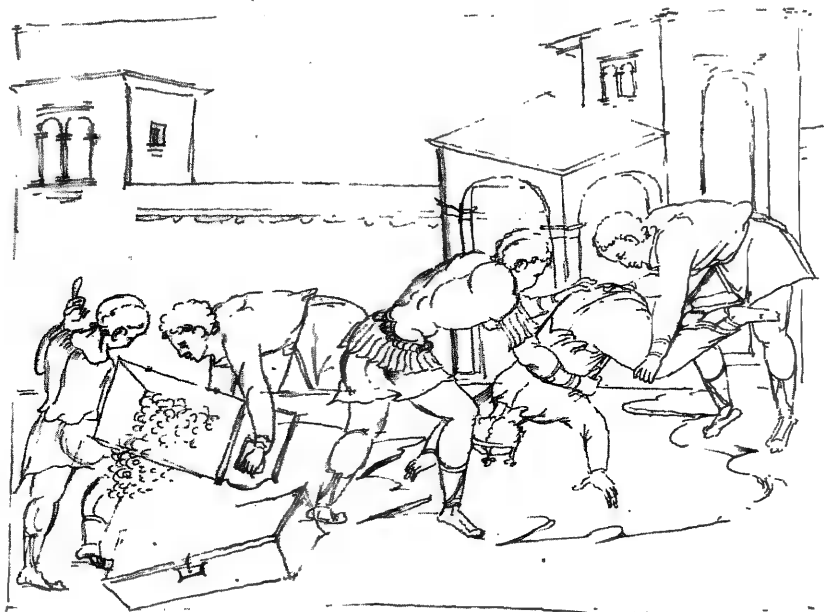
425 4 Laud gr. 86, p. 190



426 4 Laud gr. 86, p. 191



427 4 Laud gr. 86, p. 192



428 4 Laud gr. 86. p. 194



429 4 Laud gr. 86. p. 196 oben



430 4 Laud gr. 86. p. 196 unten



431 4 Laud gr. 86, p. 201



432 4 Laud gr. 86, p. 202



433 4 Laud gr. 86, p. 204



434 4 Laud gr. 86. p. 209



435 4 Laud gr. 86. p. 211



436 4 Laud gr. 86, p. 213



437 4 Laud gr. 86, p. 215



438 4 Laud gr. 86. p. 223



439 4 Laud gr. 86. p. 225



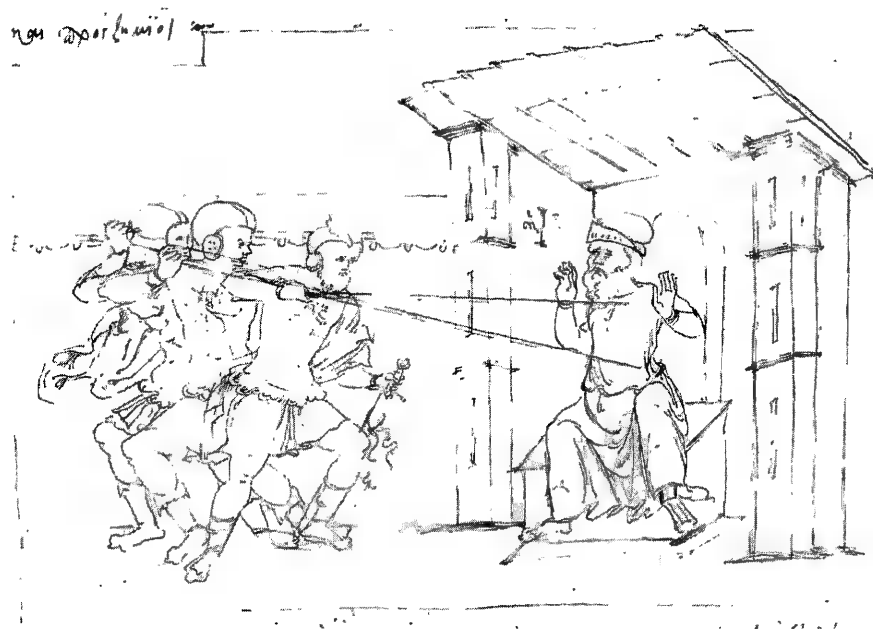
440 4 Laud gr. 86. p. 228



441 4 Laud gr. 86, p. 230



442 4 Laud gr. 86, p. 231



443 4 Laud gr. 86, p. 235



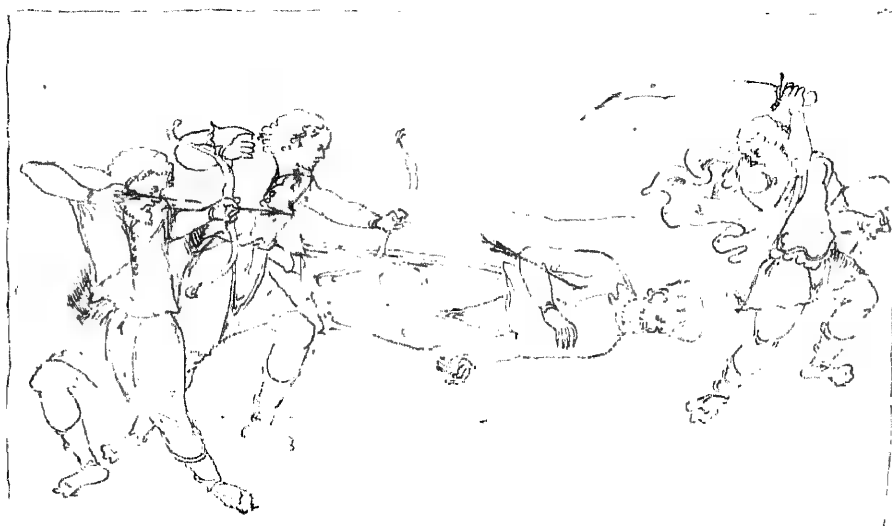
444 4 Laud gr. 86, p. 236



445 4 Laud gr. 86, p. 237



446 4 Laud gr. 86, p. 238



447 4 Laud gr. 86, p. 239



448 4 Laud gr. 86, p. 240



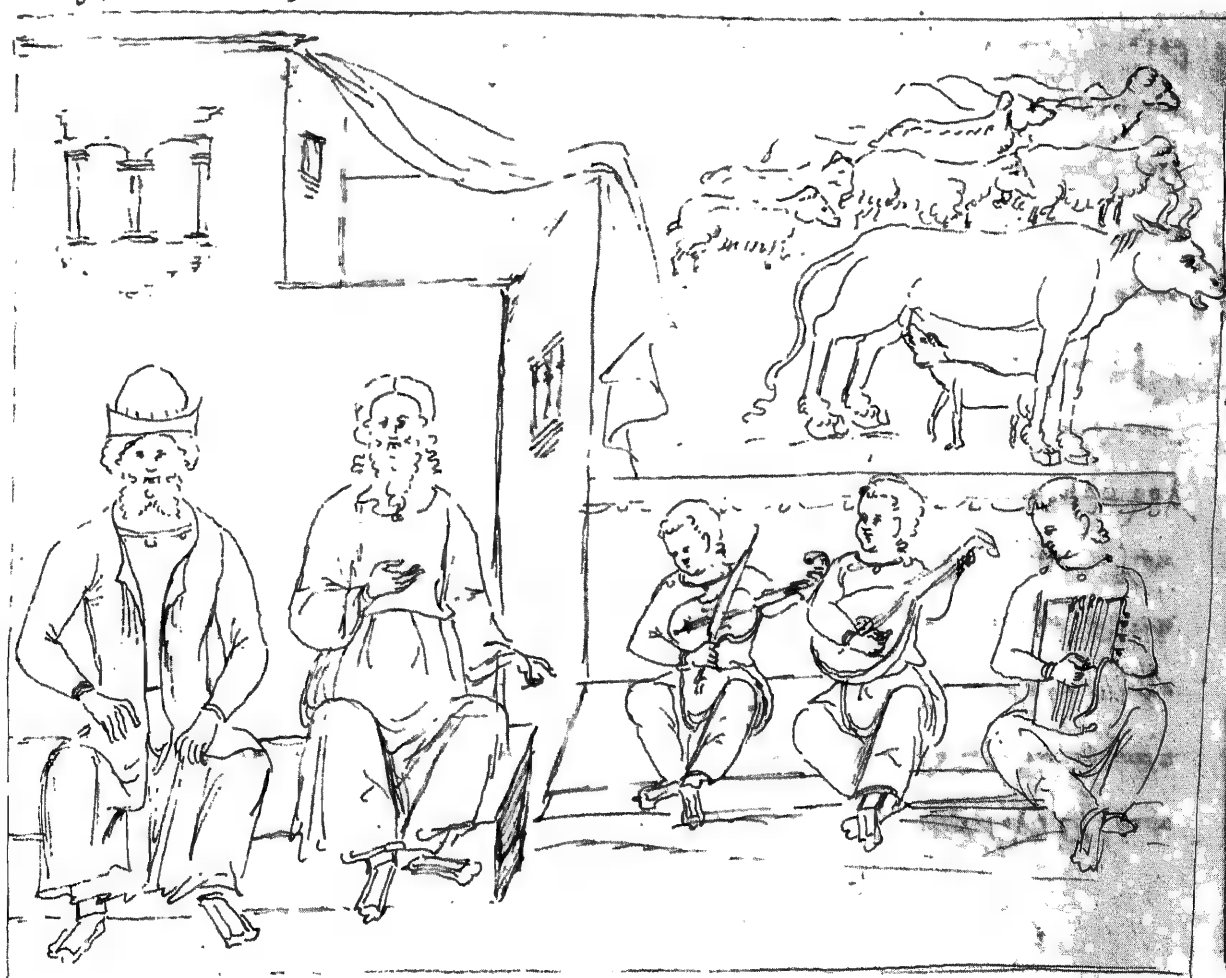
449 4 Laud gr. 86, p. 241



450 4 Laud gr. 86, p. 242



451 4 Laud gr. 86, p. 244



452 4 Laud gr. 86, p. 246



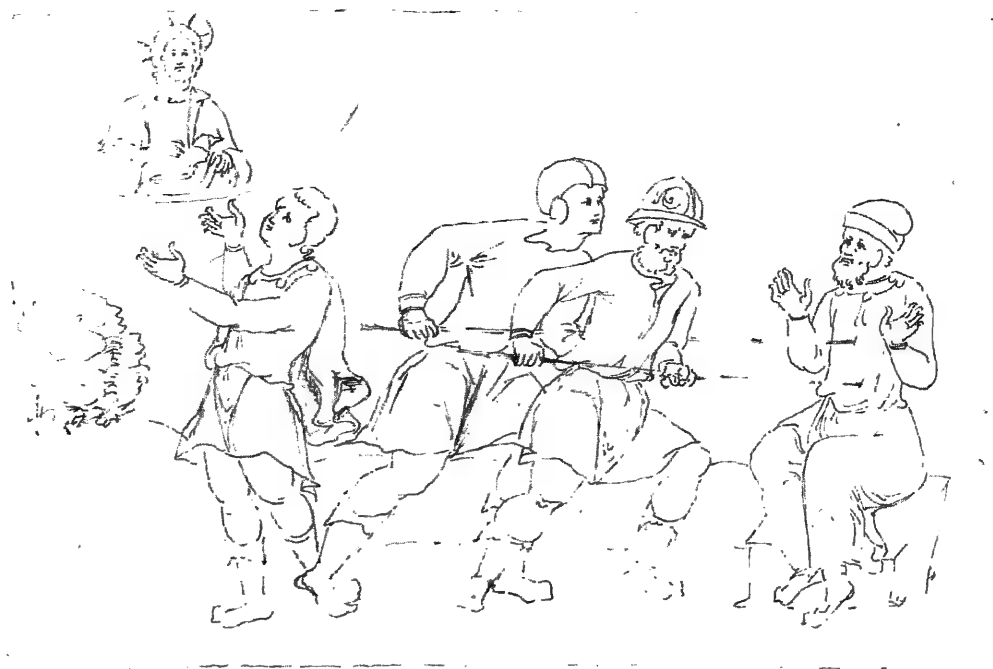
453 4 Laud gr. 86, p. 247



454 4 Laud gr. 86, p. 249



455 4 Laud gr. 86, p. 250



456 4 Laud gr. 86, p. 251



457 4 Laud gr. 86, p. 252



458 4 Laud gr. 86, p. 257



459 4 Laud gr. 86, p. 258



460 4 Laud gr. 86, p. 260



461 4 Laud gr. 86, p. 262



462 4 Laud gr. 86. p. 270



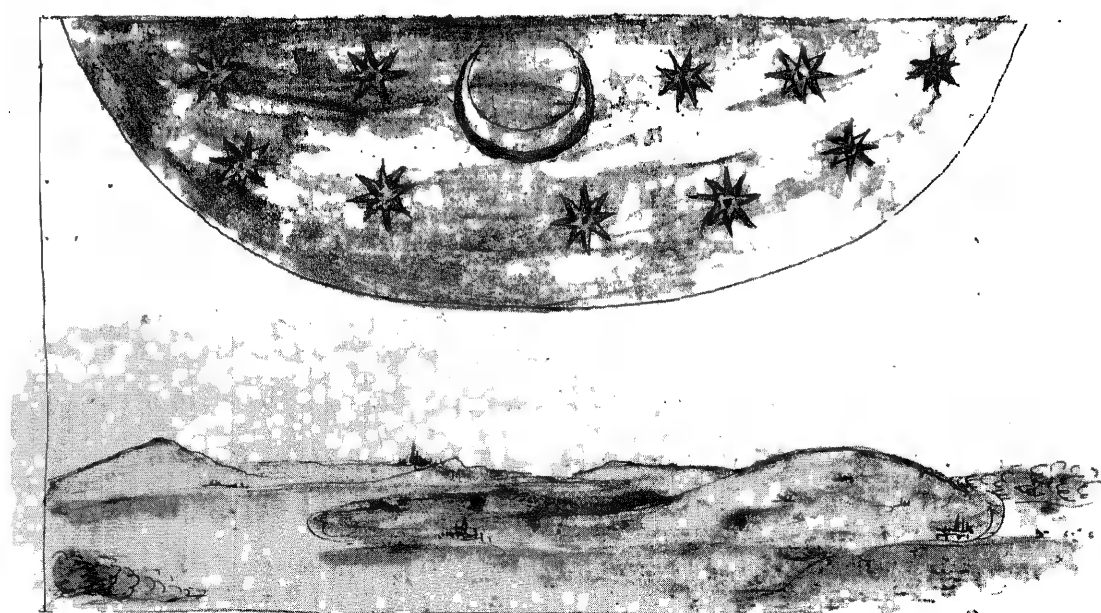
463 4 Laud gr. 86. p. 271



464 4 Laud gr. 86. p. 272



465 4 Laud gr. 86, p. 274



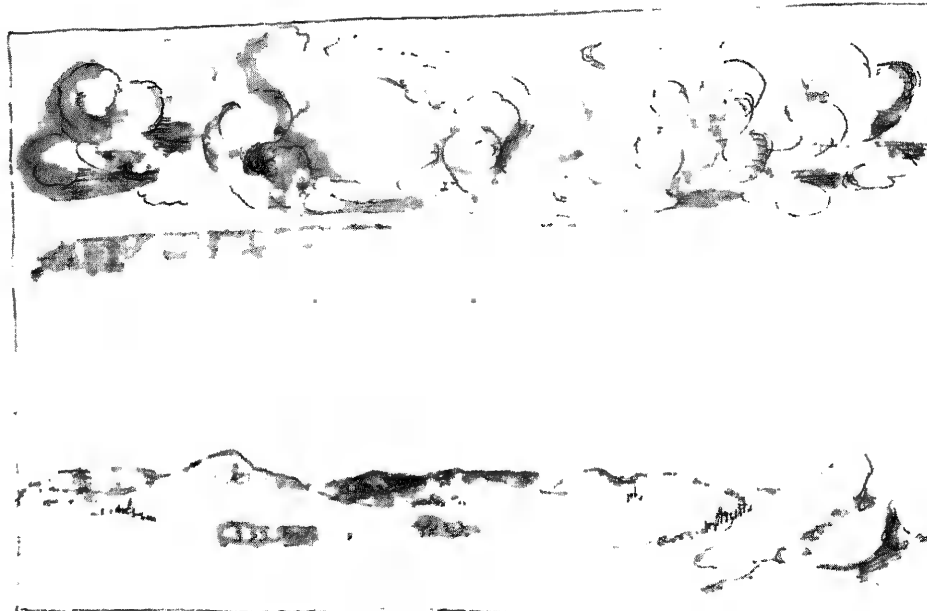
466 4 Laud gr. 86, p. 280



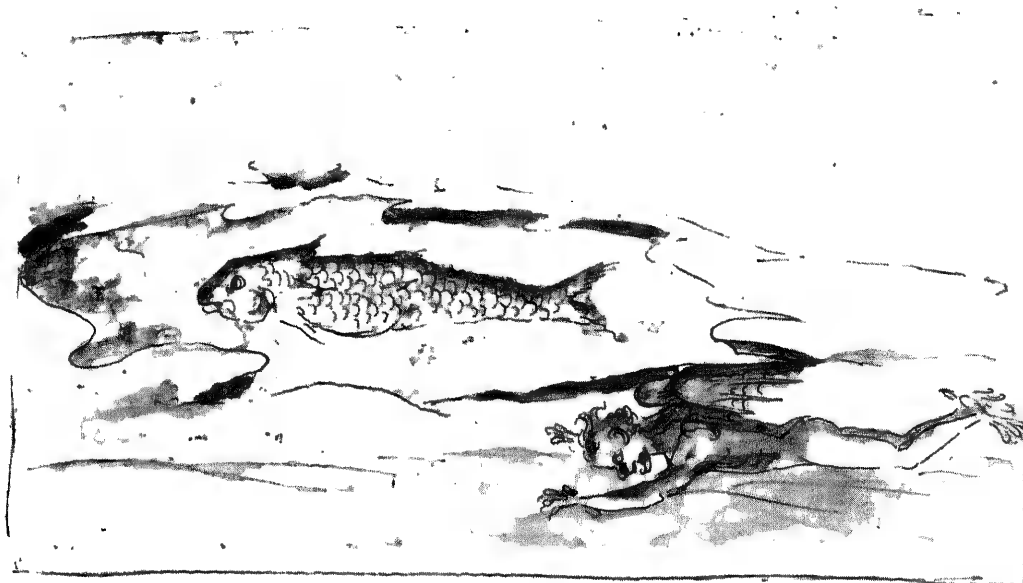
467 4 Laud gr. 86, p. 282



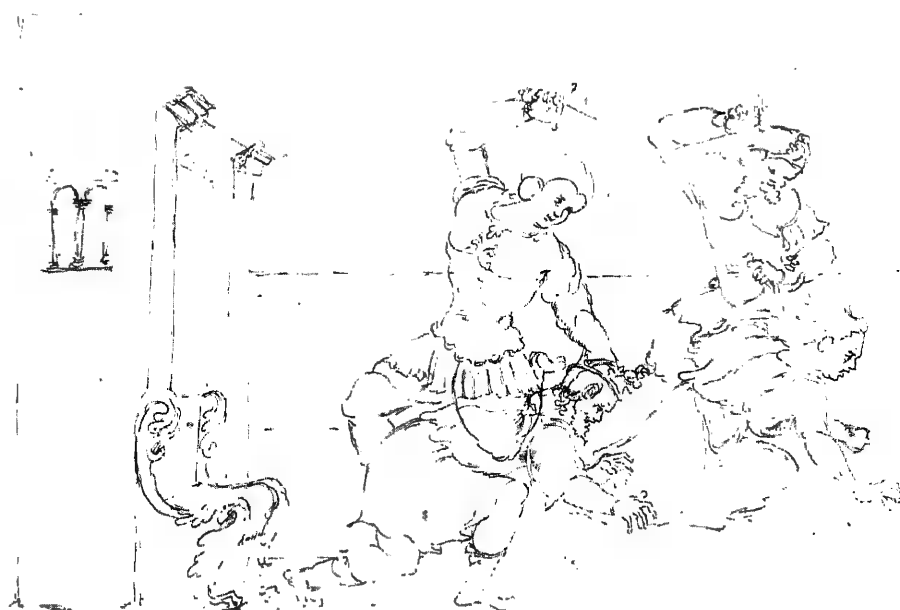
468 4 Laud gr. 86, p. 283



469 4 Laud gr. 86, p. 284



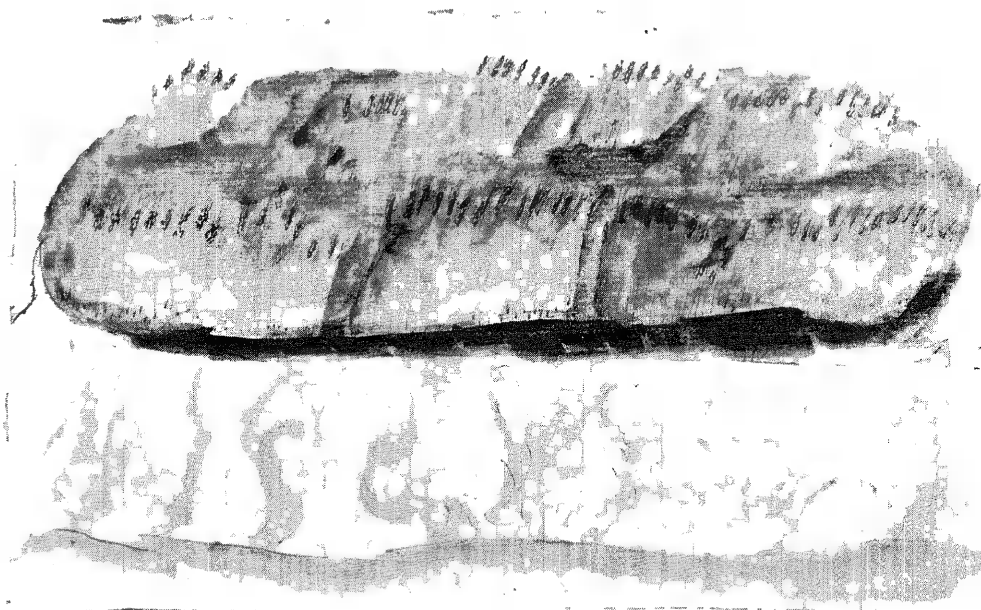
470 4 Laud gr. 86, p. 286



471 4 Laud gr. 86. p. 290



472 4 Laud gr. 86. p. 291



473 4 Laud gr. 86. p. 295



474 4 Laud gr. 86. p. 296



475 4 Laud gr. 86. p. 307



476 4 Laud gr. 86. p. 309



477 4 Laud gr. 86, p. 310



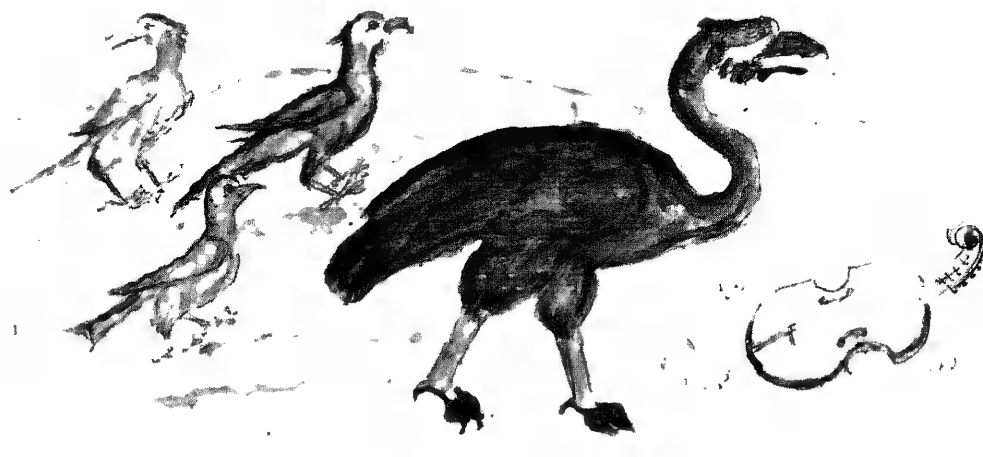
478 4 Laud gr. 86, p. 315



479 4 Laud gr. 86, p. 316



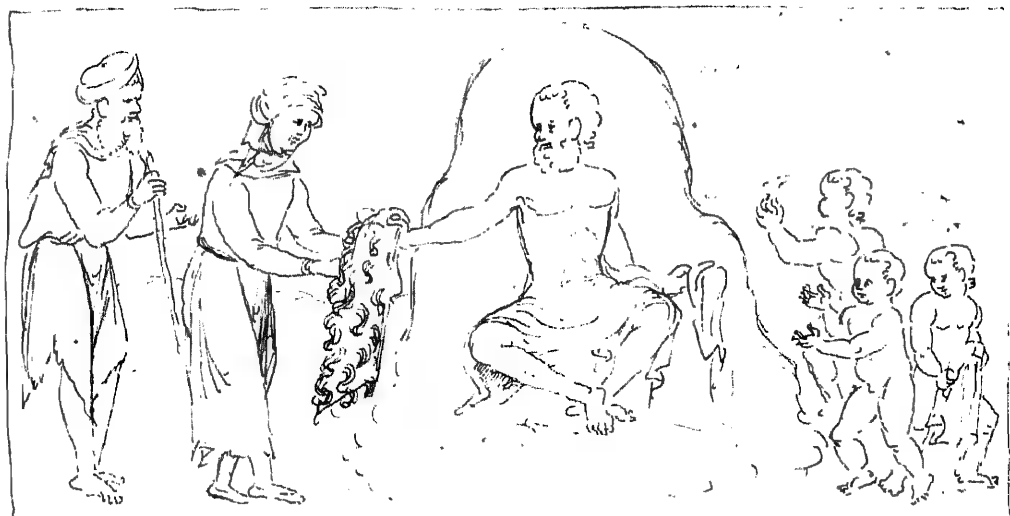
480 4 Laud gr. 86. p. 318



481 4 Laud gr. 86. p. 320



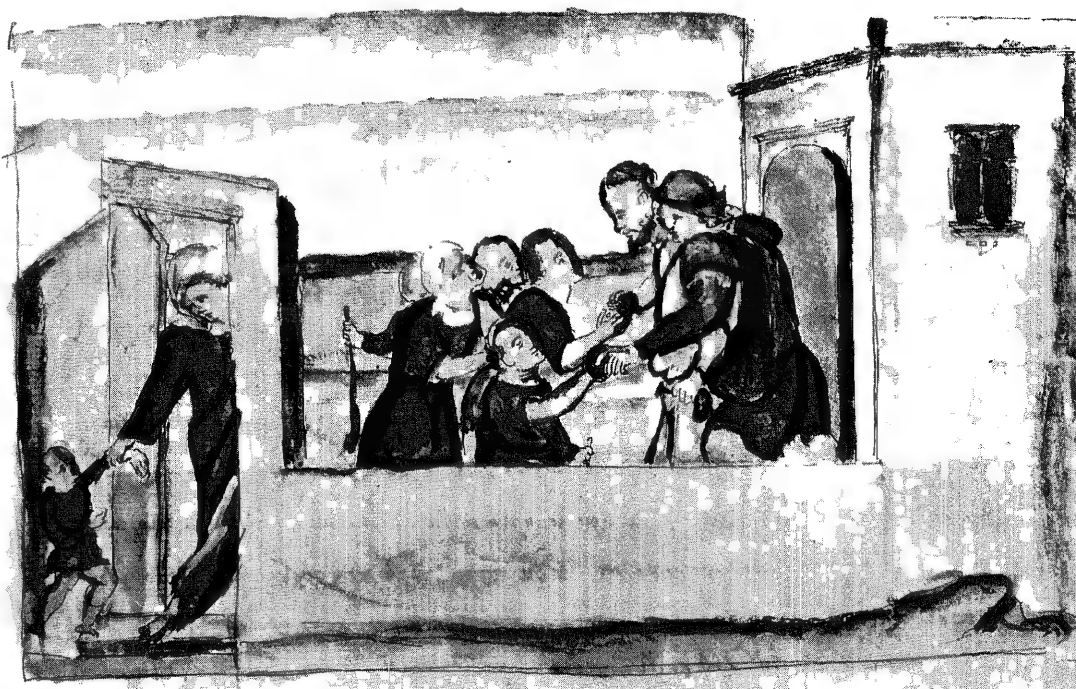
482 4 Laud gr. 86. p. 323



483 4 Laud gr. 86, p. 326



484 4 Laud gr. 86, p. 329



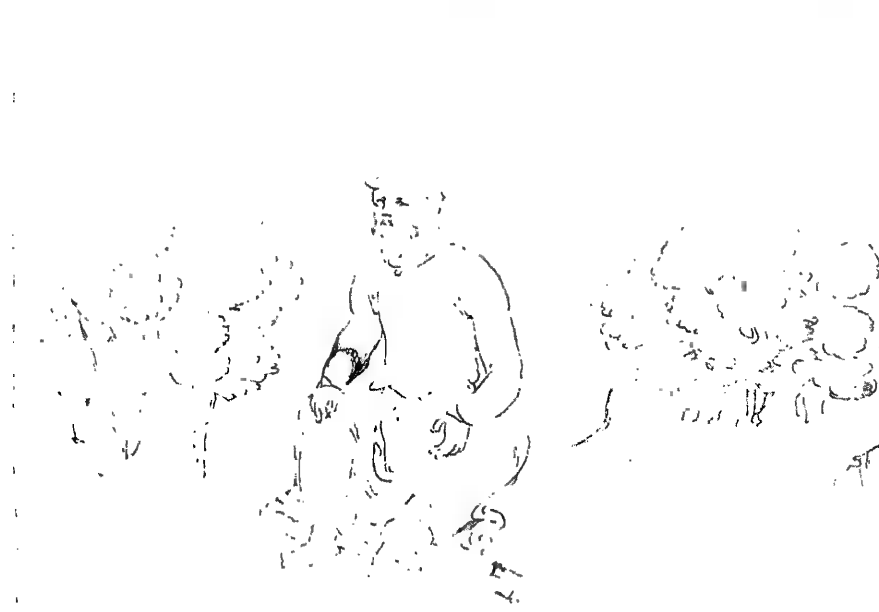
485 4 Laud gr. 86, p. 332



486 4 Laud gr. 86. p. 337



487 4 Laud gr. 86. p. 342



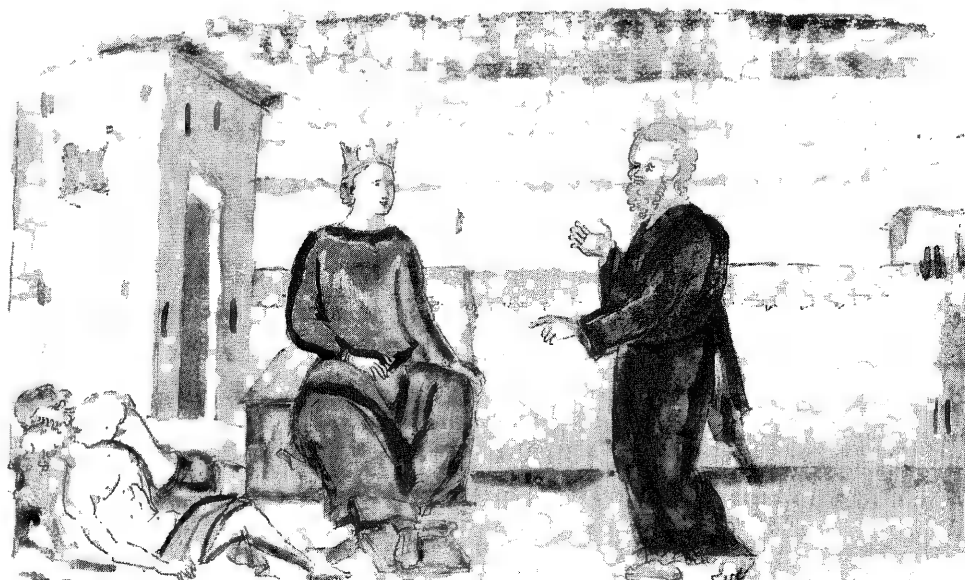
488 4 Laud gr. 86. p. 344



489 4 Laud gr. 86, p. 345



490 4 Laud gr. 86, p. 347



491 4 Laud gr. 86, p. 352



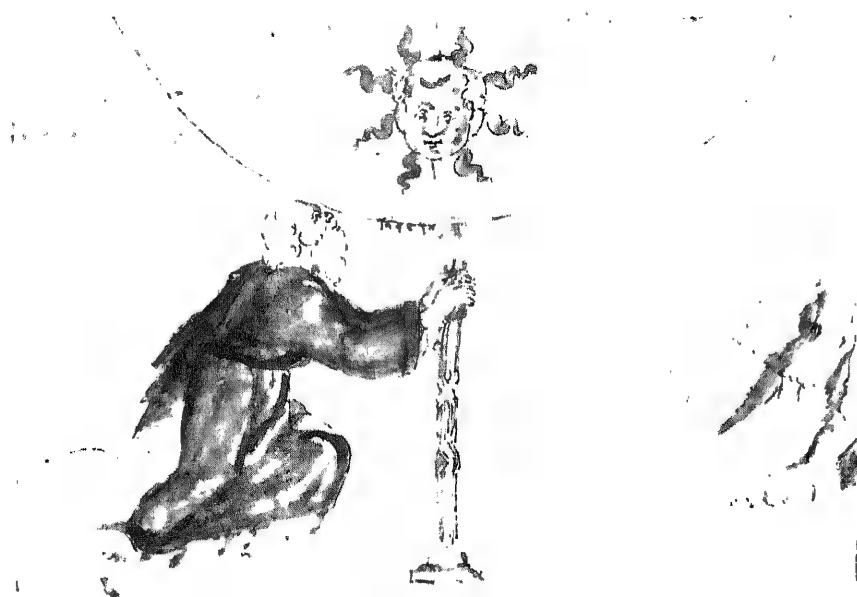
492 4 Laud gr. 86, p. 353



493 4 Laud gr. 86, p. 361



494 4 Laud gr. 86, p. 363



495 4 Laud gr. 86, p. 366



496 4 Laud gr. 86, p. 368



497 4 Laud gr. 86, p. 372



498 4 Laud gr. 86. p. 376



499 4 Laud gr. 86. p. 378 oben



500 4 Laud gr. 86. p. 378 unten

Εἰς τὴν ἡμέραν αὐτὴν ὁ κύριος ἔρχεται ἐκ τῆς οὐρανῶν καὶ ἡ γῆ καὶ ἡ θάλασσα καὶ ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ βῆματα αὐτῶν
 ὁ κύριος ἔρχεται ἐκ τῆς οὐρανῶν καὶ ἡ γῆ καὶ ἡ θάλασσα καὶ ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ βῆματα αὐτῶν



501 4 Laud gr. 86, p. 379

Ἡ ἡμέρα αὐτὴ ὁ κύριος ἔρχεται ἐκ τῆς οὐρανῶν καὶ ἡ γῆ καὶ ἡ θάλασσα καὶ ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ βῆματα αὐτῶν



Ὁ κύριος ἔρχεται ἐκ τῆς οὐρανῶν καὶ ἡ γῆ καὶ ἡ θάλασσα καὶ ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ βῆματα αὐτῶν
 ὁ κύριος ἔρχεται ἐκ τῆς οὐρανῶν καὶ ἡ γῆ καὶ ἡ θάλασσα καὶ ὁ ἄνθρωπος καὶ τὰ βῆματα αὐτῶν

502 4 Laud gr. 86, p. 381

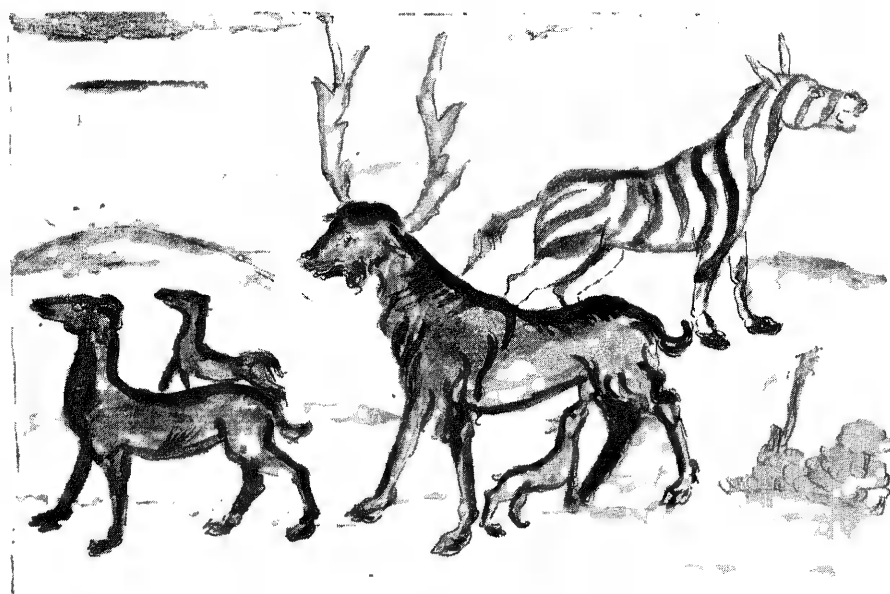
[illegible]



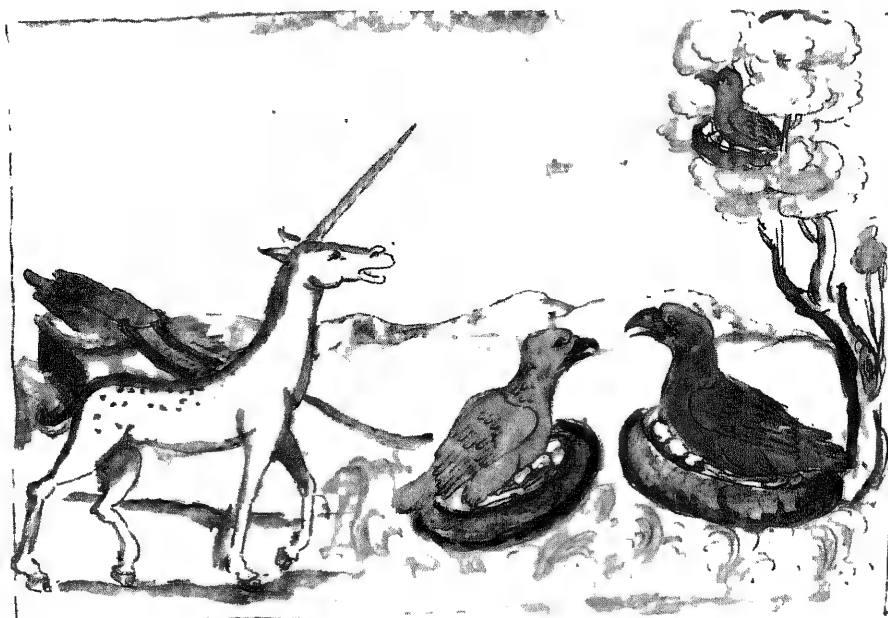
505 4 Laud gr. 86, p. 386



506 4 Laud gr. 86, p. 387



507 4 Laud gr. 86, p. 389

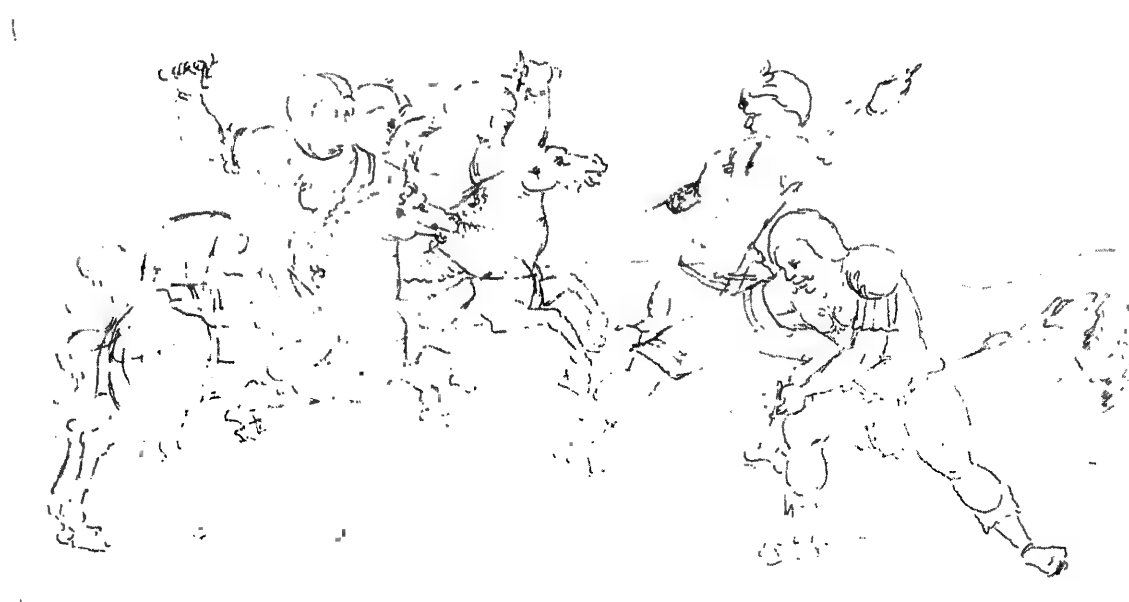


508 4 Laud gr. 86, p. 391 oben

Τὸ πρῶτον ἐστὶν ἡ ἀρχὴ τοῦ κόσμου ὅτε ὁ θεὸς ἐποίησε τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν· καὶ ἡ γῆ ἦν ἄκαταστατος καὶ ἄκατακτιστος· καὶ ὁ πνεῦμα τοῦ κυρίου ἐπορεύετο ἐπὶ τὰς ὕδατις· καὶ ὁ θεὸς εὐλόγησεν τὰς ὕδατις, καὶ ἔφη· Ἐστω φῶς· καὶ ἔγένετο ὁ φῶς.



509 4 Laud gr. 86, p. 391 unten



510 4 Laud gr. 86, p. 392



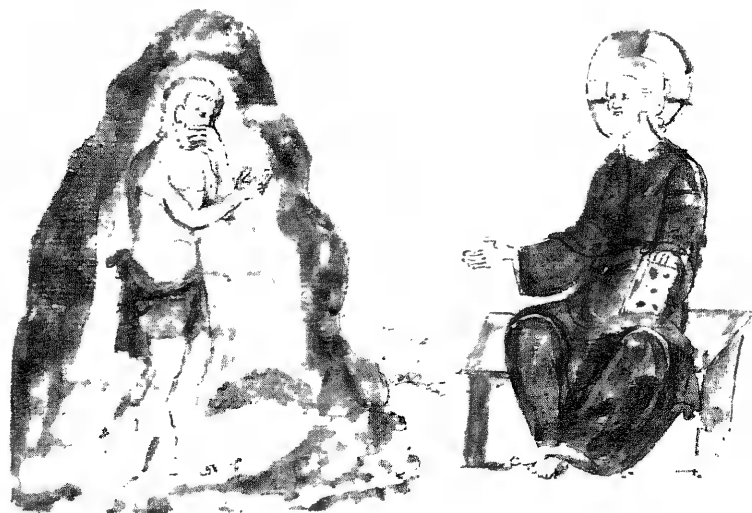
511 4 Laud gr. 86, p. 393



512 4 Laud gr. 86, p. 394



513 4 Laud gr. 86, p. 395



514 4 Laud gr. 86, p. 396



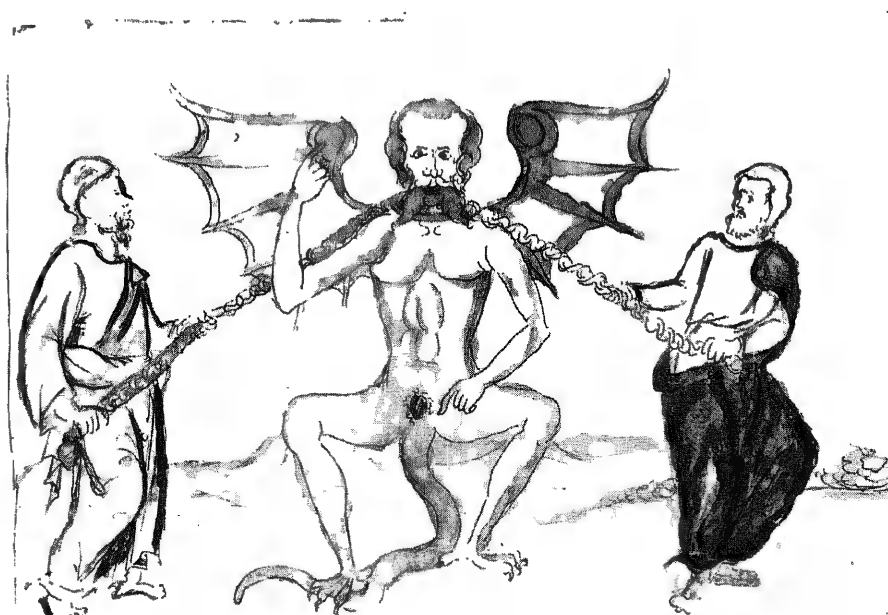
515 4 Laud gr. 86, p. 398



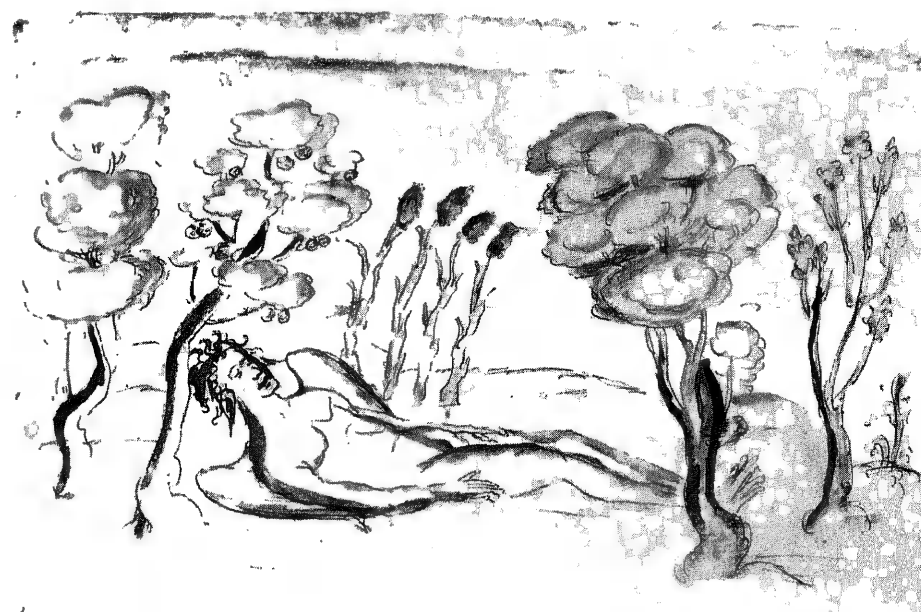
516 4 Laud gr. 86, p. 401



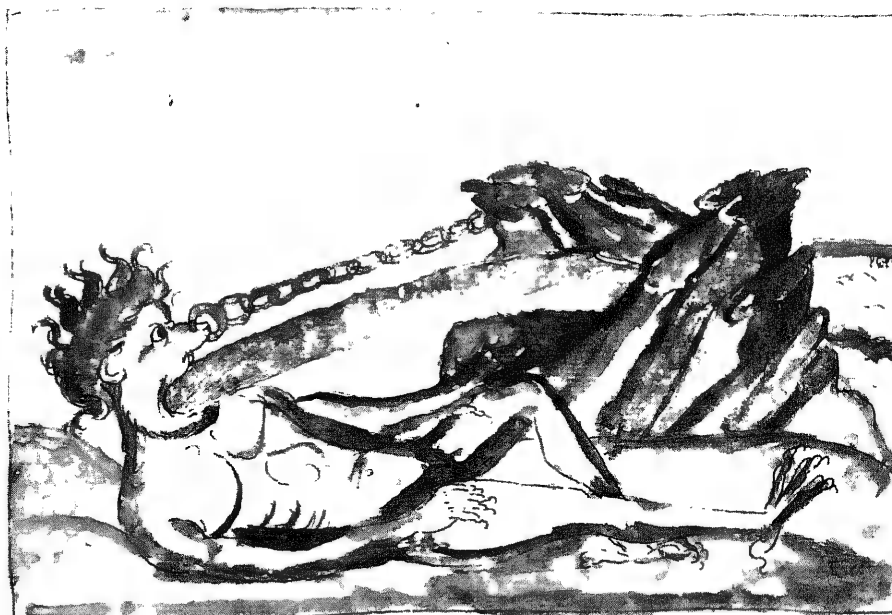
517 4 Laud gr. 86, p. 403



518 4 Laud gr. 86, p. 404



519 4 Laud gr. 86, p. 405



520 4 Laud gr. 86, p. 406



521 4 Laud gr. 86, p. 407



522 ■ Laud gr. 86, p. 408



523 4 Laud gr. 86, p. 411



524 4 Laud gr. 86, p. 415



525 4 Laud gr. 86, p. 416



526 4 Laud gr. 86. p. 418



527 4 Laud gr. 86. p. 420



528 4 Laud gr. 86. p. 422



529 4 Laud gr. 86, p. 424



530 4 Laud gr. 86, p. 425



531 4 Laud gr. 86, p. 428



532 4 Laud gr. 86, p. 429



533 4 Laud gr. 86, p. 430



534 4 Laud gr. 86, p. 431



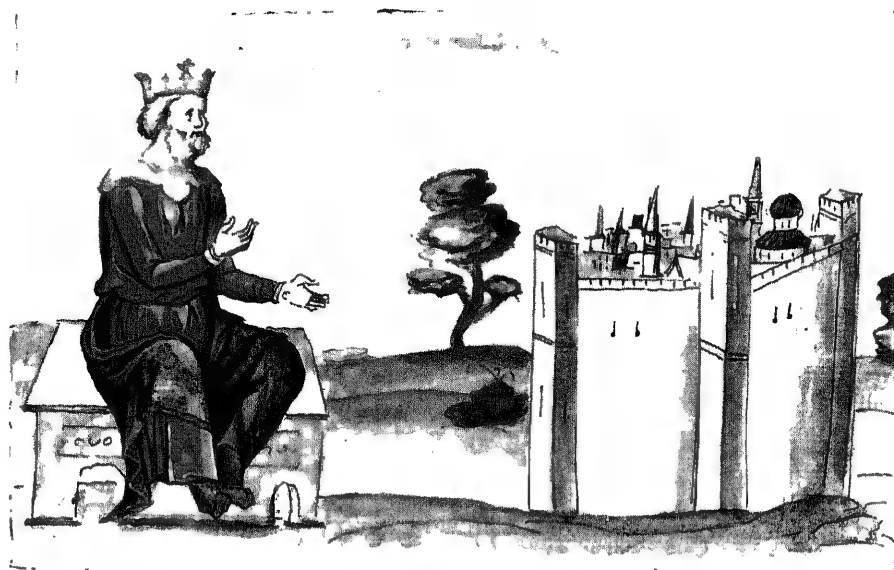
535 4 Laud gr. 86, p. 432



536 4 Laud gr. 86. p. 434



537 4 Laud gr. 86. p. 435



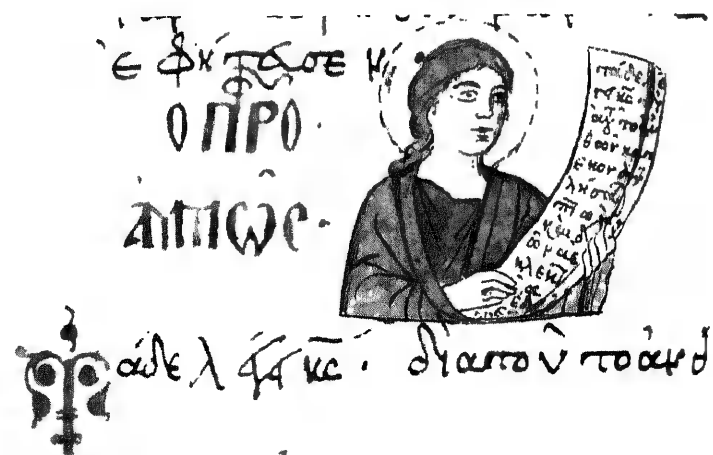
538 4 Laud gr. 86. p. 436



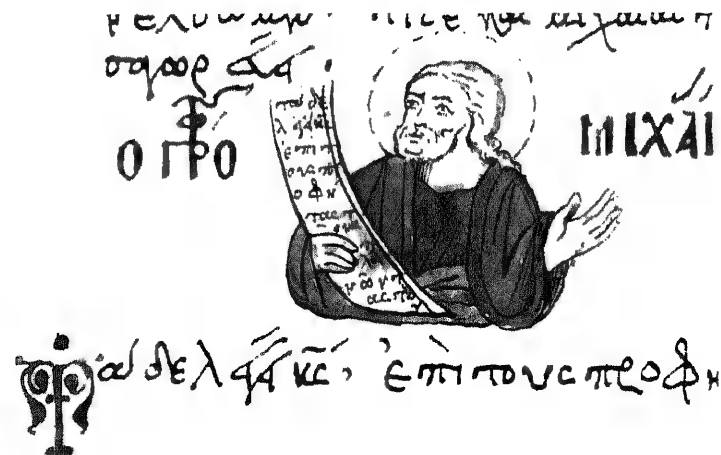
539 5 Barocci 93, f. 4



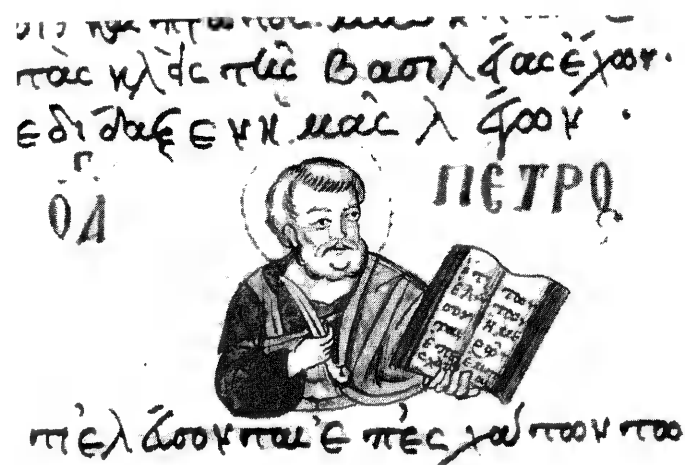
540 5 Barocci 93, f. 5



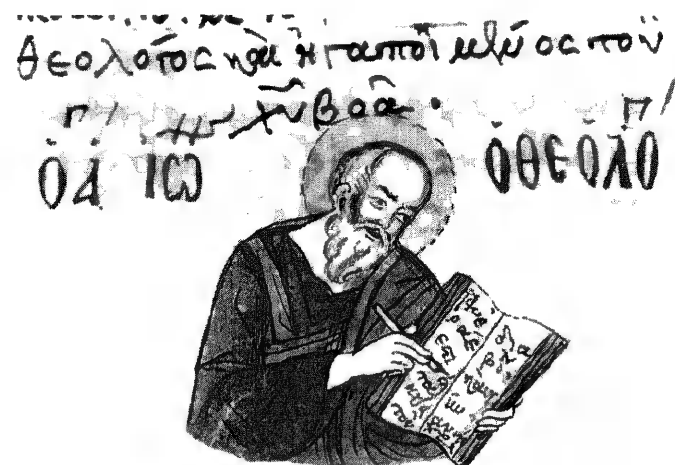
541 5 Barocci 93, f. 5'



542 5 Barocci 93, f. 6'



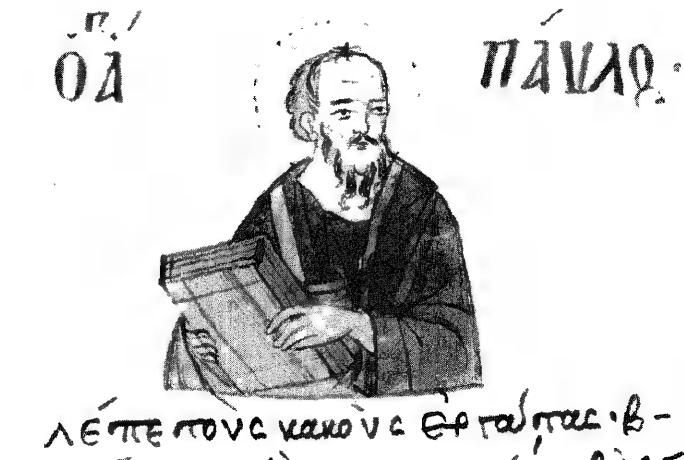
543 5 Barocci 93, f. 10



544 5 Barocci 93, f. 10'



545 5 Barocci 93, f. 11



546 5 Barocci 93, f. 11'



πον δὲ ἐκὼν ἀκούσας μεθ' ἑ
 ὅ ἐν πλείστοις ἵππων αὐτῶν ἀπὸ
 φωνῆς χρεματισμοῦ ἵππων
 σίας ἵππων αὐτῶν ἐσθ' ὁλοκαυτ
 ῆται· πάλιν μου οὐκέτι φησὶ·



κῆμος λεόντος σου· ἐκπλεόησε
 παῖς τοῦ βασιλῆος· ἀλλ' ἵνα μελῇ

547, 548 5 Barocci 93, f. 18



551 5 Barocci 93, f. 12



549 5 Barocci 93, f. 9

ρῶν δ' ὁ σὺν μαρτυρίᾳ αὐτῶν



αὐτῶν ἡγετὸν ποῦ ποῦ δαίμων προδίδει
 ὅτι τὸ θῆρι οὐκ ἔστιν ἀβ' αὐτῶν ἐκπλεόη
 βῦσσον· ποιῶσιν μετὰ τῶν πολε

550 5 Barocci 93, f. 21



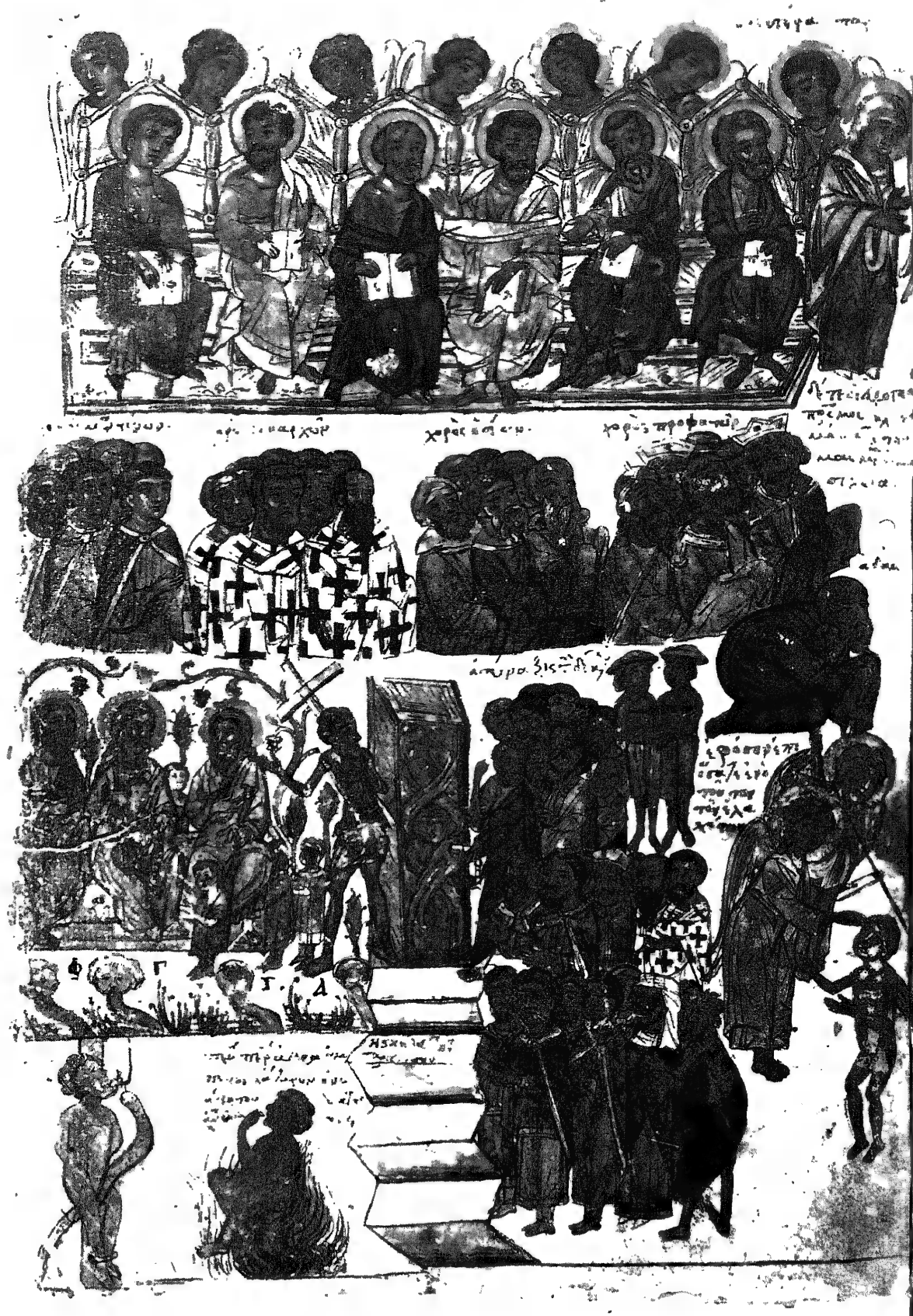
552 5 Barocci 93, f. 16



553 5 Barocci 93, f. 29



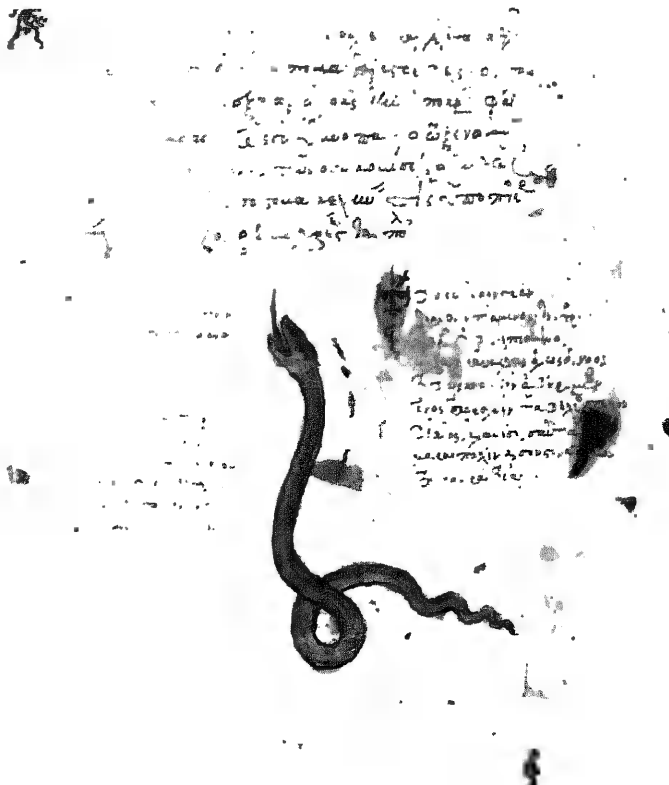
554 5 Barocci 93, ff. 35-36



555 5 Barocci 93, f. 35v



556 5 Barocci 93. f. 36



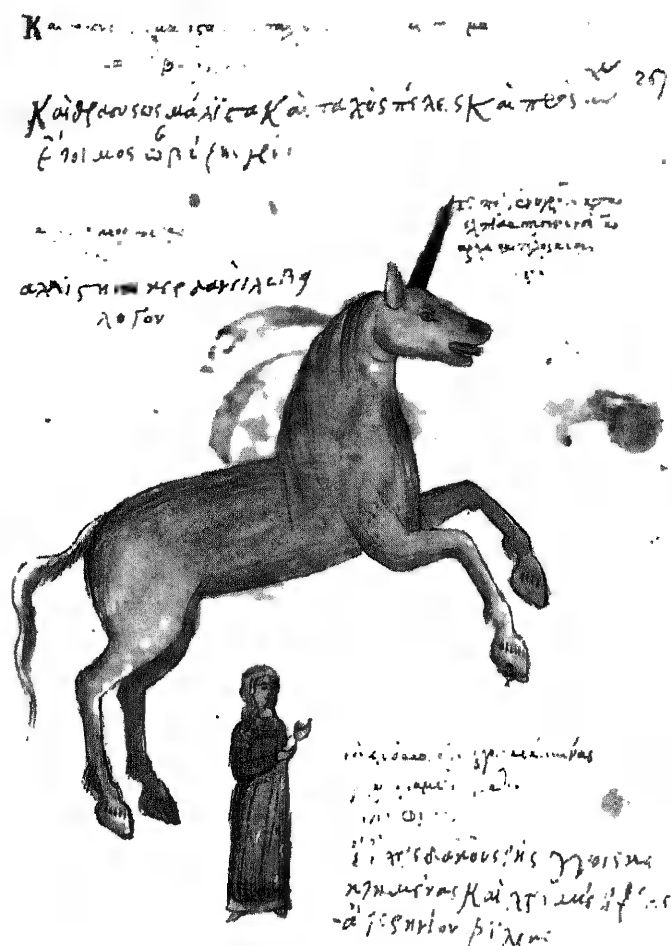
573 7 Canon. gr. 126. f. 266

ΜΕΤΑΦΡΑΣΗ



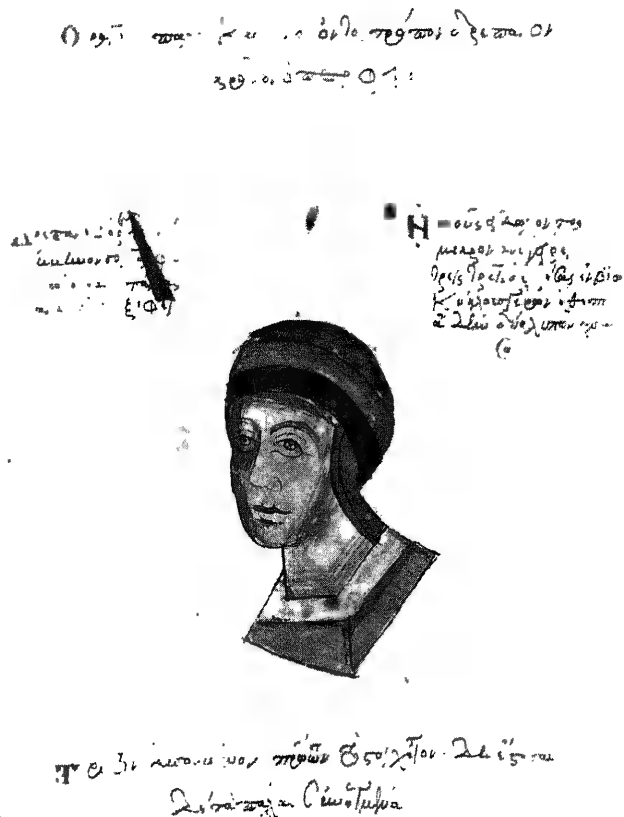
574 7 Canon. gr. 126. f. 266v

ΜΟΝΟΧΩΡΙΑ



575 7 Canon. gr. 126, f. 267

ΕΠΙΣΤΕ



576 7 Canon. gr. 126, f. 267v

ΟΥΝΙΧΙΣ

ΛΙΒΙΟΣ ΓΕΦΙΤΥ ΗΡ/

ΣΙΑΒΑ

Ο...
...
...

...
...
...



...
...
...

...
...
...

577 7 Canon. gr. 126, f. 260

ΤΟΜΙ

...
...

...
...
...

...
...
...

...
...
...



...
...
...

578 7 Canon. gr. 126, f. 260^v

ΜΕΛΙΣΜ

...
...
...

...
...

...
...



...
...
...

579 7 Canon. gr. 126, f. 261

ΑΙΜΑ

...
...
...

...
...
...

...
...
...



...
...
...

580 7 Canon. gr. 126, f. 261^v

ΕΥΧΑΡΙΣΤΙΑ

Τὸ πρῶτον ἐκ τῆς ἁγίας τριῶνος, ἡμεῖς
ὁμιλοῦμεν, ὡς καὶ ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι
ἐκείνῃ, ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι, ἐν τῇ
ἁγίᾳ τριῶνι, ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι.

Ε. 8. 2. 1. 1.

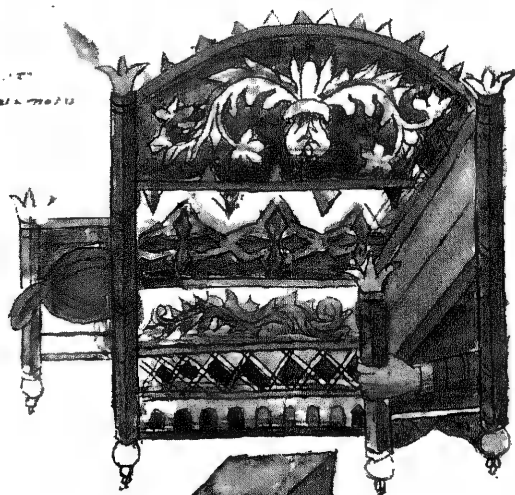


Καὶ ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι, ἡμεῖς
ὁμιλοῦμεν, ὡς καὶ ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι
ἐκείνῃ, ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι, ἐν τῇ
ἁγίᾳ τριῶνι, ἐν τῇ ἁγίᾳ τριῶνι.

581 7 Canon. gr. 126, f. 262

Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.



Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

582 7 Canon. gr. 126, f. 262

Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.



583 7 Canon. gr. 126, f. 263

Ὁ ἁγίος πνεῦμα

Ὁ ἁγίος πνεῦμα

Ὁ ἁγίος πνεῦμα

Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

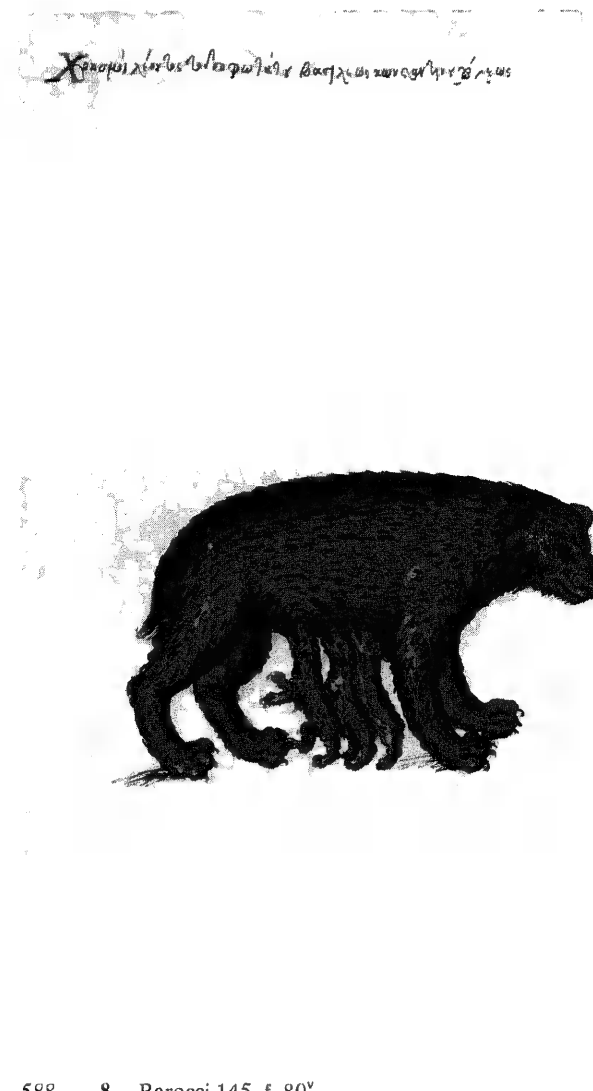
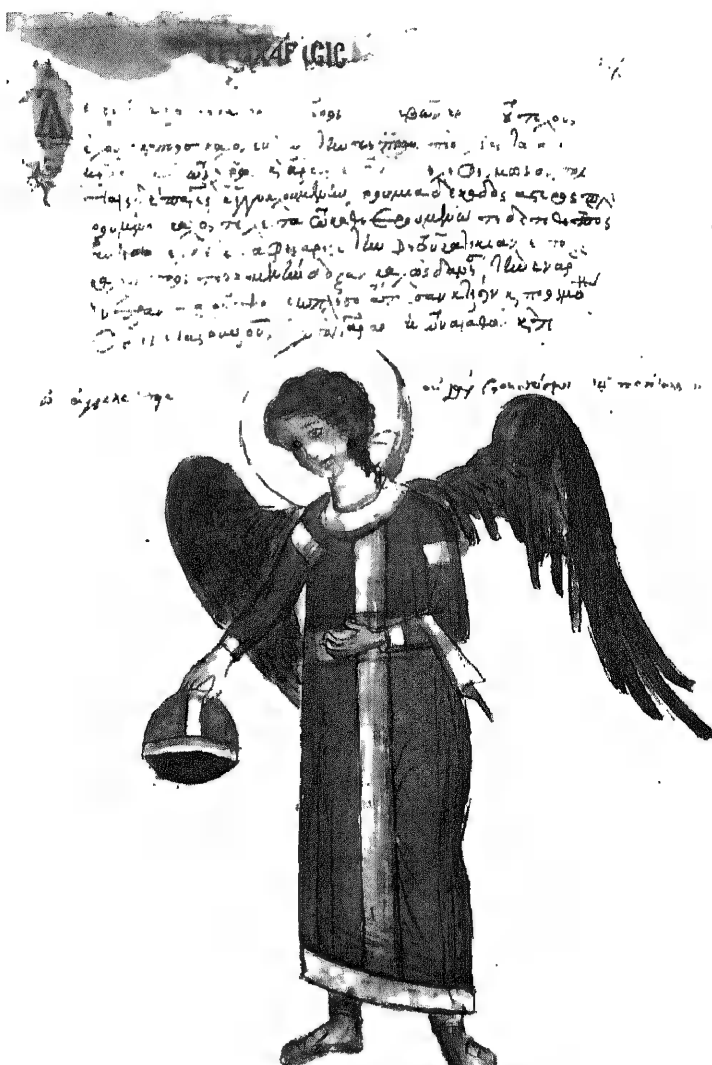
Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

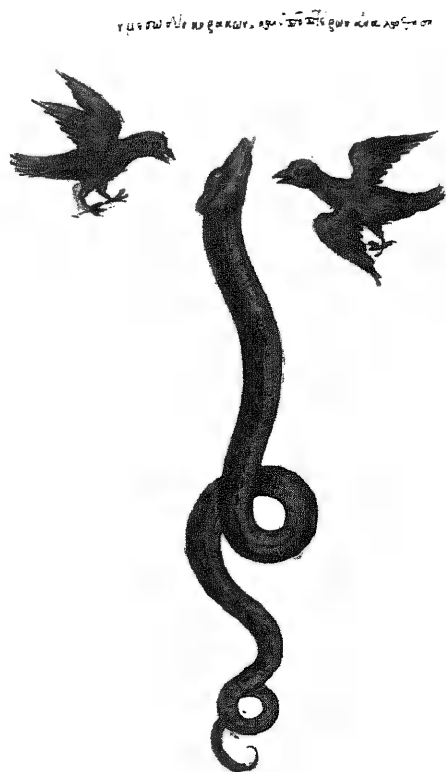


Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

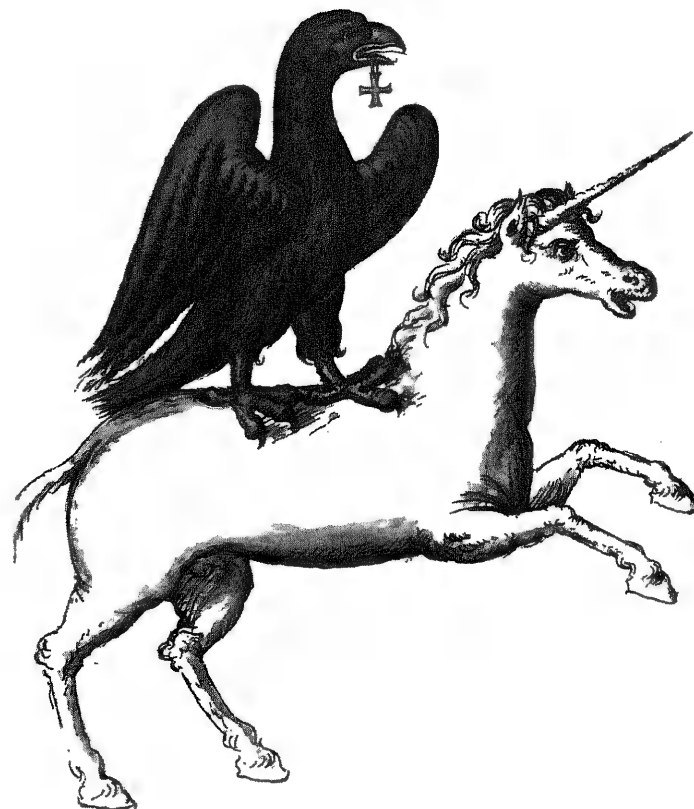
Ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα,
ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα, ὁ ἁγίος πνεῦμα.

584 7 Canon. gr. 126, f. 263





589 ■ Barocci 145, f. 81^v



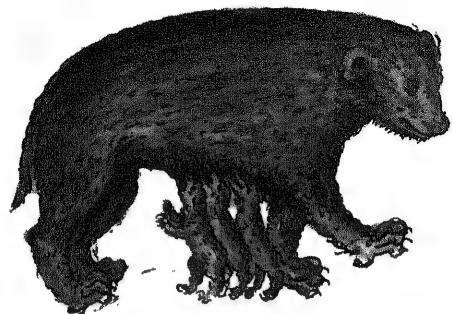
590 ■ Barocci 145, f. 82^v



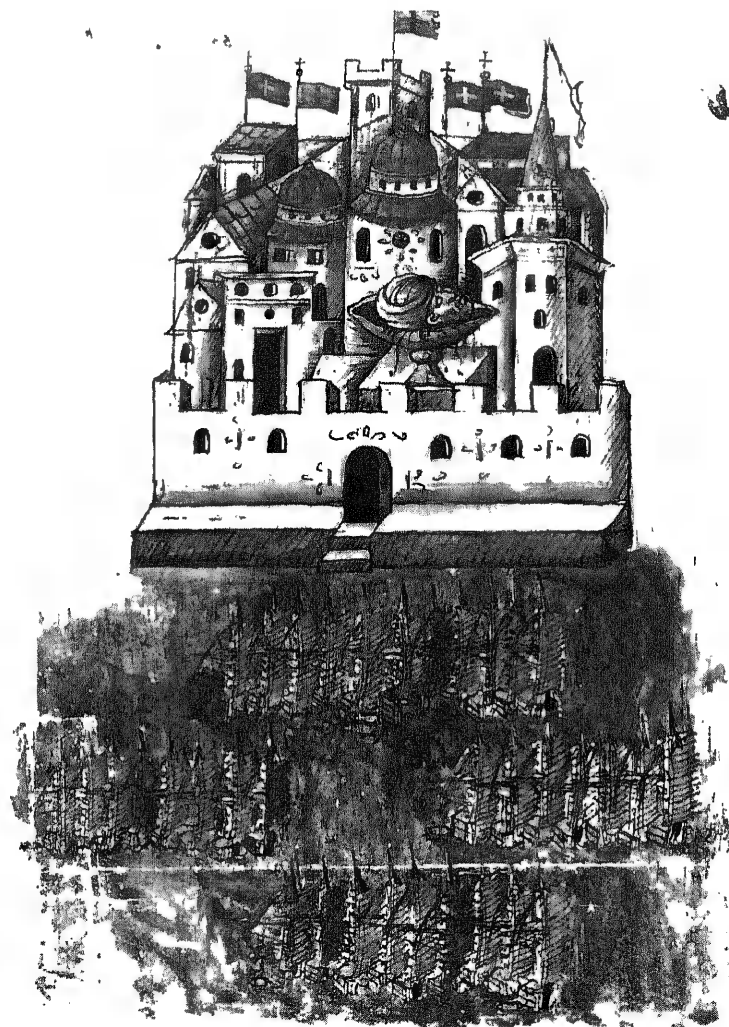
591 ■ Barocci 145, f. 83^v



592 ■ Barocci 145, f. 84^v



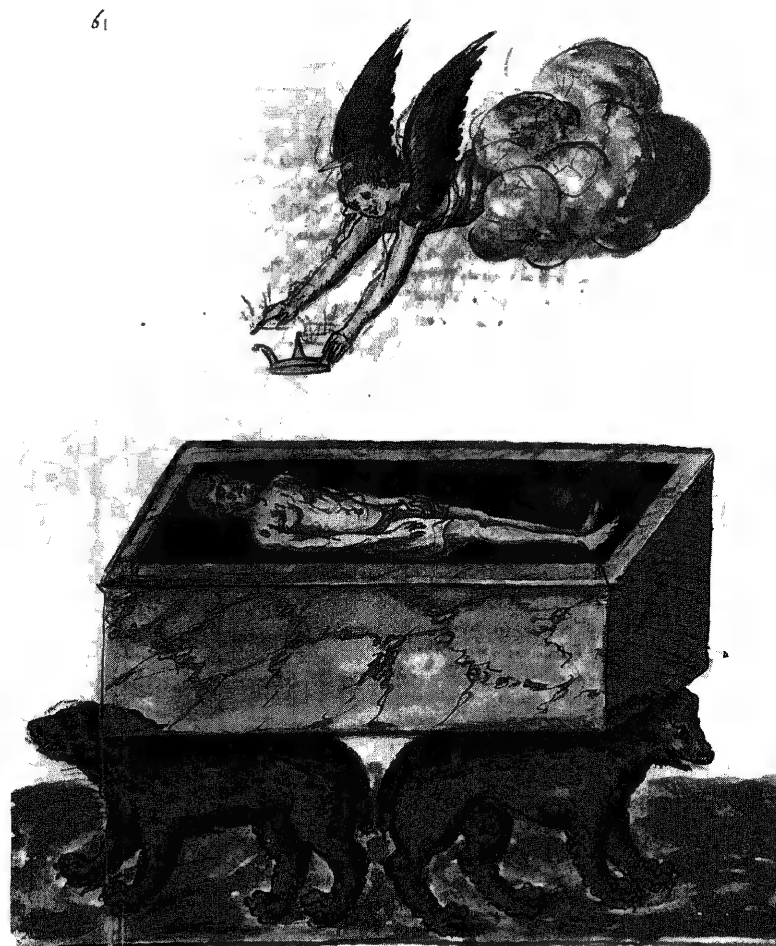
593 ■ Barocci 145, f. 85^v



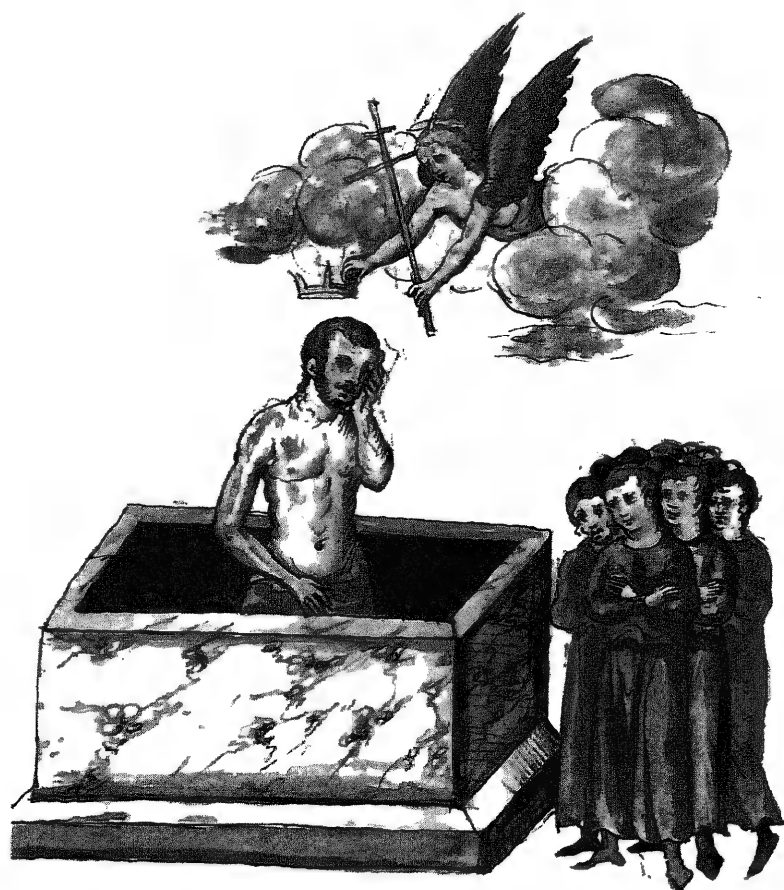
594 ■ Barocci 145, f. 86^v



595 ■ Barocci 145, f. 87^v



596 ■ Barocci 145, f. 88^v



597 8 Barocci 145, f. 89^v



598 8 Barocci 145, f. 90^v



599 8 Barocci 145, f. 91^v



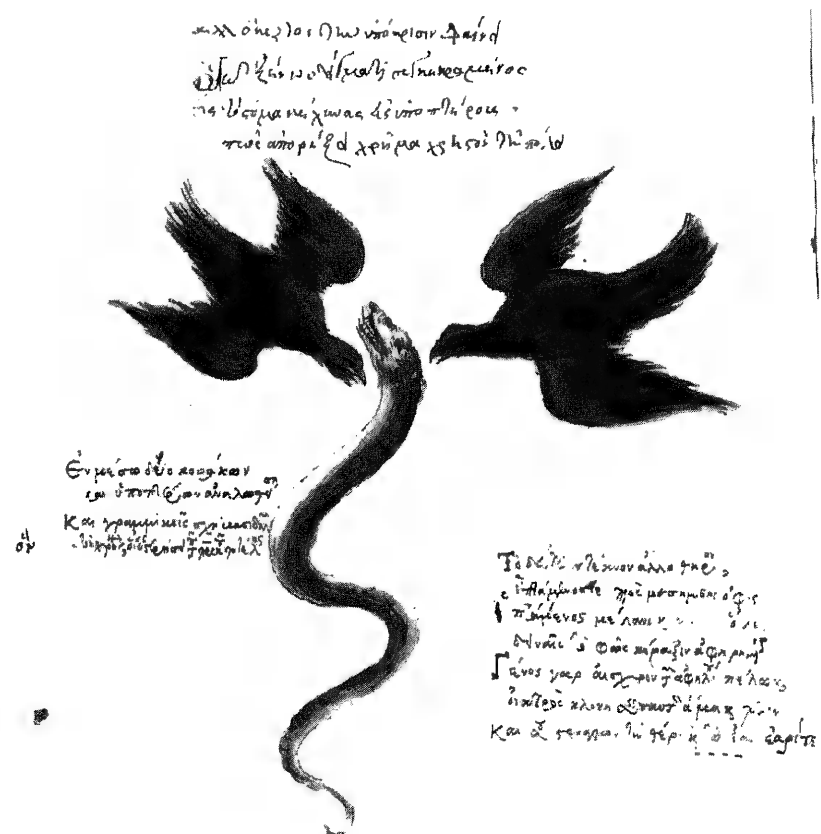
600 8 Barocci 145, f. 92^v



601 ■ Barocci 145, f. 233^v



602 8 Barocci 145, f. 236^v

603 8 Barocci 145, f. 241^v604 8 Barocci 145, f. 245^v

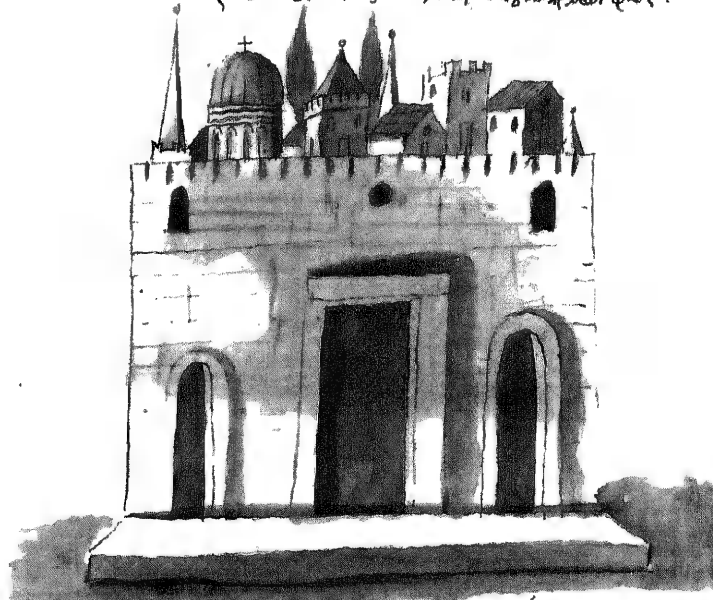
Δι' ἡν ἄρ' ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς



ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ

609 ■ Barocci 145, f. 248

αὐτὸς ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς

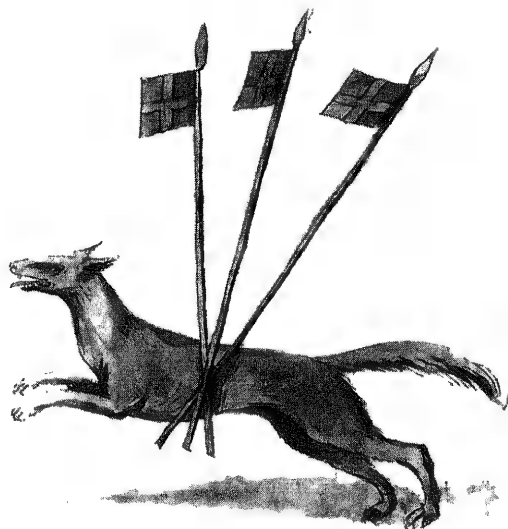


ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς



610 ■ Barocci 145, f. 248*

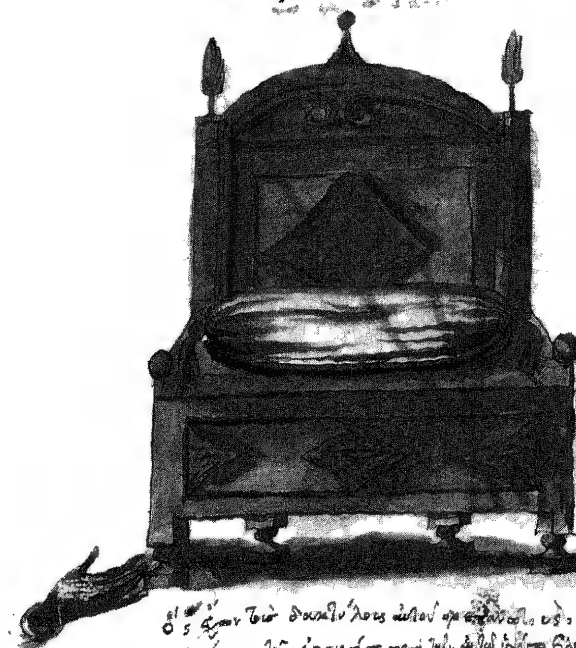
ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς



ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς

611 ■ Barocci 145, f. 249

ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς



ὅτι καὶ οὗτοι οὐκ ἔστιν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
καὶ παύει τὸ πλὴν σκαμνὸν γὰρ
ἀρ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς
μαρτυροῦν ἀμφότεροι ἵδ' ἡν ὁ δὲ ἐστὶν σκαμνὸς

612 ■ Barocci 145, f. 249*



613 ■ Barocci 145, f. 250



614 8 Barocci 145, f. 250^v



615 ■ Barocci 145, f. 251



616 ■ Barocci 145, f. 251^v

[illegible]

617 ■ Barocci 145, f. 252

228. 210. 210. 210. 210. 210.
 228. 210. 210. 210. 210. 210.
 228. 210. 210. 210. 210. 210.



Θεός Θεός ὁ προκρίνεις ἐν βλαβῇ
 ὁ καταχρῶν ἐν ἀδικροῦσι.

618 8 Barocci 145, f. 252^v

7^a 1
 οστρεα
 6
 οστρεα
 7
 οστρεα
 8
 οστρεα
 9
 οστρεα
 10
 οστρεα
 11
 οστρεα
 12
 οστρεα
 13
 οστρεα
 14
 οστρεα
 15
 οστρεα
 16
 οστρεα
 17
 οστρεα
 18
 οστρεα
 19
 οστρεα
 20
 οστρεα
 21
 οστρεα
 22
 οστρεα
 23
 οστρεα
 24
 οστρεα
 25
 οστρεα
 26
 οστρεα
 27
 οστρεα
 28
 οστρεα
 29
 οστρεα
 30
 οστρεα
 31
 οστρεα
 32
 οστρεα
 33
 οστρεα
 34
 οστρεα
 35
 οστρεα
 36
 οστρεα
 37
 οστρεα
 38
 οστρεα
 39
 οστρεα
 40
 οστρεα
 41
 οστρεα
 42
 οστρεα
 43
 οστρεα
 44
 οστρεα
 45
 οστρεα
 46
 οστρεα
 47
 οστρεα
 48
 οστρεα
 49
 οστρεα
 50
 οστρεα
 51
 οστρεα
 52
 οστρεα
 53
 οστρεα
 54
 οστρεα
 55
 οστρεα
 56
 οστρεα
 57
 οστρεα
 58
 οστρεα
 59
 οστρεα
 60
 οστρεα
 61
 οστρεα
 62
 οστρεα
 63
 οστρεα
 64
 οστρεα
 65
 οστρεα
 66
 οστρεα
 67
 οστρεα
 68
 οστρεα
 69
 οστρεα
 70
 οστρεα
 71
 οστρεα
 72
 οστρεα
 73
 οστρεα
 74
 οστρεα
 75
 οστρεα
 76
 οστρεα
 77
 οστρεα
 78
 οστρεα
 79
 οστρεα
 80
 οστρεα
 81
 οστρεα
 82
 οστρεα
 83
 οστρεα
 84
 οστρεα
 85
 οστρεα
 86
 οστρεα
 87
 οστρεα
 88
 οστρεα
 89
 οστρεα
 90
 οστρεα
 91
 οστρεα
 92
 οστρεα
 93
 οστρεα
 94
 οστρεα
 95
 οστρεα
 96
 οστρεα
 97
 οστρεα
 98
 οστρεα
 99
 οστρεα
 100
 οστρεα

[illegible]

620 8 Barocci 145, f. 258



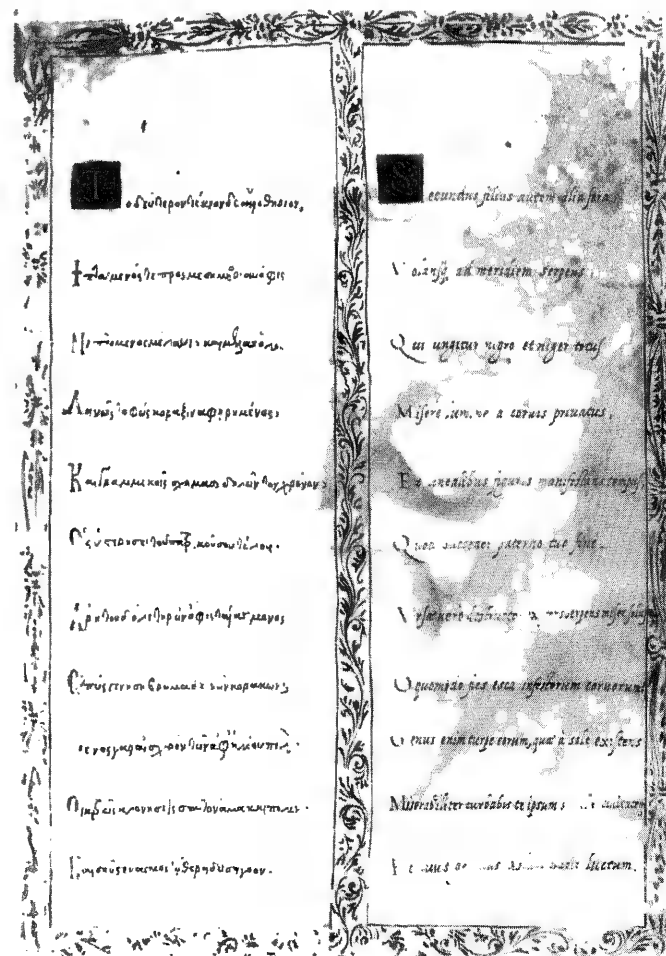
621 9 Barocci 170, f. 5^v



622 9 Barocci 170, f. 7^r



623 9 Barocci 170, f. 6^v



624 9 Barocci 170, f. 7



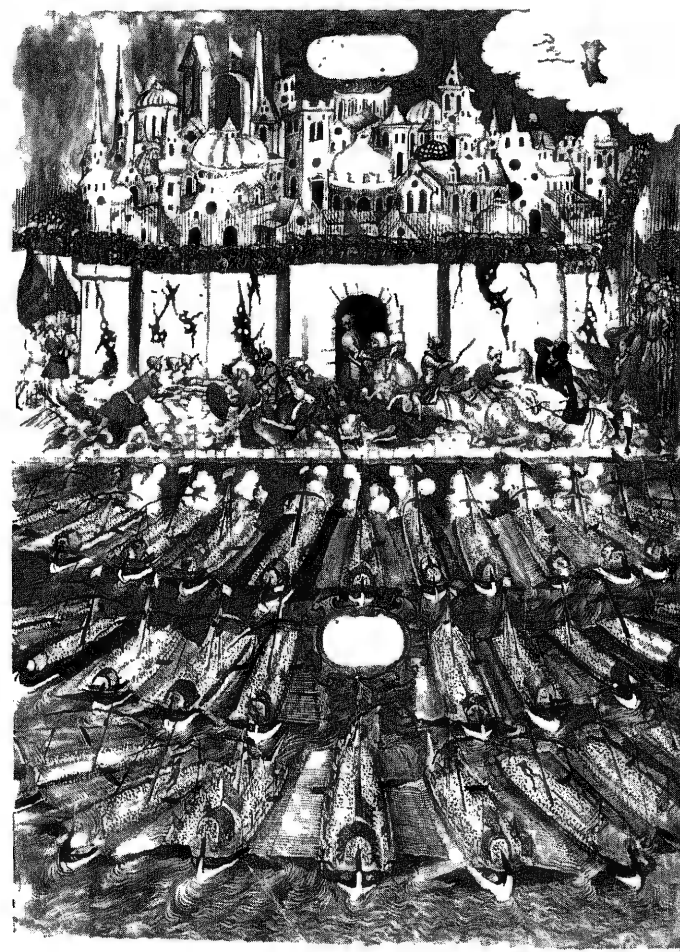
625 9 Barocci 170, f. 8^v



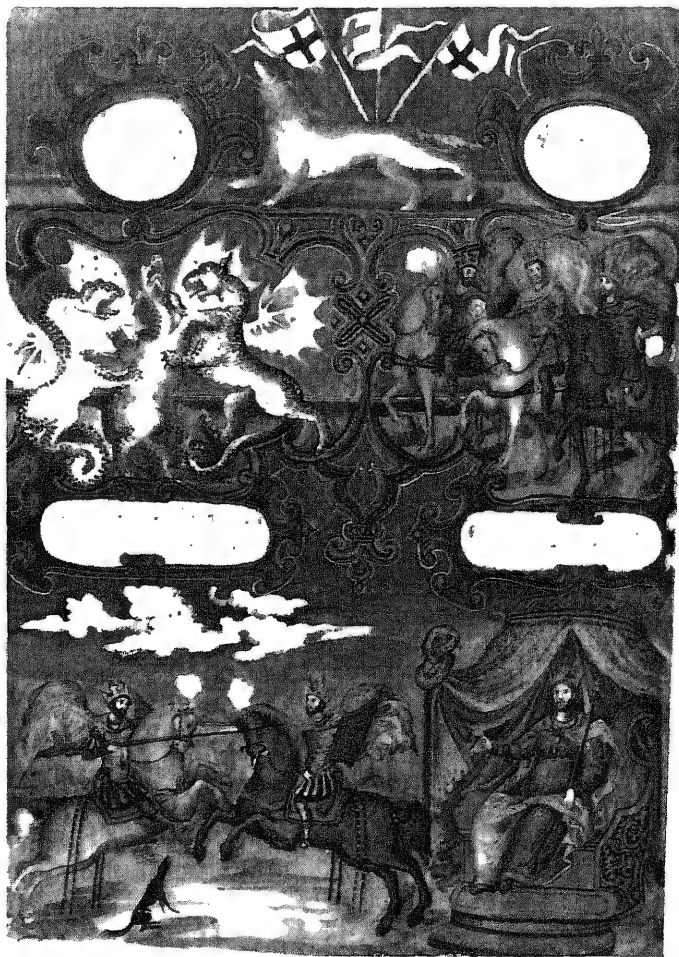
626 9 Barocci 170, f. 9^v



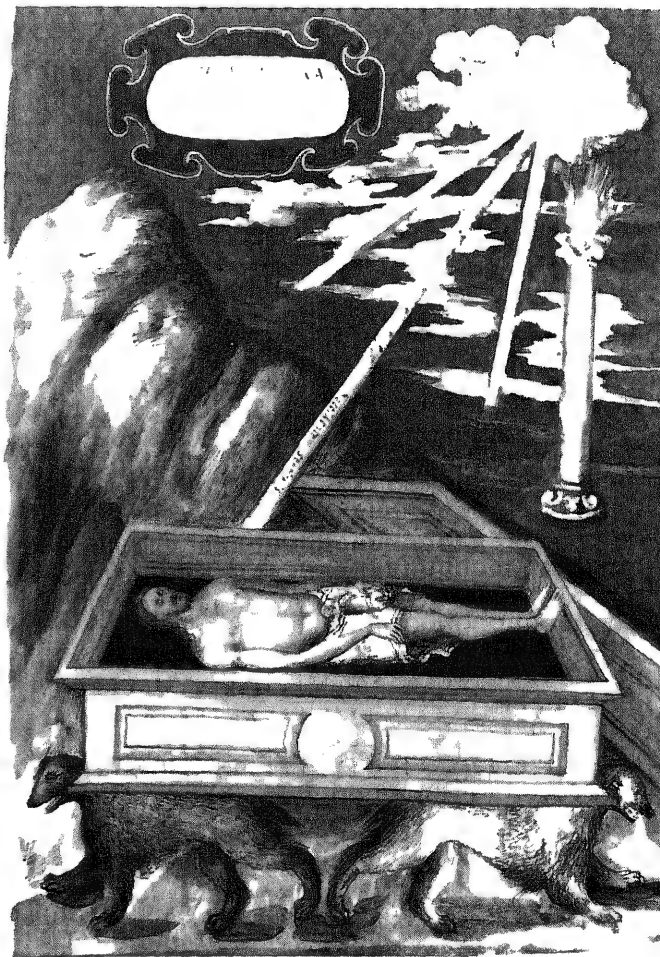
627 9 Barocci 170, f. 10^v



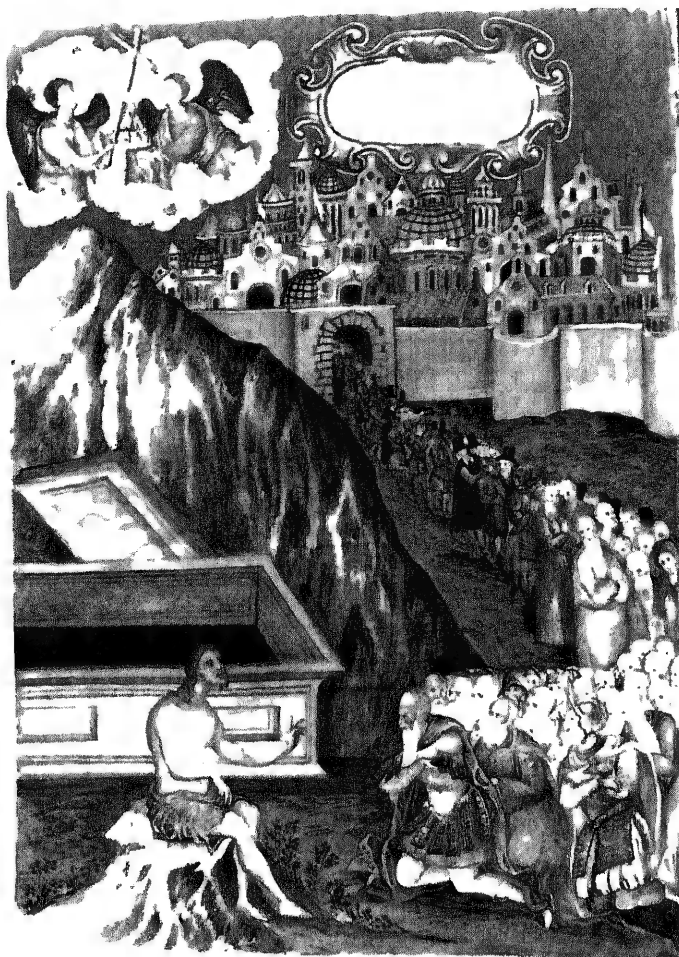
628 9 Barocci 170, f. 11^v



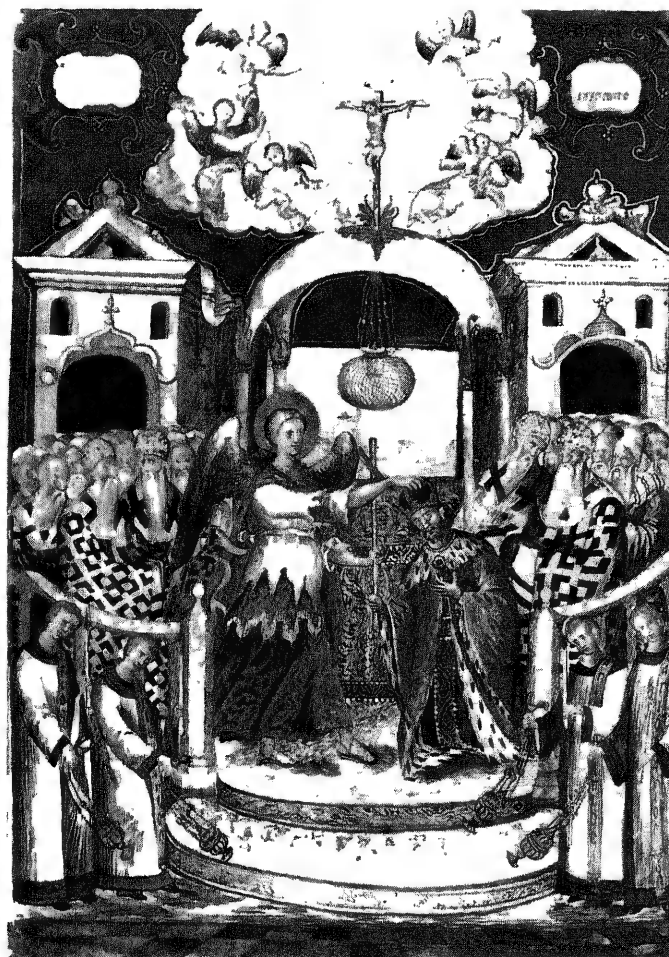
629 9 Barocci 170, f. 12'



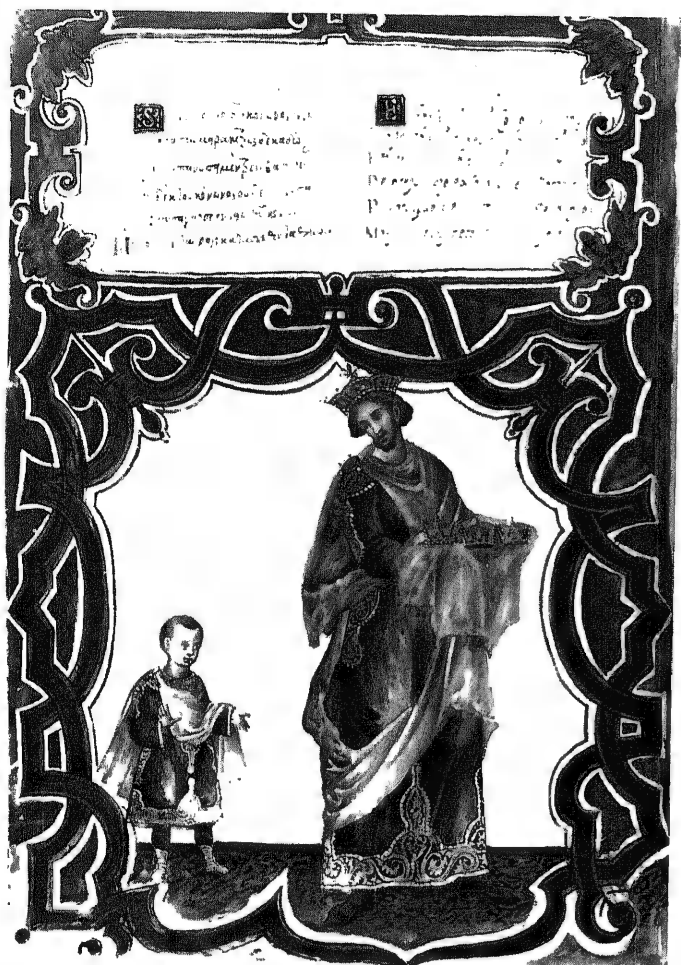
630 9 Barocci 170, f. 14



631 9 Barocci 170, f. 14'



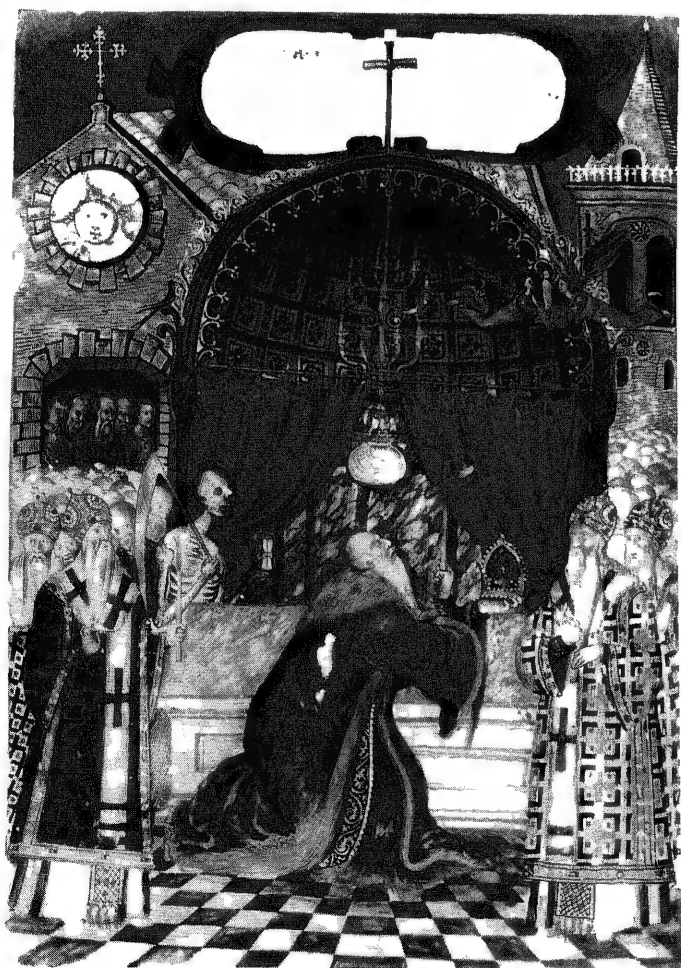
632 9 Barocci 170, f. 15'



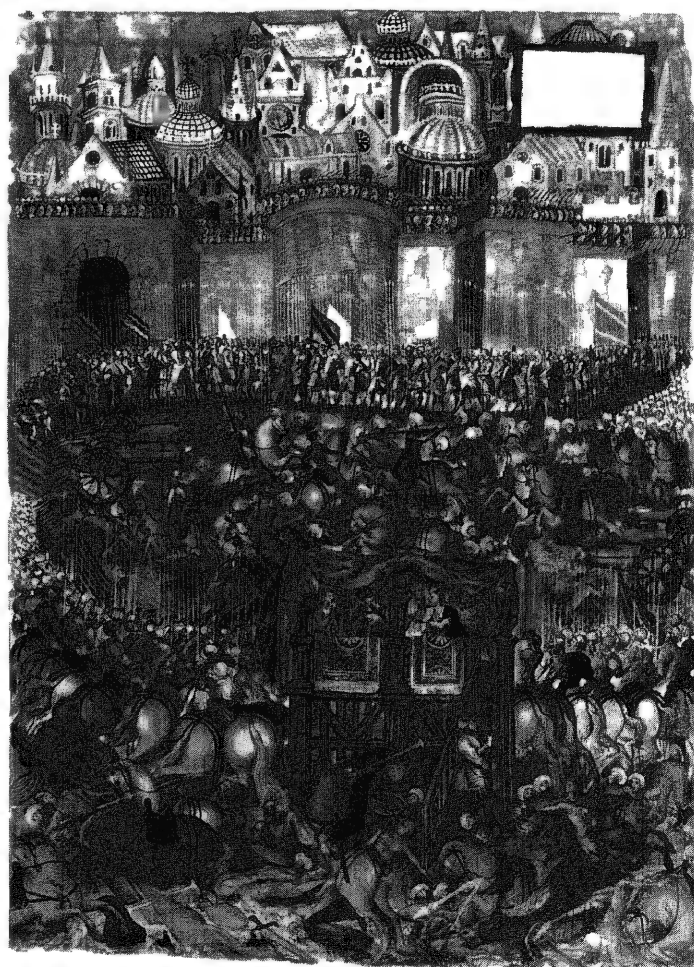
633 9 Barocci 170, f. 17^r



634 9 Barocci 170, f. 18



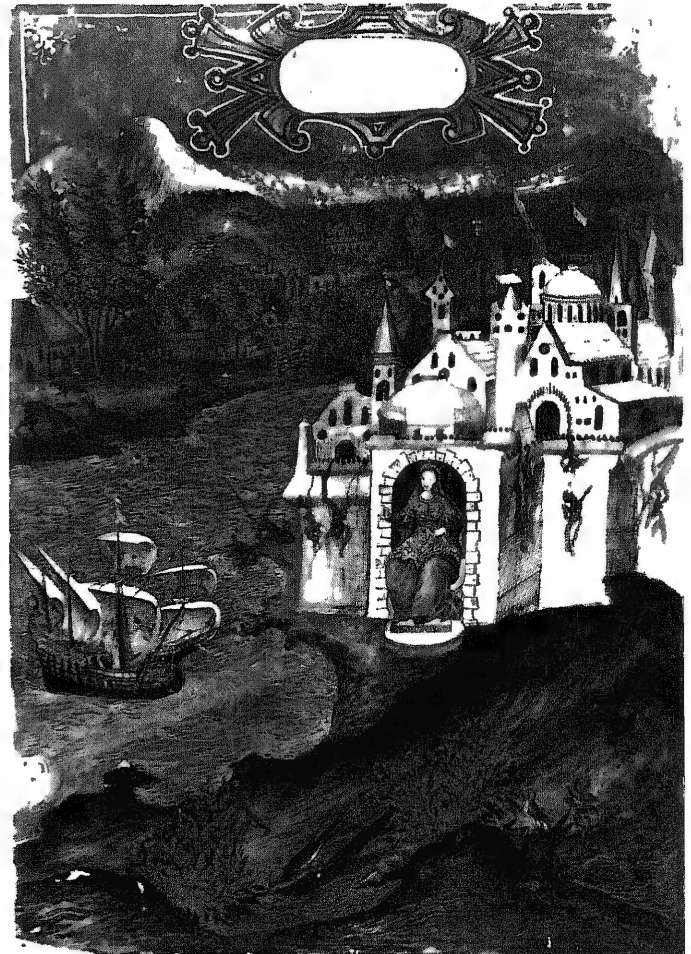
635 9 Barocci 170, f. 16^v



636 9 Barocci 170, f. 18^v



637 9 Barocci 170, f. 19v



638 9 Barocci 170, f. 20v



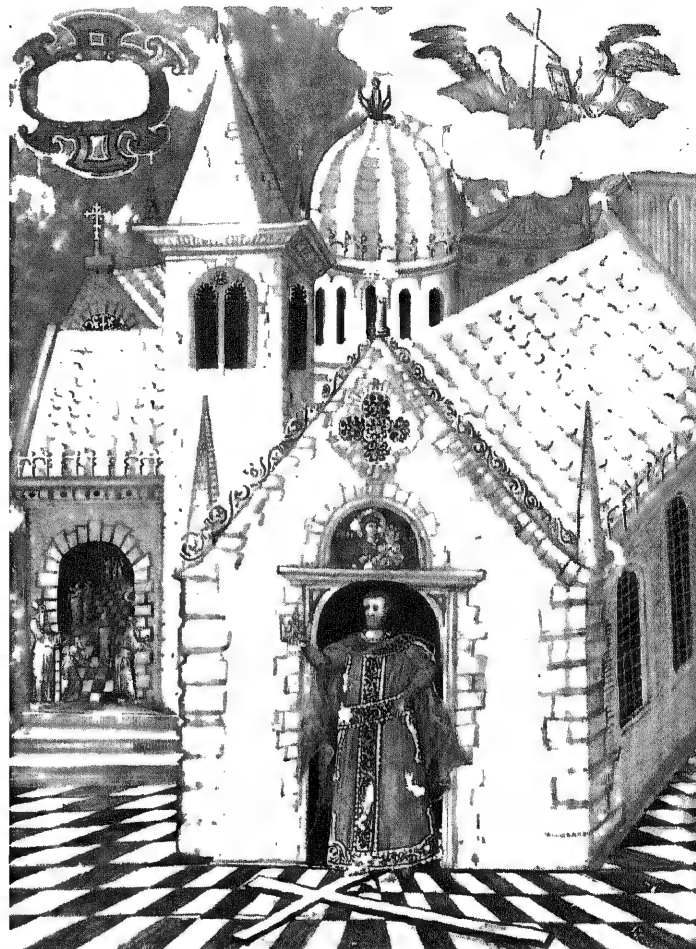
639 9 Barocci 170, f. 21v



640 9 Barocci 170, f. 22v



641 9 Barocci 170, f. 23v



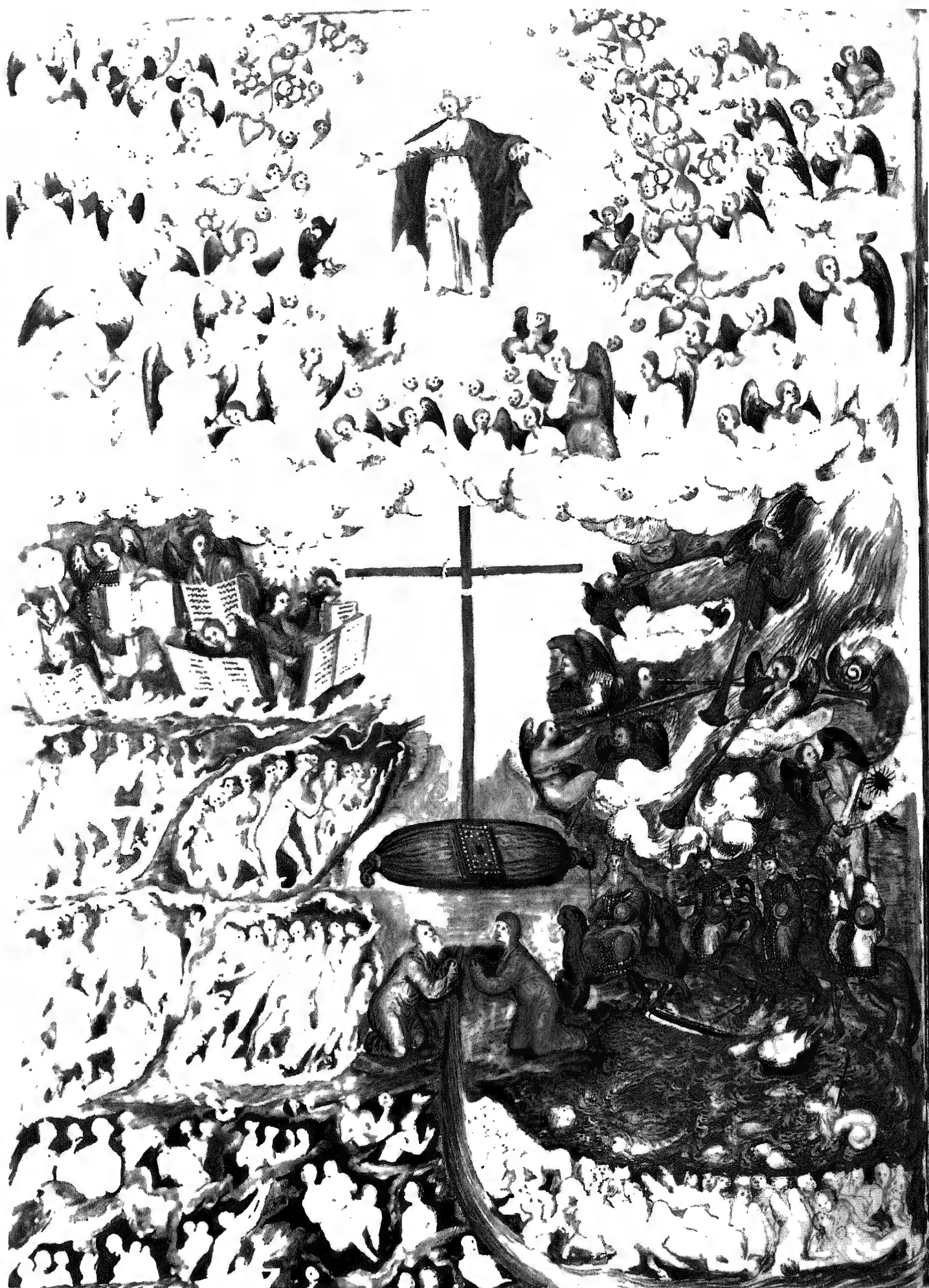
642 9 Barocci 170, f. 24v



643 9 Barocci 170, f. 25v



644 9 Barocci 170, f. 26v



645 9 Barocci 170, f. 27^r



646 9 Barocci 170, f. 28



647 10 Barocci 87, f. 33v

Verzeichnis der Abbildungen

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
Frontispiz	Farbtafel	1	Gr. th. f. 1, f. 6: Koimesis
89	1	1	Gr. th. f. 1, f. 1 ^v : Verkündigung
89	2	1	Gr. th. f. 1, f. 2: Geburt Christi
89	3	1	Gr. th. f. 1, f. 2 ^v : Darbringung Christi im Tempel
89	4	1	Gr. th. f. 1, f. 3: Taufe Christi
90	5	1	Gr. th. f. 1, f. 3 ^v : Verklärung Christi
90	6	1	Gr. th. f. 1, f. 4: Beweinung Christi
90	7	1	Gr. th. f. 1, f. 4 ^v : Anastasis
90	8	1	Gr. th. f. 1, f. 5: Himmelfahrt
91	9	1	Gr. th. f. 1, f. 5 ^v : Pfingsten
91	10	1	Gr. th. f. 1, f. 6: Koimesis
91	11	1	Gr. th. f. 1, f. 7 ^v : Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. September
91	12	1	Gr. th. f. 1, f. 8: Die Heiligen des 6., 7., 8., 9. September
92	13	1	Gr. th. f. 1, f. 9: Die Heiligen des 10., 11., 12., 13. September
92	14	1	Gr. th. f. 1, f. 9 ^v : Die Heiligen des 14., 15., 16., 17. September
92	15	1	Gr. th. f. 1, f. 10: Die Heiligen des 18., 19., 20., 21. September
93	16	1	Gr. th. f. 1, f. 10 ^v : Die Heiligen des 22., 23., 24., 25. September
93	17	1	Gr. th. f. 1, f. 11: Die Heiligen des 26., 27., 28., 29. September
93	18	1	Gr. th. f. 1, f. 11 ^v : Die Heiligen des 30. September, 1., 2., 3. Oktober
93	19	1	Gr. th. f. 1, f. 12: Die Heiligen des 4., 5., 6., 7. Oktober
94	20	1	Gr. th. f. 1, f. 12 ^v : Die Heiligen des 8., 9., 10., 11. Oktober
94	21	1	Gr. th. f. 1, f. 13: Die Heiligen des 12., 13., 14., 15. Oktober
94	22	1	Gr. th. f. 1, f. 13 ^v : Die Heiligen des 16., 17., 18., 19. Oktober
94	23	1	Gr. th. f. 1, f. 14: Die Heiligen des 20., 21., 22., 23. Oktober
95	24	1	Gr. th. f. 1, f. 14 ^v : Die Heiligen des 24., 25., 26., 27. Oktober
95	25	1	Gr. th. f. 1, f. 15: Die Heiligen des 28., 29. 30., 31. Oktober
95	26	1	Gr. th. f. 1, f. 15 ^v : Die Heiligen des 1., 2., 3., 4. November
95	27	1	Gr. th. f. 1, f. 16: Die Heiligen des 5., 6., 7., 8. November
96	28	1	Gr. th. f. 1, f. 16 ^v : Die Heiligen des 9., 10., 11., 12. November
96	29	1	Gr. th. f. 1, f. 17: Die Heiligen des 13., 14., 15., 16. November
96	30	1	Gr. th. f. 1, f. 17 ^v : Die Heiligen des 17., 18., 19., 20. November
96	31	1	Gr. th. f. 1, f. 18: Die Heiligen des 21., 22., 23., 24. November
97	32	1	Gr. th. f. 1, f. 18 ^v : Die Heiligen des 25., 26., 27., 28. November
97	33	1	Gr. th. f. 1, f. 19: Die Heiligen des 29., 30. November, 1. Dezember
97	34	1	Gr. th. f. 1, f. 19 ^v : Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. Dezember
97	35	1	Gr. th. f. 1, f. 20: Die Heiligen des 6., 7., 8., 9. Dezember
98	36	1	Gr. th. f. 1, f. 20 ^v : Die Heiligen des 10., 11., 12., 13. Dezember

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
98	37	1	Gr. th. f. 1, f. 21: Die Heiligen des 14., 15., 16., 17. Dezember
98	38	1	Gr. th. f. 1, f. 21 ^v : Die Heiligen des 18., 19., 20., 21. Dezember
98	39	1	Gr. th. f. 1, f. 22: Die Heiligen des 22., 23., 24., 25. Dezember
99	40	1	Gr. th. f. 1, f. 22 ^v : Die Heiligen des 26., 27., 28., 29. Dezember
99	41	1	Gr. th. f. 1, f. 23: Die Heiligen des 30., 31. Dezember, 1. Januar
99	42	1	Gr. th. f. 1, f. 23 ^v : Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. Januar
99	43	1	Gr. th. f. 1, f. 24: Die Heiligen des 6., 7., 8., 9. Januar
100	44	1	Gr. th. f. 1, f. 24 ^v : Die Heiligen des 10., 11., 12., 13. Januar
100	45	1	Gr. th. f. 1, f. 25: Die Heiligen des 14., 15., 16., 17. Januar
100	46	1	Gr. th. f. 1, f. 25 ^v : Die Heiligen des 18., 19., 20., 21. Januar
100	47	1	Gr. th. f. 1, f. 26: Die Heiligen des 22., 23., 24., 25. Januar
101	48	1	Gr. th. f. 1, f. 26 ^v : Die Heiligen des 26., 27., 28., 29. Januar
101	49	1	Gr. th. f. 1, f. 27: Die Heiligen des 30., 31. Januar, 1. Februar
101	50	1	Gr. th. f. 1, f. 27 ^v : Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. Februar
101	51	1	Gr. th. f. 1, f. 28: Die Heiligen des 21., 22., 23., 24. Februar
102	52	1	Gr. th. f. 1, f. 28 ^v : Die Heiligen des 25., 26., 27., 28. Februar
102	53	1	Gr. th. f. 1, f. 29: Die Heiligen des 29. Februar
102	54	1	Gr. th. f. 1, f. 30: Die Heiligen des 1., 2., 3., 4. März
103	55	1	Gr. th. f. 1, f. 30 ^v : Die Heiligen des 5., 6., 7., 8. März
103	56	1	Gr. th. f. 1, f. 31: Die Heiligen des 9., 10., 11., 12. März
103	57	1	Gr. th. f. 1, f. 31 ^v : Die Heiligen des 13., 14., 15., 16. März
103	58	1	Gr. th. f. 1, f. 32: Die Heiligen des 17., 18., 19., 20. März
104	59	1	Gr. th. f. 1, f. 32 ^v : Die Heiligen des 21., 22., 23., 24. März
104	60	1	Gr. th. f. 1, f. 33: Die Heiligen des 25., 26., 27., 28. März
104	61	1	Gr. th. f. 1, f. 33 ^v : Die Heiligen des 29., 30., 31. März
104	62	1	Gr. th. f. 1, f. 34: Die Heiligen des 1., 2., 3. April
105	63	1	Gr. th. f. 1, f. 34 ^v : Die Heiligen des 4., 5., 6., 7. April
105	64	1	Gr. th. f. 1, f. 35: Die Heiligen des 8., 9., 10., 11. April
105	65	1	Gr. th. f. 1, f. 35 ^v : Die Heiligen des 12., 13., 14., 15. April
105	66	1	Gr. th. f. 1, f. 36: Die Heiligen des 16., 17., 18., 19. April
106	67	1	Gr. th. f. 1, f. 36 ^v : Die Heiligen des 20., 21., 22., 23. April
106	68	1	Gr. th. f. 1, f. 37: Die Heiligen des 24., 25., 26., 27. April
106	69	1	Gr. th. f. 1, f. 37 ^v : Die Heiligen des 28., 29., 30. April
106	70	1	Gr. th. f. 1, f. 38: Die Heiligen des 1., 2., 3. Mai
107	71	1	Gr. th. f. 1, f. 38 ^v : Die Heiligen des 4., 5., 6., 7. Mai
107	72	1	Gr. th. f. 1, f. 39: Die Heiligen des 8., 9., 10., 11. Mai
107	73	1	Gr. th. f. 1, f. 39 ^v : Die Heiligen des 12., 13., 14., 15. Mai
107	74	1	Gr. th. f. 1, f. 40: Die Heiligen des 16., 17., 18., 19. Mai
108	75	1	Gr. th. f. 1, f. 40 ^v : Die Heiligen des 20., 21., 22., 23. Mai
108	76	1	Gr. th. f. 1, f. 41: Die Heiligen des 24., 25., 26., 27. Mai

Verzeichnis der Abbildungen

Seite Abb. Nr. Abbildung

108	77	1	Gr. th. f. 1. f. 41 ¹ : Die Heiligen des 28., 29., 30., 31. Mai
108	78	1	Gr. th. f. 1. f. 42: Die Heiligen des 1., 2., 3., 4. Juni
109	79	1	Gr. th. f. 1. f. 42 ¹ : Die Heiligen des 5., 6., 7., 8. Juni
109	80	1	Gr. th. f. 1. f. 43: Die Heiligen des 9., 10., 11., 12. Juni
109	81	1	Gr. th. f. 1. f. 43 ¹ : Die Heiligen des 13., 14., 15., 16. Juni
109	82	1	Gr. th. f. 1. f. 44: Die Heiligen des 17., 18., 19., 20. Juni
110	83	1	Gr. th. f. 1. f. 44 ¹ : Die Heiligen des 21., 22., 23., 24. Juni
110	84	1	Gr. th. f. 1. f. 45: Die Heiligen des 25., 26., 27., 28. Juni
110	85	1	Gr. th. f. 1. f. 45 ¹ : Die Heiligen des 29., 30. Juni, 1. Juli
110	86	1	Gr. th. f. 1. f. 46: Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. Juli
111	87	1	Gr. th. f. 1. f. 46 ¹ : Die Heiligen des 6., 7., 8., 9. Juli
111	88	1	Gr. th. f. 1. f. 47: Die Heiligen des 10., 11., 12., 13. Juli
111	89	1	Gr. th. f. 1. f. 47 ¹ : Die Heiligen des 14., 15., 16., 17. Juli
111	90	1	Gr. th. f. 1. f. 48: Die Heiligen des 18., 19., 20., 21. Juli
112	91	1	Gr. th. f. 1. f. 48 ¹ : Die Heiligen des 22., 23., 24., 25. Juli
112	92	1	Gr. th. f. 1. f. 49: Die Heiligen des 26., 27., 28., 29. Juli
112	93	1	Gr. th. f. 1. f. 49 ¹ : Die Heiligen des 30., 31. Juli, 1. August
112	94	1	Gr. th. f. 1. f. 50: Die Heiligen des 2., 3., 4., 5. August
113	95	1	Gr. th. f. 1. f. 50 ¹ : Die Heiligen des 6., 7., 8., 9. August
113	96	1	Gr. th. f. 1. f. 51: Die Heiligen des 10., 11., 12., 13. August
113	97	1	Gr. th. f. 1. f. 51 ¹ : Die Heiligen des 14., 15., 16., 17. August
113	98	1	Gr. th. f. 1. f. 52: Die Heiligen des 18., 19., 20., 21. August
114	99	1	Gr. th. f. 1. f. 52 ¹ : Die Heiligen des 22., 23., 24., 25. August
114	100	1	Gr. th. f. 1. f. 53: Die Heiligen des 26., 27., 28., 29. August
114	101	1	Gr. th. f. 1. f. 53 ¹ : Die Heiligen des 30., 31. August
115	102	1	Gr. th. f. 1. f. 54 ¹ : Demetrioszyklus I
115	103	1	Gr. th. f. 1. f. 55: Demetrioszyklus II
115	104	1	Gr. th. f. 1. f. 55 ¹ : Widmungsgedicht
115	105	1	Gr. th. f. 1. f. 56: Widmungsgedicht
116	106	2	Barocci 17, f. 1: Ornamentleiste
116	107	2	Barocci 17, f. 1 ¹ : Die Lekanomantie des Nektanebos
116	108	2	Barocci 17, f. 4 ¹ : Alexanders Empfängnis
117	109	2	Barocci 17, f. 7: Aristoteles lehrt Alexander
117	110	2	Barocci 17, f. 7 ¹ : Nektanebos lehrt Alexander
117	111	2	Barocci 17, f. 8 ¹ : Nektanebos zeigt Alexander die Sterne; Alexander tötet Nektanebos
117	112	2	Barocci 17, f. 9: Alexander bestattet Nektanebos
117	113	2	Barocci 17, f. 9 ¹ : Bukephalos
117	114	2	Barocci 17, f. 10: Alexander zähmt Bukephalos
118	115	2	Barocci 17, f. 11: Alexanders Aufbruch
118	116	2	Barocci 17, f. 11 ¹ : Alexanders Streit mit Nikolaos
118	117	2	Barocci 17, f. 13 ¹ : Alexanders Siegerehrung
118	118	2	Barocci 17, f. 14 ¹ : Philipps Gastmahl
119	119	2	Barocci 17, f. 15: Alexander erschlägt Philipps Gäste
119	120	2	Barocci 17, f. 15 ¹ : Die Versöhnung
119	121	2	Barocci 17, f. 16: Philipp schickt Alexander in den Krieg
119	122	2	Barocci 17, f. 17: Alexander auf dem Weg zum Hinterhalt
119	123	2	Barocci 17, f. 17: Der Hinterhalt
119	124	2	Barocci 17, f. 18: Die Unterwerfung der Skythenfürsten
120	125	2	Barocci 17, f. 19 ¹ : Philipp tötet Anaxarchos
120	126	2	Barocci 17, f. 20: Philipps Tod
120	127	2	Barocci 17, f. 20: Freilassung und Unterwerfung der Skythen
121	128	2	Barocci 17, f. 21 ¹ : Alexander vom Volk verabschiedet

Seite Abb. Nr. Abbildung

121	129	2	Barocci 17, f. 22: Antiochos überbringt den Brief des Dareios
121	130	2	Barocci 17, f. 23: Dareios entsendet Boten
121	131	2	Barocci 17, f. 23 ¹ : Alexander empfängt die Boten
122	132	2	Barocci 17, f. 25: Polykrates entsendet Boten
122	133	2	Barocci 17, f. 28: Diogenes und Alexander
122	134	2	Barocci 17, f. 28 ¹ : Gesandte aller Völker vor Alexander
123	135	2	Barocci 17, f. 29: Alexanders Einzug in Rom
123	136	2	Barocci 17, f. 30 ¹ : Alexander besiegt die geflügelten Frauen
123	137	2	Barocci 17, f. 31 ¹ : Alexandria
124	138	3	Barocci 201, f. 1: Vision Gottes
125	139	3	Barocci 201, f. 4: Hiob und seine Familie
125	140	3	Barocci 201, f. 5 ¹ : Hiobs Herden
126	141	3	Barocci 201, f. 6 ¹ : Hiobs Söhne führen ihre Schwestern zum Mahl
126	142	3	Barocci 201, f. 8 ¹ : Engel und Satan vor Gott
126	143	3	Barocci 201, f. 10 ¹ : Gott redet mit Satan
127	144	3	Barocci 201, f. 12: Gott redet mit Satan
127	145	3	Barocci 201, f. 13: Satan redet mit Gott
127	146	3	Barocci 201, f. 14 ¹ : Gott übergibt Hiob an Satan
128	147	3	Barocci 201, f. 15 ¹ : Satan eilt davon
128	148	3	Barocci 201, f. 16: Festmahl der Söhne und Töchter Hiobs
129	149	3	Barocci 201, f. 16 ¹ : Hiob und der Bote. Vernichtung der Knechte und Rinder
129	150	3	Barocci 201, f. 17 ¹ : Hiob und der Bote. Feuer vernichtet Hirten und Schafe
130	151	3	Barocci 201, f. 18 ¹ : Satan als Bote. Die Chaldäer auf dem Weg. Vernichtung der Hirten und Kamele
130	152	3	Barocci 201, f. 19 ¹ : Vernichtung der Söhne und Töchter Hiobs
131	153	3	Barocci 201, f. 21: Hiobs Klage
131	154	3	Barocci 201, f. 23 ¹ : Hiob im Gebet vor Gott
132	155	3	Barocci 201, f. 28: Engel und Satan vor Gott
132	156	3	Barocci 201, f. 29: Satan antwortet
133	157	3	Barocci 201, f. 29 ¹ : Gott rühmt Hiob vor Satan
133	158	3	Barocci 201, f. 30 ¹ : Satan redet mit Gott
133	159	3	Barocci 201, f. 31 ¹ : Gott gibt Hiob in Satans Hand
134	160	3	Barocci 201, f. 32 ¹ : Satan schlägt Hiob mit Aussatz
134	161	3	Barocci 201, f. 33: Hiob auf dem Aschenhaufen
135	162	3	Barocci 201, f. 36: Hiob und seine Frau
135	163	3	Barocci 201, f. 39 ¹ : Hiob erhält Nahrung von seiner Frau
135	164	3	Barocci 201, f. 44 ¹ : Hiobs Demut
136	165	3	Barocci 201, f. 45: Hiobs Freunde auf dem Weg
136	166	3	Barocci 201, f. 46: Die Freunde bei Hiob
137	167	3	Barocci 201, f. 46 ¹ : Die Freunde beklagen Hiob
137	168	3	Barocci 201, f. 48: Hiob spricht zu den Freunden
137	169	3	Barocci 201, f. 51: Hiob verflucht die Nacht seiner Zeugung
138	170	3	Barocci 201, f. 54 ¹ : Hiobs Klage
138	171	3	Barocci 201, f. 56: Eliphaz spricht zu Hiob
138	172	3	Barocci 201, f. 57: »Mühe pflügen ...«
139	173	3	Barocci 201, f. 57 ¹ : Löwen und Drachen
139	174	3	Barocci 201, f. 58: Ameisenlöwe, Löwen und Drachen
139	175	3	Barocci 201, f. 58: Tod des Ameisenlöwen
140	176	3	Barocci 201, f. 69 ¹ : Die betrügerischen Verwandten
140	177	3	Barocci 201, f. 70: Die Karawanen von Saba
140	178	3	Barocci 201, f. 70 ¹ : Hiob spricht zu den Freunden
141	179	3	Barocci 201, f. 72: Hiob spricht zu den Freunden
141	180	3	Barocci 201, f. 72 ¹ : Gleichnis von den Tagelöhnern
141	181	3	Barocci 201, f. 74: Hiob spricht zu den Freunden
142	182	3	Barocci 201, f. 75: Der Sturz in den Hades
142	183	3	Barocci 201, f. 75 ¹ : Gleichnis vom Meeresungeheuer
142	184	3	Barocci 201, f. 76: Gleichnis von den bösen Träumen
143	185	3	Barocci 201, f. 77: Hiob klagt zu Gott
143	186	3	Barocci 201, f. 78: Hiob klagt zu Gott
143	187	3	Barocci 201, f. 78 ¹ : Hiob kündigt seinen Tod an

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung	Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
144	188	3	Barocci 201, f. 79: Baldad spricht zu Hiob	164	247	3	Barocci 201, f. 131: Feuer vernichtet das Haus des Gottlosen
144	189	3	Barocci 201, f. 80 ^v : Gleichnis vom Schilf	165	248	3	Barocci 201, f. 146 ^v : Das Fest der Gottlosen
144	190	3	Barocci 201, f. 81 ^v : Gleichnis vom Mann, der unter Steinen schläft	165	249	3	Barocci 201, f. 147: Der Gottlose ohne Furcht vor dem Tod
145	191	3	Barocci 201, f. 83: Hiob spricht zu den Freunden	166	250	3	Barocci 201, f. 149: Der Gottlose sieht sein Verderben
145	192	3	Barocci 201, f. 84 ^v : Die nicht aufgehende Sonne	166	251	3	Barocci 201, f. 150: Das Haus des Fürsten
145	193	3	Barocci 201, f. 85: Christus geht auf dem Meer	167	252	3	Barocci 201, f. 150 ^v : Die Wanderer
146	194	3	Barocci 201, f. 85: Die Sterne und die Kammern des Windes	167	253	3	Barocci 201, f. 152: Eliphas spricht zu Hiob
146	195	3	Barocci 201, f. 86 ^v : Die vor Gott sich krümmenden Seeungeheuer	168	254	3	Barocci 201, f. 153: Die Pfänder
146	196	3	Barocci 201, f. 87 ^v : Hiob von Peinigern bedroht	168	255	3	Barocci 201, f. 153 ^v : Die Nackten
147	197	3	Barocci 201, f. 89 ^v : Die Unvergleichlichkeit Gottes	169	256	3	Barocci 201, f. 154: Die Hungrigen
147	198	3	Barocci 201, f. 90: Hiob klagt vor den Freunden zu Gott	169	257	3	Barocci 201, f. 154 ^v : Die Gedemütigten
147	199	3	Barocci 201, f. 92: Die Erschaffung des Menschen	170	258	3	Barocci 201, f. 155: Die Witwen
148	200	3	Barocci 201, f. 92 ^v : Gottes Fürsorge	170	259	3	Barocci 201, f. 155: Die Waisen
148	201	3	Barocci 201, f. 94: Gleichnis vom gejagten Löwen	170	260	3	Barocci 201, f. 155 ^v : Hiob von Schlangen gefesselt
148	202	3	Barocci 201, f. 94 ^v : Hiob beklagt seine Geburt	171	261	3	Barocci 201, f. 156: Hiob von Finsternis bedeckt
149	203	3	Barocci 201, f. 95 ^v : Das Reich der Finsternis	171	262	3	Barocci 201, f. 158 ^v : Hiob spricht zu den Freunden
149	204	3	Barocci 201, f. 96: Zophar spricht zu Hiob	171	263	3	Barocci 201, f. 159 ^v : Hiob bewahrt Gottes Gebot
149	205	3	Barocci 201, f. 97 ^v : Gleichnis von Gottes Allwissen	172	264	3	Barocci 201, f. 160 ^v : Hiob und die nicht endende Finsternis
150	206	3	Barocci 201, f. 98: »Der vom Weibe Geborene ist wie ein einsamer Esel«	172	265	3	Barocci 201, f. 161: Gleichnis vom Wildesel in der Wüste
150	207	3	Barocci 201, f. 100: Hiob spricht zu den Freunden	172	266	3	Barocci 201, f. 161 ^v : Die Ernte der Gottlosen
151	208	3	Barocci 201, f. 101: Die Tiere als Zeugen für Gott	173	267	3	Barocci 201, f. 162: Die nackt Schlafenden
151	209	3	Barocci 201, f. 102: Gleichnis für Gottes Weisheit und Stärke	173	268	3	Barocci 201, f. 162 ^v : Der Kindesraub
152	210	3	Barocci 201, f. 102 ^v : Gott stürzt Priester	173	269	3	Barocci 201, f. 163: Die Vertreibung aus der Stadt
152	211	3	Barocci 201, f. 103: Gott stürzt Könige	174	270	3	Barocci 201, f. 163 ^v : Die Gottlosen in der Finsternis
152	212	3	Barocci 201, f. 103 ^v : Gott vertreibt Völker	174	271	3	Barocci 201, f. 165: Die wie ein Baum zerbrochenen Gottlosen
153	213	3	Barocci 201, f. 104: Hiob spricht zu den Freunden	174	272	3	Barocci 201, f. 165 ^v : Die wie Ähren vergehenden Gottlosen
153	214	3	Barocci 201, f. 104 ^v : Hiob spricht zu den Freunden	175	273	3	Barocci 201, f. 166: Baldad spricht zu Hiob
153	215	3	Barocci 201, f. 105 ^v : Hiob spricht zu den Freunden	175	274	3	Barocci 201, f. 167 ^v : Hiob spricht zu Baldad
154	216	3	Barocci 201, f. 106 ^v : Hiob spricht zu den Freunden	175	275	3	Barocci 201, f. 168: Die toten Giganten unter dem Meer
154	217	3	Barocci 201, f. 107 ^v : Hiob spricht zu den Freunden	176	276	3	Barocci 201, f. 168 ^v : Die Aufdeckung des Hades
154	218	3	Barocci 201, f. 107 ^v : Hiob fordert den Richter heraus	176	277	3	Barocci 201, f. 170: Der Tod des Abtrünnigen
155	219	3	Barocci 201, f. 108 ^v : Hiob spricht zu den Freunden	177	278	3	Barocci 201, f. 171: Hiob spricht zu den Freunden
155	220	3	Barocci 201, f. 109 ^v : Gleichnis vom mottenzerfressenen Kleid	177	279	3	Barocci 201, f. 171 ^v : Hiob rühmt Gott
155	221	3	Barocci 201, f. 111: Gleichnis vom grünenden Baum am Wasser	177	280	3	Barocci 201, f. 172 ^v : Tod und Hunger der Kinder des Gottlosen
156	222	3	Barocci 201, f. 111 ^v : Gleichnis vom ausgetrockneten Fluß	178	281	3	Barocci 201, f. 173: Der Tod des Reichen
156	223	3	Barocci 201, f. 112: Hiobs Hoffnung auf Auferstehung	178	282	3	Barocci 201, f. 178 ^v : Hiob spricht zu den Freunden
156	224	3	Barocci 201, f. 114: Eliphas spricht zu Hiob	179	283	3	Barocci 201, f. 179: Hiob beklagt seine Kinder
157	225	3	Barocci 201, f. 116 ^v : Der ruhelose Gottlose	179	284	3	Barocci 201, f. 179 ^v : Die Kinder verstecken sich
157	226	3	Barocci 201, f. 117: Der vergebliche Kampf der Gottlosen	179	285	3	Barocci 201, f. 180: Hiob rettet den Armen
157	227	3	Barocci 201, f. 118: Der heimatlose Gottlose	180	286	3	Barocci 201, f. 181 ^v : Hiob hilft den Blinden und Lahmen
158	228	3	Barocci 201, f. 118 ^v : Die Unbeständigkeit des Gottlosen	180	287	3	Barocci 201, f. 186 ^v : Hiobs Mitleid mit den Armen
158	229	3	Barocci 201, f. 120: Hiob spricht zu Eliphas	181	288	3	Barocci 201, f. 187 ^v : Hiob der Bruder der Sirenen und Strauße
158	230	3	Barocci 201, f. 121: Hiob spricht zu den Freunden	181	289	3	Barocci 201, f. 188: Hiob der Frauenverächter
159	231	3	Barocci 201, f. 121 ^v : Hiob von Satan bedroht	182	290	3	Barocci 201, f. 190: Hiob und der Ehebruch
159	232	3	Barocci 201, f. 122: Hiob von Teufeln angegriffen	182	291	3	Barocci 201, f. 191: Hiob speist die Waisen
159	233	3	Barocci 201, f. 122: Hiob von Teufeln umringt	183	292	3	Barocci 201, f. 191 ^v : Hiob kleidet die Armen
160	234	3	Barocci 201, f. 122 ^v : Hiob, Gott, Satan und die Gottlosen	183	293	3	Barocci 201, f. 193: Hiob wirft dem Mond Küsse zu
160	235	3	Barocci 201, f. 123: Hiob von Teufeln angegriffen	183	294	3	Barocci 201, f. 196: Elihu spricht zu Hiob
160	236	3	Barocci 201, f. 123 ^v : Hiob im Sack	184	295	3	Barocci 201, f. 197: Elihu spricht zu Hiob
161	237	3	Barocci 201, f. 124: Hiob und sein Fürsprecher Gott	184	296	3	Barocci 201, f. 197 ^v : Elihu spricht zu den Freunden
161	238	3	Barocci 201, f. 124 ^v : Hiob und die tränenden Augen	184	297	3	Barocci 201, f. 198 ^v : Elihu spricht zu Hiob
161	239	3	Barocci 201, f. 125: Hiob und die Betrüger	185	298	3	Barocci 201, f. 199 ^v : Elihu spricht zu Hiob
162	240	3	Barocci 201, f. 125 ^v : Hiob trauert über Tote	185	299	3	Barocci 201, f. 202: Elihu spricht zu Hiob
162	241	3	Barocci 201, f. 127: Das Haus im Hades	185	300	3	Barocci 201, f. 205: Elihu spricht zu Hiob
162	242	3	Barocci 201, f. 128: Baldad spricht zu Hiob	186	301	3	Barocci 201, f. 205 ^v : Elihu spricht zu Hiob; die Wolken
163	243	3	Barocci 201, f. 128 ^v : Die unbewohnte Erde	186	302	3	Barocci 201, f. 207 ^v : Elihu spricht zu Hiob
163	244	3	Barocci 201, f. 129 ^v : Die Furcht der Gottlosen	186	303	3	Barocci 201, f. 211: Die Tiere verbergen sich vor dem Frost
163	245	3	Barocci 201, f. 130: Der Tod der Gottlosen	187	304	3	Barocci 201, f. 212: Hiob und die Freunde
164	246	3	Barocci 201, f. 130 ^v : Schuld und Hoffnungslosigkeit der Gottlosen	187	305	3	Barocci 201, f. 214 ^v : Gott spricht zu Hiob

Verzeichnis der Abbildungen

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
188	306	3	Barocci 201, f. 215: Gott spricht zu Hiob aus den Wolken
188	307	3	Barocci 201, f. 216: Gott von Engeln angebetet
188	308	3	Barocci 201, f. 217 ^v : Die Erschaffung des Menschen
189	309	3	Barocci 201, f. 218: Die Tiefen des Meeres
189	310	3	Barocci 201, f. 218: Die geöffneten Tore des Todes
189	311	3	Barocci 201, f. 219: Die Erschaffung von Regen, Tau und Eis
190	312	3	Barocci 201, f. 220 ^v : Die Geschicklichkeit der Frauen
190	313	3	Barocci 201, f. 221: Die Lebensgewohnheiten der Tiere
190	314	3	Barocci 201, f. 221 ^v : Die Gebärzeiten der Gemsen und Rehe
191	315	3	Barocci 201, f. 222 ^v : Die Dienste des Einhorns
191	316	3	Barocci 201, f. 224: Gefahr für die Eier des Strauß
191	317	3	Barocci 201, f. 224: Die Kraft des Pferdes
192	318	3	Barocci 201, f. 224 ^v : Die Angriffslust des Pferdes beim Klang der Trompete
192	319	3	Barocci 201, f. 225: Der Habicht
192	320	3	Barocci 201, f. 225 ^v : Der Adler und seine Jungen
193	321	3	Barocci 201, f. 226: Gott spricht zu Hiob
193	322	3	Barocci 201, f. 226 ^v : Hiob spricht zu Gott
193	323	3	Barocci 201, f. 227 ^v : Gott spricht zu Hiob
194	324	3	Barocci 201, f. 228 ^v : Zwei »Nilpferde« (Behemoth)
194	325	3	Barocci 201, f. 229: Die Kraft des Behemoth
194	326	3	Barocci 201, f. 229 ^v : Der Zedernschwanz des Behemoth
195	327	3	Barocci 201, f. 230 ^v : Die Teufel spielen mit Behemoth. Behemoth gefesselt
195	328	3	Barocci 201, f. 231: Behemoth schläft unter Bäumen
196	329	3	Barocci 201, f. 231 ^v : Behemoth trinkt den Jordan aus
196	330	3	Barocci 201, f. 232: Leviathan an der Angel
197	331	3	Barocci 201, f. 232 ^v : Der gefesselte Leviathan
197	332	3	Barocci 201, f. 233: Der gebundene Leviathan
198	333	3	Barocci 201, f. 233 ^v : Fischer ergreifen Leviathan
198	334	3	Barocci 201, f. 234 ^v : Der schreckliche Leviathan
199	335	3	Barocci 201, f. 235: Leviathans Kleid
199	336	3	Barocci 201, f. 236: Leviathans furchterregendes Maul
200	337	3	Barocci 201, f. 236 ^v : Leviathans schreckliche Zähne
200	338	3	Barocci 201, f. 236 ^v : Leviathans Schuppen
201	339	3	Barocci 201, f. 237 ^v : Leviathans Niesen
201	340	3	Barocci 201, f. 238: Leviathans Augen
201	341	3	Barocci 201, f. 238: Feuer und Funken aus Leviathans Maul
202	342	3	Barocci 201, f. 238 ^v : Rauch aus Leviathans Nase
202	343	3	Barocci 201, f. 239: Feuer aus Leviathans Mund
202	344	3	Barocci 201, f. 240: Die Furcht der Tiere vor Leviathan
203	345	3	Barocci 201, f. 240: Leviathan unempfindlich gegen Speer und Schwert
203	346	3	Barocci 201, f. 240 ^v : Leviathan unempfindlich gegen Pfeile
203	347	3	Barocci 201, f. 240 ^v : Leviathan unempfindlich gegen Schleuder und Keule
204	348	3	Barocci 201, f. 241: Leviathans spitzes Lager
204	349	3	Barocci 201, f. 241 ^v : Leviathan fährt über den Tartaros
204	350	3	Barocci 201, f. 242: Leviathan als König des Meeres
205	351	3	Barocci 201, f. 242 ^v : Hiob spricht zu Gott
205	352	3	Barocci 201, f. 243: Hiob spricht zu Gott
205	353	3	Barocci 201, f. 244: Gott spricht zu den Freunden
206	354	3	Barocci 201, f. 244 ^v : Gottes Opfergebot
206	355	3	Barocci 201, f. 245: Gott spricht zu Hiob
207	356	3	Barocci 201, f. 245 ^v : Hiob und seine Freunde vor Gott
207	357	3	Barocci 201, f. 246: Hiob bittet Gott für seine Freunde
208	358	3	Barocci 201, f. 246 ^v : Hiob und der Besuch seiner Verwandtschaft
208	359	3	Barocci 201, f. 247 ^v : Hiob empfängt die Geschenke der Verwandten
209	360	3	Barocci 201, f. 248: Hiobs neue Herden

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
209	361	3	Barocci 201, f. 248: Hiobs neue Söhne und Töchter
209	362	3	Barocci 201, f. 249: Hiob benennt seine Töchter
210	363	3	Barocci 201, f. 250: Die Verteilung des Erbes
211	364	3	Barocci 201, f. 250 ^v : Hiobs Tod
211	365	3	Barocci 201, f. 251: Anastasis
212	366	3	Barocci 201, f. 251 ^v : Johab mit seiner Familie
212	367	3	Barocci 201, f. 252: Die drei Könige von Edom
212	368	3	Barocci 201, f. 252 ^v : Hiobs Freunde auf dem Heimweg
213	369	4	Laud gr. 86, p. 4: Hiob thronend
213	370	4	Laud gr. 86, p. 7: Hiob und seine Familie
214	371	4	Laud gr. 86, p. 8: Hiobs Herden
214	372	4	Laud gr. 86, p. 10: Das Mahl der Söhne und Töchter Hiobs
215	373	4	Laud gr. 86, p. 11: Hiobs Brandopfer
215	374	4	Laud gr. 86, p. 15: Engel und Satan vor Gott
215	375	4	Laud gr. 86, p. 25: Satan verläßt Gott
216	376	4	Laud gr. 86, p. 26: Das Mahl der Söhne und Töchter Hiobs
216	377	4	Laud gr. 86, p. 27: Vernichtung der Hirten, Esel und Rinder
216	378	4	Laud gr. 86, p. 28: Vernichtung der Hirten und Schafe
217	379	4	Laud gr. 86, p. 30: Vernichtung der Hirten und Kamele
217	380	4	Laud gr. 86, p. 32: Vernichtung der Söhne und Töchter Hiobs
217	381	4	Laud gr. 86, p. 33: Hiobs Klage
218	382	4	Laud gr. 86, p. 36: Hiob im Gebet vor Gott
218	383	4	Laud gr. 86, p. 40: Engel und Satan vor Gott
218	384	4	Laud gr. 86, p. 46: Satan unterwegs
219	385	4	Laud gr. 86, p. 47: Satan schlägt Hiob mit Aussatz
219	386	4	Laud gr. 86, p. 47: Hiob auf dem Aschenhaufen
220	387	4	Laud gr. 86, p. 56: Hiob und seine Frau
220	388	4	Laud gr. 86, p. 60: Hiobs Freunde auf dem Weg
220	389	4	Laud gr. 86, p. 63: Die Freunde beklagen Hiob
221	390	4	Laud gr. 86, p. 64: Die Freunde trauern mit Hiob
221	391	4	Laud gr. 86, p. 67: Hiob spricht zu den Freunden über den Tag seiner Geburt
221	392	4	Laud gr. 86, p. 69: Hiobs Tag der Geburt
222	393	4	Laud gr. 86, p. 70: Hiob spricht zu den Freunden
222	394	4	Laud gr. 86, p. 72: Anastasis
222	395	4	Laud gr. 86, p. 76: Hiob wünscht seinen Tod
223	396	4	Laud gr. 86, p. 79: Das Licht der Mühseligen
223	397	4	Laud gr. 86, p. 87: Löwen, Drache und Ameisenlöwe
223	398	4	Laud gr. 86, p. 89: Eliphas spricht zu Hiob
224	399	4	Laud gr. 86, p. 95: Die Ernte der Toren
224	400	4	Laud gr. 86, p. 96: Zwei Adler
224	401	4	Laud gr. 86, p. 97: Gott läßt Regen fallen
225	402	4	Laud gr. 86, p. 100: Schutz vor Feinden und wilden Tieren
225	403	4	Laud gr. 86, p. 101: Tod und Ernte des Gerechten
225	404	4	Laud gr. 86, p. 103: Hiob spricht zu den Freunden
226	405	4	Laud gr. 86, p. 105: Die Nahrung von Tieren und Menschen
226	406	4	Laud gr. 86, p. 110: Hiob von Teufeln angegriffen
226	407	4	Laud gr. 86, p. 117: Hiob spricht zu den Freunden
227	408	4	Laud gr. 86, p. 119: Hiob spricht über seine Vergänglichkeit
227	409	4	Laud gr. 86, p. 120: Gleichnis vom Meeresungeheuer
227	410	4	Laud gr. 86, p. 124: Hiob spricht zu Gott von seinem baldigen Tod
228	411	4	Laud gr. 86, p. 128: Gleichnis vom Schilf
228	412	4	Laud gr. 86, p. 129: Gleichnis vom Mann, dessen Haus nicht Bestand hat
228	413	4	Laud gr. 86, p. 138: Hiob betet zu Gott. Das Seeungeheuer
229	414	4	Laud gr. 86, p. 143: Die Unvergleichlichkeit Gottes
229	415	4	Laud gr. 86, p. 148: Erschaffung und Tod des Menschen
229	416	4	Laud gr. 86, p. 152: Gleichnis vom gejagten Löwen
230	417	4	Laud gr. 86, p. 153: Hiobs Verlangen nach dem Tod
230	418	4	Laud gr. 86, p. 158: Der vom Weibe Geborene ist wie ein einsamer Esel

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung	Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
230	419	4	Laud gr. 86, p. 164: Die Tiere als Zeugen für Gott	247	466	4	Laud gr. 86, p. 280: Mond und Sterne verblassen vor Gott
231	420	4	Laud gr. 86, p. 166: Gott stürzt Könige und Fürsten	247	467	4	Laud gr. 86, p. 282: Die toten Giganten unter dem Meer
231	421	4	Laud gr. 86, p. 167: Bileams Eselin. Anastasis	248	468	4	Laud gr. 86, p. 283: Der Nordwind über der Erde
232	422	4	Laud gr. 86, p. 175: Gleichnis von Halm und Wind	248	469	4	Laud gr. 86, p. 284: Die Wolken über der Erde
232	423	4	Laud gr. 86, p. 180: Gleichnis vom grünenden Baum am Wasser	248	470	4	Laud gr. 86, p. 286: Der Tod des Abtrünnigen
232	424	4	Laud gr. 86, p. 182: Gleichnis vom Wasser, das Steine wegwäscht	249	471	4	Laud gr. 86, p. 290: Der Untergang der Gottlosen
233	425	4	Laud gr. 86, p. 190: Die Furcht des Gottlosen vor dem Untergang	249	472	4	Laud gr. 86, p. 291: Der Tod der Kinder der Gottlosen
233	426	4	Laud gr. 86, p. 191: Der ruhelose Gottlose	249	473	4	Laud gr. 86, p. 295: Getreide auf der Erde, Feuer unter der Erde
233	427	4	Laud gr. 86, p. 192: Engelssturz	250	474	4	Laud gr. 86, p. 296: Adler, Löwe, Bäche und die verborgene Weisheit
234	428	4	Laud gr. 86, p. 194: Der Untergang des Gottlosen	250	475	4	Laud gr. 86, p. 307: Hiob hilft den Blinden und Lahmen
234	429	4	Laud gr. 86, p. 196: Die Unbeständigkeit des Gottlosen	250	476	4	Laud gr. 86, p. 309: Der Gerechte besiegt den Ungerechten
234	430	4	Laud gr. 86, p. 196: Feuer vernichtet die Häuser derer, die Geschenke nehmen	251	477	4	Laud gr. 86, p. 310: Gleichnis vom Baum am Wasser
235	431	4	Laud gr. 86, p. 201: Hiob von Teufeln bedroht	251	478	4	Laud gr. 86, p. 315: Die Verachteten in der Einöde
235	432	4	Laud gr. 86, p. 202: Hiob von Teufeln angegriffen	251	479	4	Laud gr. 86, p. 316: Der Verachtete zielt auf Hiob
235	433	4	Laud gr. 86, p. 204: Hiobs Klage. Die Erde bedeckt sein Blut	252	480	4	Laud gr. 86, p. 318: Hiobs Klage zu Gott über seinen bevorstehenden Tod
236	434	4	Laud gr. 86, p. 209: Hiobs Klage. Das Bett in der Finsternis	252	481	4	Laud gr. 86, p. 320: Adler und Sperling, Strauß und Gitarre
236	435	4	Laud gr. 86, p. 211: Baldad spricht zu Hiob. Vergleich mit Tieren	252	482	4	Laud gr. 86, p. 323: Hiob, vom rechten Weg nicht abgewichen
237	436	4	Laud gr. 86, p. 213: Der Gottlose in Netz und Falle gefangen	253	483	4	Laud gr. 86, p. 326: Hiob kleidet eine Witwe, Arme und Kinder
237	437	4	Laud gr. 86, p. 215: Almosenverteiler und Vogelfänger	253	484	4	Laud gr. 86, p. 329: Hiob wirft Sonne und Mond Küsse zu
238	438	4	Laud gr. 86, p. 223: Hiob von Angehörigen und Kindern verachtet	253	485	4	Laud gr. 86, p. 332: Hiobs Gastfreundschaft
238	439	4	Laud gr. 86, p. 225: Hiob bittet um Mitleid	254	486	4	Laud gr. 86, p. 337: Elihu spricht zu Hiob
238	440	4	Laud gr. 86, p. 228: Hiobs Klagen werden aufgeschrieben	254	487	4	Laud gr. 86, p. 342: Gleichnis vom jungen Most in alten Schläuchen
239	441	4	Laud gr. 86, p. 230: Hiob warnt die Freunde vor dem Untergang	254	488	4	Laud gr. 86, p. 344: Die Füße im Schraubstock
239	442	4	Laud gr. 86, p. 231: Zophar spricht zu Hiob	255	489	4	Laud gr. 86, p. 345: Gott öffnet das Ohr der Schlafenden
239	443	4	Laud gr. 86, p. 235: Die Strafe des Gottlosen	255	490	4	Laud gr. 86, p. 347: Engel als Mittler für den Gerechten vor Gott
240	444	4	Laud gr. 86, p. 236: Der Gottlose vom Engel vertrieben	255	491	4	Laud gr. 86, p. 352: Der Frevler vor dem König
240	445	4	Laud gr. 86, p. 237: Die dem Gottlosen unsichtbaren Milch- und Honigströme	256	492	4	Laud gr. 86, p. 353: Gott sieht alle Wege und Werke der Menschen
240	446	4	Laud gr. 86, p. 238: Der Gottlose läßt fremde Häuser einreißen	256	493	4	Laud gr. 86, p. 361: Gott hilft den Gerechten
241	447	4	Laud gr. 86, p. 239: Der Gottlose von Pfeilen getroffen	256	494	4	Laud gr. 86, p. 363: Die Seele der Gottlosen stirbt in der Jugend
241	448	4	Laud gr. 86, p. 240: Der Gottlose von Pfeil, Lanze und Feuer getroffen	257	495	4	Laud gr. 86, p. 366: Gott verdeckt das Licht
241	449	4	Laud gr. 86, p. 241: Der Gottlose von Feuer verzehrt	257	496	4	Laud gr. 86, p. 368: Die Tiere verbergen sich vor dem Regen
242	450	4	Laud gr. 86, p. 242: Der ausgestoßene Gottlose	257	497	4	Laud gr. 86, p. 372: Gott spricht zu Hiob aus den Wolken
242	451	4	Laud gr. 86, p. 244: Hiob spricht zu den Freunden	258	498	4	Laud gr. 86, p. 376: Die Erschaffung der Erde
242	452	4	Laud gr. 86, p. 246: Die fruchtbaren Herden und das Fest der Gottlosen	258	499	4	Laud gr. 86, p. 378: Gott von Engeln angebetet
243	453	4	Laud gr. 86, p. 247: Der Gottlose ohne Furcht	258	500	4	Laud gr. 86, p. 378: Die Erschaffung des Meeres
243	454	4	Laud gr. 86, p. 249: Die Gottlosen verleugnen Gott	259	501	4	Laud gr. 86, p. 379: Die Begrenzung des Meeres
243	455	4	Laud gr. 86, p. 250: Die Gottlosen werden wie Spreu verweht	259	502	4	Laud gr. 86, p. 381: Die Erschaffung des Menschen
244	456	4	Laud gr. 86, p. 251: Der Gottlose sieht sein Verderben	260	503	4	Laud gr. 86, p. 382: Christus wandelt auf dem Meer
244	457	4	Laud gr. 86, p. 252: Die Gleichheit im Tode	260	504	4	Laud gr. 86, p. 382: Anastasis
244	458	4	Laud gr. 86, p. 257: Die Pfänder und die Kleider der Armen	261	505	4	Laud gr. 86, p. 386: Die Geschicklichkeit der Frauen
245	459	4	Laud gr. 86, p. 258: Die Durstigen und die Hungrigen	261	506	4	Laud gr. 86, p. 387: Die Lebensgewohnheiten der Tiere
245	460	4	Laud gr. 86, p. 260: Hiob von Teufeln bedroht	261	507	4	Laud gr. 86, p. 389: Die Gebärzeiten der Gemsen und Rehe. Der Esel
245	461	4	Laud gr. 86, p. 262: Haus und Güter der Gottlosen vernichtet	262	508	4	Laud gr. 86, p. 391: Einhorn und Strauß
246	462	4	Laud gr. 86, p. 270: Der Raub der Herden und des Ochsen der Witwe	262	509	4	Laud gr. 86, p. 391: Gefahr für die Eier des Strauß. Die Kraft des Pferdes
246	463	4	Laud gr. 86, p. 271: Die Ernte des Gottlosen	262	510	4	Laud gr. 86, p. 392: Die Angriffslust des Pferdes
246	464	4	Laud gr. 86, p. 272: Die nackt Schlafenden. Der Kinderraub	263	511	4	Laud gr. 86, p. 393: Angreifende beim Klang der Trompete
247	465	4	Laud gr. 86, p. 274: Die Vertreibung aus Stadt und Häusern	263	512	4	Laud gr. 86, p. 394: Der Adler und seine Jungen
				263	513	4	Laud gr. 86, p. 395: Gott spricht zu Hiob
				264	514	4	Laud gr. 86, p. 396: Hiob spricht zu Gott

Verzeichnis der Abbildungen

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung	Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
264	515	4	Laud gr. 86, p. 398: Gott spricht zu Hiob	283	577	7	Canon. gr. 126, f. 260: Kaiser mit Sichel und Rose, von Engel gekrönt
264	516	4	Laud gr. 86, p. 401: Löwe und Bär	283	578	7	Canon. gr. 126, f. 260 ^v : Stier und zwei Köpfe
265	517	4	Laud gr. 86, p. 403: Die Teufel spielen mit Behemoth	283	579	7	Canon. gr. 126, f. 261: Säugende Bärin
265	518	4	Laud gr. 86, p. 404: Behemoth gefesselt	283	580	7	Canon. gr. 126, f. 261 ^v : Konstantinopel
265	519	4	Laud gr. 86, p. 405: Behemoth schläft unter Bäumen	284	581	7	Canon. gr. 126, f. 262: Fuchs mit Fahnen
266	520	4	Laud gr. 86, p. 406: Behemoth trinkt den Jordan aus. Behemoth angekettet	284	582	7	Canon. gr. 126, f. 262 ^v : Hetoimasia
266	521	4	Laud gr. 86, p. 407: Leviathan an der Angel	284	583	7	Canon. gr. 126, f. 263: Einhorn
266	522	4	Laud gr. 86, p. 408: Der gefesselte Leviathan	284	584	7	Canon. gr. 126, f. 263 ^v : Der Befreier-Kaiser?
267	523	4	Laud gr. 86, p. 411: Anastasis, Christus besiegt Leviathan	285	585	7	Canon. gr. 126, f. 264 ^v : Der Befreier-Kaiser
267	524	4	Laud gr. 86, p. 415: Leviathans furchterregende Erscheinung	285	586	7	Canon. gr. 126, f. 265: Engel mit Salbgefäß
267	525	4	Laud gr. 86, p. 416: Feuer und Funken aus Leviathans Maul, Rauch aus seiner Nase	285	587	7	Canon. gr. 126, f. 264: Der schlafende Kaiser
268	526	4	Laud gr. 86, p. 418: Leviathans Unempfindlichkeit	285	588	8	Barocci 145, f. 80 ^v : Säugende Bärin
268	527	4	Laud gr. 86, p. 420: Leviathan als König des Meeres	286	589	8	Barocci 145, f. 81 ^v : Schlange und Raben
268	528	4	Laud gr. 86, p. 422: Hiob spricht zu Gott	286	590	8	Barocci 145, f. 82 ^v : Adler und Einhorn
269	529	4	Laud gr. 86, p. 424: Gott spricht zu den Freunden	286	591	8	Barocci 145, f. 83 ^v : Sultan mit Sichel und Rosen, über toten Feinden stehend
269	530	4	Laud gr. 86, p. 425: Gottes Opfergebot	286	592	8	Barocci 145, f. 84 ^v : Drei Köpfe, Stier, Zypern
269	531	4	Laud gr. 86, p. 428: Hiob und der Besuch seiner Verwandtschaft	287	593	8	Barocci 145, f. 85 ^v : Säugende Bärin
270	532	4	Laud gr. 86, p. 429: Hiobs Gastmahl	287	594	8	Barocci 145, f. 86 ^v : Belagerung Konstantinopels
270	533	4	Laud gr. 86, p. 430: Hiob empfängt die Geschenke der Verwandten	287	595	8	Barocci 145, f. 87 ^v : Fuchs mit Fahnen, drei Drachen, drei Kaiser
271	534	4	Laud gr. 86, p. 431: Hiobs neue Herden	287	596	8	Barocci 145, f. 88 ^v : Der schlafende Kaiser
271	535	4	Laud gr. 86, p. 432: Hiobs neue Söhne und Töchter	288	597	8	Barocci 145, f. 89 ^v : Der Befreier-Kaiser
272	536	4	Laud gr. 86, p. 434: Hiob und seine Familie. Hiobs Tod	288	598	8	Barocci 145, f. 90 ^v : Der Engel krönt den Kaiser
272	537	4	Laud gr. 86, p. 435: Hiobs Auferstehung	288	599	8	Barocci 145, f. 91 ^v : Der Kaiser und das Neue Rom
272	538	4	Laud gr. 86, p. 436: König Johab?	288	600	8	Barocci 145, f. 92 ^v : Reiterstandbild des Kaisers Herakleios
273	539	5	Barocci 93, f. 4: Prophet Isaias	289	601	8	Barocci 145, f. 233 ^v : Patriarch Gennadios II. (Georgios) Scholarios
273	540	5	Barocci 93, f. 5: Prophet Hosea	289	602	8	Barocci 145, f. 236 ^v : Theophilus Presbyter und Johannes Rhyzanos
273	541	5	Barocci 93, f. 5 ^v : Prophet Amos	289	603	8	Barocci 145, f. 241 ^v : Leo der Weise
273	542	5	Barocci 93, f. 6 ^v : Prophet Michaias	289	604	8	Barocci 145, f. 245 ^v : Schlange und Raben
273	543	5	Barocci 93, f. 10: Petrus	290	605	8	Barocci 145, f. 246: Adler
273	544	5	Barocci 93, f. 10 ^v : Johannes	290	606	8	Barocci 145, f. 246 ^v : Einhorn und Jüngling
273	545	5	Barocci 93, f. 11: Judas	290	607	8	Barocci 145, f. 247: Kaiser mit Sichel und Rose, von Engel gekrönt. Kopf
273	546	5	Barocci 93, f. 11 ^v : Paulus	290	608	8	Barocci 145, f. 247 ^v : Zwei Köpfe. Stier
274	547	5	Barocci 93, f. 18: Prophet Jeremias	291	609	8	Barocci 145, f. 248: Säugende Bärin
274	548	5	Barocci 93, f. 18: Moses	291	610	8	Barocci 145, f. 248 ^v : Konstantinopel
274	549	5	Barocci 93, f. 9: Christus Pantokrator	291	611	8	Barocci 145, f. 249: Fuchs und Fahnen
274	550	5	Barocci 93, f. 21: Enthauptung des Henoch, Elias und Johannes Ev.	291	612	8	Barocci 145, f. 249 ^v : Hetoimasia
274	551	5	Barocci 93, f. 12 ^v : Nebukadnezar und Daniel	292	613	8	Barocci 145, f. 250: Einhorn mit Halbmond
274	552	5	Barocci 93, f. 16 ^v : Jakob segnet Juda	292	614	8	Barocci 145, f. 250 ^v : Trauerndes Mädchen
275	553	5	Barocci 93, f. 29: Der Antichrist	292	615	8	Barocci 145, f. 251: Der schlafende Kaiser
275	554	5	Barocci 93, ff. 35 ^v -36: Jüngstes Gericht	292	616	8	Barocci 145, f. 251 ^v : Der Befreier-Kaiser
276	555	5	Barocci 93, f. 35 ^v : Jüngstes Gericht	293	617	8	Barocci 145, f. 252: Der Engel krönt (?) den Kaiser
277	556	5	Barocci 93, f. 36: Jüngstes Gericht	293	618	8	Barocci 145, f. 252 ^v : Kaiser und Patriarch
278	557	6	Laud gr. 27, f. 75: Schlange und Raben	293	619	8	Barocci 145, f. 257 ^v : Konstantinopel, die Orakelsäule und das Grab Konstantins
278	558	6	Laud gr. 27, f. 75 ^v : Adler	293	620	8	Barocci 145, f. 258: Engel über Konstantinopel
278	559	6	Laud gr. 27, f. 76: Einhorn und Mädchen	294	621	9	Barocci 170, f. 5 ^v : Säugende Bärin
278	560	6	Laud gr. 27, f. 76 ^v : Kaiser mit Sichel, Fackel und Rose, von Engel gekrönt	294	622	9	Barocci 170, f. 7 ^v : Adler und Einhorn
279	561	6	Laud gr. 27, f. 77: Drei Köpfe	294	623	9	Barocci 170, f. 6 ^v : Schlange und Raben
279	562	6	Laud gr. 27, f. 77 ^v : Stier	294	624	9	Barocci 170, f. 7: Ornamentrahmen, Orakel I
279	563	6	Laud gr. 27, f. 78: Säugende Bärin	295	625	9	Barocci 170, f. 8 ^v : Sultan mit Sichel und Rosen, über toten Feinden stehend
279	564	6	Laud gr. 27, f. 78 ^v : Konstantinopel	295	626	9	Barocci 170, f. 9 ^v : Drei Köpfe, Stier, Zypern
280	565	6	Laud gr. 27, f. 79: Fuchs mit Fahnen	295	627	9	Barocci 170, f. 10 ^v : Säugende Bärin
280	566	6	Laud gr. 27, f. 79 ^v : Hetoimasia	295	628	9	Barocci 170, f. 11 ^v : Eroberung Konstantinopels
280	567	6	Laud gr. 27, f. 80: Einhorn	296	629	9	Barocci 170, f. 12 ^v : Fuchs mit Fahnen, drei Drachen, drei Kaiser
280	568	6	Laud gr. 27, f. 80 ^v : Der Befreier-Kaiser?	296	630	9	Barocci 170, f. 14: Der schlafende Kaiser
281	569	6	Laud gr. 27, f. 81 ^v : Der Befreier-Kaiser	296	631	9	Barocci 170, f. 14 ^v : Der Befreier-Kaiser
281	570	6	Laud gr. 27, f. 82: Engel mit Salbgefäß	296	632	9	Barocci 170, f. 15 ^v : Der Engel krönt den Kaiser
281	571	6	Laud gr. 27, f. 81: Der schlafende Kaiser	297	633	9	Barocci 170, f. 17 ^v : Der Kaiser und sein Sohn
281	572	6	Laud gr. 27, f. 82 ^v : Kaiser von Patriarch gesalbt	297	634	9	Barocci 170, f. 18: Der junge Kaiser
282	573	7	Canon. gr. 126, f. 266: Schlange	297	635	9	Barocci 170, f. 16 ^v : Der Tod des Kaisers
282	574	7	Canon. gr. 126, f. 266 ^v : Adler	297	636	9	Barocci 170, f. 18 ^v : Sieg der Christen über die Türken
282	575	7	Canon. gr. 126, f. 267: Einhorn und Mädchen	298	637	9	Barocci 170, f. 19 ^v : Kaiser und Kirche
282	576	7	Canon. gr. 126, f. 267 ^v : Kopf				

Verzeichnis der Abbildungen

Seite	Abb.	Nr.	Abbildung	Seite	Abb.	Nr.	Abbildung
298	638	9	Barocci 170, f. 20 ^v : Die Kaiserin (?)	299	643	9	Barocci 170, f. 25 ^v : Die Geburt des Antichrist
298	639	9	Barocci 170, f. 21 ^v : Der Gotteslästerer und der Drache	299	644	9	Barocci 170, f. 26 ^v : Der Antichrist
298	640	9	Barocci 170, f. 22 ^v : Reiterstandbild	300	645	9	Barocci 170, f. 27 ^v : Das Jüngste Gericht
299	641	9	Barocci 170, f. 23 ^v : Die Sintflut	301	646	9	Barocci 170, f. 28: Das Jüngste Gericht
299	642	9	Barocci 170, f. 24 ^v : Der gottlose Kaiser	302	647	10	Barocci 87, f. 33 ^v : Johannes Argyropulos

Korrektur zu CBM I

Nr. 37, Barocci 15, p. 55:

f. 343' Durchzug durch das Rote Meer *Abb. 206*
Ganzseitig gegenüber Beginn der Oden (1. Moses-Ode)...

Nr. 39, Auct. T. inf. 1. 10, p. 59-60:

Lagenzählung: Georgische Ziffern in dunkelbrauner Tinte...

Lagen: 2 (I, 1) 6 (7) 8 (15) 2 (8-6: 6 Blätter fehlen vor f. 16 mit Textverlust,
+15/1: 16) 7 (8-1: 1 Blatt fehlt vor f. 24: 23)...

Verlust von Miniaturen: Dieser Abschnitt ist zu streichen.